शिक्षा का अधिकार

समग्र शिक्षा

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

सामाजिक विज्ञान

(सेतु पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्यपुस्तक)

स्तर-IV

कक्षा 8

SCERT

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद

वरूण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली–110024

सामाजिक विज्ञान
(सेतु पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्यपुस्तक)

स्तर-IV

कक्षा-8

2022

शिक्षा का अधिकार

समग्र शिक्षा

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

SCERT

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

डिफेन्स कॉलोनी, वरूण मार्ग, नई दिल्ली–110024

आई.एस.बी.एन. : 978-93-85943-35-5

© राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली

मार्च 2022

3600 (प्रतियाँ)

प्रकाशितः राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

मुद्रितः चंदू प्रेस, नई दिल्ली–110092

Rajanish Singh
Director

State Council of Educational Research and Training
(An autonomous Organisation of GNCT of Delhi)
Varun Marg, Defence Colony, New Delhi-110024
Tel.: +91-11-24331356, Fax : +91-11-24332426
E-mail : dir12scert@gmail.com

Date : 22/3/22

D.O. No. : F10(13)/DS/DM/SCERT/421

सन्देश

शिक्षा सभी बच्चों का मौलिक अधिकार है। अच्छी शिक्षा सदैव बच्चों के उज्जवल भविष्य का निर्माण करती है। यह बच्चों को ज्ञानात्मक सूचनाएं प्रदान करने के साथ बच्चे के मानसिक, शारीरिक और आत्मिक स्तर को सुधारने में भी मदद करती है। शिक्षा प्राप्ति में पुस्तकों का महत्वपूर्ण योगदान है।

इसी को ध्यान में रखकर राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली ने विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के विद्यार्थियों के लिए 18 पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण किया है। इन पाठ्य-पुस्तकों का मुख्य उद्देश्य यह है कि 'बच्चे विद्यालय में एवं विद्यालय के बाहर सीखने के लिए प्रोत्साहित हों और उनमें आत्मविश्वास की भावना जागृत हो।' बच्चों की आवश्यकतानुसार इन पुस्तकों में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव किये गए है जिससे बच्चों को सरलता एवं रोचकता का अनुभव होगा।

आशा है यह पठन सामग्री बच्चों का मार्गदर्शन कर उनके समग्र विकास में मदद करेगी।

(रजनीश सिंह)

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः

Dr. Nahar Singh
Joint Director (Academic)

State Council of Educational Research and Training
(An autonomous Organisation of GNCT of Delhi)
Tel. : +91-11-24336818, 24331355, Fax : +91-11-24332426
Tel.: +91-11-24331355, Fax : +91-11-24332426
E-mail : jdscertdelhi@gmail.com

Date : 22/03/2022

D.O. No. : F.11(2)JDG/Acad/Misc./SCERT/2021-22/2187

सन्देश

शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अंतर्गत 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान है। इसी कानून की धारा 4 के अनुसार विद्यालयी शिक्षा से वंचित बच्चों को विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में शिक्षा लेने का अवसर प्रदान कर उन्हें आयु अनुसार कक्षा के उपयुक्त बनाना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-२०२० के अनुसार प्रत्येक 3 से 18 आयु वर्ग के बच्चे को गुणवत्तापूर्ण व समतामूलक शिक्षा प्रदान करने का पूर्ण दायित्व राज्य सरकार का है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति बच्चों में साक्षरता और संख्या ज्ञान जैसी 'बुनियादी क्षमताओं' के साथ-साथ 'उच्चतर स्तर' की तार्किक और समस्या-समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास करने पर बल देने के साथ-साथ शिक्षार्थियों के सभी जीवन पक्षों और क्षमताओं के संतुलित विकास पर भी ज़ोर देती है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा विशेष प्रशिक्षण केंद्र (एस. टी.सी.) के विद्यार्थियों हेतु जिस शिक्षण-अधिगम सामग्री को विकसित किया गया था, उनमें नई शिक्षा नीति के आधार पर छात्रों के समग्र विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए सुधार किये गए हैं। इससे बच्चों का सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास होगा जिसके द्वारा बच्चों के ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि कर उन्हें परिष्कृत नागरिक बनाया जा सकेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के निहित लक्ष्यों के संदर्भ में पाठ्य-पुस्तक को आदर्श बनाने के लिए सभी शिक्षकों का धन्यवाद्।

मुझे पूर्ण आशा है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निमित उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कक्षा स्तरीय, पाठ्य पुस्तकें विशेष प्रशिक्षण केंद्रों पर अध्ययनरत बच्चों के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होंगी।

सभी बच्चों के लिए मेरी शुभकामनायें।

(डॉ नाहर सिंह)

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के व्यापक उद्देश्यों के संदर्भ में नैतिकता, तर्कसंगतता, सहानुभूति और संवेदनशीलता के साथ 21वीं सदी के लिए अनिवार्य कौशलों में महारत हासिल करना वास्तव में महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं सतत विकास एजेंडा 2030 सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्ता-युक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन-पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिये जाने के व्यापक लक्ष्य के साथ आज हमारे सामने है। इस नीति के जरिये स्कूल स्तर पर शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार किये गए है। विद्यालय की वर्तमान रूपरेखा 5+3+3+4 के आधार पर तैयार की गयी है जिसमें 12 साल की स्कूली शिक्षा और 3 वर्ष की आंगनवाड़ी/प्री-स्कूलिंग को शामिल किया गया है। नीति में यह परिकल्पना की गई है कि विद्यालयी शिक्षा से वंचित बच्चों को जल्द से जल्द शैक्षिक क्षेत्र में वापस लाना और छात्रों को स्कूल छोड़ने से रोकने के लिए 2030 तक, पूर्वस्कूली शिक्षा से माध्यमिक स्तर तक 100% सकल नामांकन अनुपात प्राप्त करना सर्वोच्च प्राथमिकता होगी।

शिक्षा का अधिकार कानून 2009 की धारा 4 के अंतर्गत विद्यालयी शिक्षा से वंचित बच्चों को विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में शिक्षा ग्रहण करने का प्रावधान है। इसका उद्देश्य उन्हें आयु-अनुसार कक्षा के अनुरूप शैक्षिक एवं बौद्धिक स्तर पर तैयार करना है। इसी लक्ष्य की प्राप्ति की ओर कदम बढ़ाते हुए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली ने विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में ज्ञानार्जन करने वाले विद्यार्थियों के लिए विकसित पाठ्यपुस्तकों में आवश्यक सुधार किए हैं जिससे कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा विकसित पाठ्यक्रम पर आधारित इन पुस्तकों का निर्माण अति सरल भाषा का प्रयोग करते हुए किया गया है। इन पाठ्य पुस्तकों को पाठ्यक्रम के अनुसार मूल रूप में ही रखा गया है जिसमें चार स्तर हैं। प्राथमिक कक्षाओं के लिए स्तर एक एवं स्तर दो तथा उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए स्तर तीन एवं स्तर चार हैं। प्राथमिक स्तर पर चार विषय (हिंदी, अंग्रेजी, गणित एवं पर्यावरण अध्ययन) की पुस्तकें एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर पाँच विषय (हिंदी, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक अध्ययन एवं विज्ञान) की पुस्तकों का निर्माण किया गया है।

मैं इन पुस्तकों के निर्माण एवं पुनरीक्षण में योगदान देने वाले समस्त शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। मैं आशा करती हूँ कि ये पाठ्यपुस्तकें विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के शिक्षकों एवं छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी। ये पुस्तकें केंद्रों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का समग्र विकास करने में सक्रिय भूमिका निभा सकेंगी।

पुस्तकों में सुधार हेतु आपके अनमोल सुझाव सदैव वांछनीय हैं।

डॉ बिंदु सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर
विज्ञान विभाग
पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र संभाग
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

पुस्तक के बारे में..........

शिक्षा बच्चे का मौलिक अधिकार है । इस संदर्भ में देश में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 1 अप्रैल 2010 को लागू हुआ । हमारे देश में सभी बच्चों के लिए इस अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी गई है । इस अधिनियम के अनुसार 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चे को प्रारंभिक शिक्षा की समाप्ति तक उसके आस–पास के विद्यालयों में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है । यह अधिनियम प्रत्येक राज्य में यह भी सुनिश्चित करता है कि कोई भी ऐसा बच्चा जो किसी कमजोर वर्ग या वंचित समूह से संबंध रखता हो, उसके साथ किसी भी तरह का भेदभाव न रखते हुए प्राथमिक शिक्षा पूरी करने का अवसर देगा । अतएव समानता तथा भेदभाव रहित सिद्धांत पर आधारित यह अधिनियम प्रत्येक बच्चे को समान गुणवत्ता वाली शिक्षा का अधिकार प्रदान करता है ।

शिक्षा के अधिकार अधिनियम (भाग–4) के अनुसार यह प्रावधान है कि जो बच्चे कभी स्कूल नहीं गए या जो अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ चुके हैं, उन्हें स्कूल में उनकी उम्र के अनुसार प्रवेश दिया जाएगा । इसके अन्तर्गत उन बच्चों को अवसर दिया जाता है जो पढ़े–लिखे न होने के बावजूद भी जीवन के अनुभवों से भरपूर होते हैं जिसे विद्यालयों द्वारा प्रोत्साहित किया जाना चाहिए । इस अधिनियम में यह भी प्रावधान है कि विद्यालय बच्चों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन करेगा ।

इस संदर्भ में दिल्ली निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल अधिकार नियम 2011 के भाग VI में कहा गया है कि सरकार उपरोक्त कार्य को पूरा करने के लिए एक शैक्षणिक प्राधिकरण अधिसूचित करेगी। शैक्षणिक प्राधिकरण पाठ्यक्रम, पाठ्य सामग्री तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया का निर्धारण करेगा । सुसंगत व आयु संगत पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों एवं अन्य शिक्षण सामग्री तैयार करेगा। दिल्ली में राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् को शैक्षिक प्राधिकरण घोषित किया गया है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिशद (एस.सी.ई.आर.टी.) द्वारा प्रस्तुत यह पाठ्य सामग्री उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तैयार की गई है । यह पाठ्य–सामग्री सामाजिक विज्ञान के उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए तैयार की गई जो अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ चुके हैं या उन्होंने इस स्तर पर विद्यालय में प्रवेश ही नहीं लिया । इस पाठ्य सामग्री को दो स्तरों में बाँटा गया है जिसमें स्तर एक में कक्षा 6 व 7 और स्तर दो में कक्षा 8 के सामाजिक विज्ञान के उच्च प्राथमिक स्तर की न्यूनतम विषय सामग्री को सम्मिलित किया गया है ताकि वे बच्चे भी शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़ सकें ।

प्रस्तुत पाठ्यसामग्री सेतु पाठ्यक्रम पर आधारित है । यह रचनात्मक ज्ञान पर बल देती है। इसमें कुल 30 अध्याय है जिसे बच्चों को अधिकतम 2 वर्षों में पूरा करना है । इसके अन्तर्गत स्तर 3 में 16 और स्तर 4 में 14 अध्यायों को शामिल किया गया है । इसकी भाषा अत्यंत सरल है । पाठ्यसामग्री को रोचक और आंनददायी बनाने के लिए मानचित्र, चित्र व आरेख एवं कार्यपत्रक यथा स्थान उचित रूप से दिए गए हैं । इसके उपयोग से विषयवस्तु को आसानी से समझा जा सकता है । साथ में इन पर आधारित पाठ के बीच में कुछ क्रियाकलाप सुझाए गए हैं इससे बच्चे का अवधारणात्मक एवं रचनात्मक विकास होगा । पाठ के बीच में पाठगत प्रश्न भी दिए गए है जिससे बच्चे स्वयं पाठ को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दे सकें और विषय के प्रति रूचि विकसित कर सकेगें । इन क्रियाकलापों एवं प्रश्नों के माध्यम से सामूहिक रूप से सीखने का वातावरण तैयार होगा। इस पाठ्यसामग्री में यह कोशिश की गई है कि सीखने और सिखाने की प्रक्रिया रोचक एवं आसान हो । सोचने, प्रश्न पूछने, मानचित्र कौशल विकसित करने, क्रियाकलाप संपादित करने के जरिए बच्चे की सीखने की क्षमता बढ़ेगी। हम आशा करते हैं कि उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान की प्रस्तुत पाठ्य–सामग्री को बच्चे पढ़कर लाभान्वित होंगे और अपने लक्ष्य को पुनः प्राप्त कर सकेंगे। यह पाठ्य सामग्री संशोधित रूप में पुनः आपके सामने पस्तुत है।

अंत में प्रस्तुत पाठ्य–सामग्री के निर्माण के समय जिन पुस्तकों, संदर्भ ग्रंथों, इन्टरनेट, सहायक सामग्री, संस्थाओं, विषय से जुड़े विद्वानों एवं लेखकों के विचार, चित्रों एवं मानचित्रों को सम्मिलित किया गया है, उन सभी का आभार प्रकट करता हूँ ।

डॉ राजकुमार श्रीवास्तव
नोडल अधिकारी

पुस्तक विकास समिति

संरक्षक

श्री एच राजेश प्रसाद, प्रधान सचिव (शिक्षा) दिल्ली
श्री रजनीश सिंह, निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

शैक्षिक सलाहकार

डॉ. नाहर सिंह, संयुक्त निदेशक (शैक्षिक), एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

पुस्तक निर्माण समिति

नोडल अधिकारी

डॉ. सीमा यादव, वरिष्ठ प्रवक्ता, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

विषय	समन्वयक
भूगोल	डॉ. राजकुमार श्रीवास्तव, प्रवक्ता, डाइट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
इतिहास	डॉ. राजेन्द्र कुमार, प्रवक्ता, एस.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
राजनीति शास्त्र	डॉ. नीलम, व. प्रवक्ता, डाइट, राजेन्द्र नगर, दिल्ली
अर्थ शास्त्र	डॉ. सतनाम सिंह, व. प्रवक्ता, डाइट, दिलशाद गार्डन, नई दिल्ली

लेखक समूह

इतिहास

एन. पी. सिंह, प्रधानाचार्य (से.नि.), शिक्षा निदेशालय, दिल्ली
रामदेव, प्रवक्ता, राजकीय सर्वोदय विद्यालय, शंकराचार्य मार्ग, दिल्ली
विनीता रिरवी, प्रवक्ता, ए. एस. एन. स्कूल, मयूर विहार, दिल्ली
कन्हैया लाल झा, प्रवक्ता, राजकीय सर्वोदय विद्यालय, कोंडली
राहुल मिश्रा, प्रवक्ता, डाइट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
धीरज राय, प्रवक्ता, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

भूगोल

डॉ. राजकुमार श्रीवास्तव, प्रवक्ता, डाइट, दिलशाद गार्डन
अबरार अहमद, प्रवक्ता, राजकीय बाल सीनियर सेकेन्डरी स्कूल, शास्त्री पार्क, दिल्ली
नरेश चन्द शर्मा, प्रवक्ता, सर्वोदय बाल विद्यालय, पूर्वी विनोद नगर, दिल्ली
राजपाल सिंह, प्रवक्ता, राजकीय बाल सीनियर सेकेन्डरी स्कूल, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
हरीश कुमार, प्रवक्ता, राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय, पश्चिमी विनोद नगर, दिल्ली
दीपा कपूर, टी.जी.टी., माडर्न स्कूल, बाराखम्बा रोड़, नई दिल्ली

राजनीति शास्त्र

रमाशंकर सिंह, उपप्रधानाचार्य, राजकीय बाल सीनियर सेकेन्डरी स्कूल, पुरानी सीमापुरी, दिल्ली
श्याम किशोर गुप्ता, प्रवक्ता, राजकीय प्रतिभा स्कूल, गाँधी नगर, दिल्ली
डॉ. भगवती प्रसाद ध्यानी, प्रवक्ता, राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय, मयूर विहार 2, दिल्ली
तपराज दत्त, प्रवक्ता, राजकीय बाल सीनियर सेकेन्डरी स्कूल, कोंडली, दिल्ली

अर्थशास्त्र

वीरेन्द्र कुमार चौधरी, प्रवक्ता, राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय, कान्ती नगर, दिल्ली
प्रकाश वीर, टी.जी.टी., राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय, शाहदरा, दिल्ली
डॉ. जगवीर सिंह, वरिष्ठ प्रवक्ता, डाइट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
डॉ. देवेन्द्र, प्रधानाचार्य, राजकीय सह–शिक्षा सीनियर सैकेन्डरी स्कूल, मयूर विहार फेज.1

विषय सलाहकार

डॉ. रामाश्रय प्रसाद, एशोसिएट प्रोफेसर (भूगोल), डॉ. भीम राव अंबेडकर कॉलेज,
(दिल्ली विश्वविद्यालय) यमुना विहार, दिल्ली
श्री एन. पी. सिंह, प्रधानाचार्य (से. नि.), शिक्षा निदेशालय, दिल्ली

पुस्तक पुनरीक्षण समिति 2021-22

पुनरीक्षण नोडल अधिकारी

डॉ. बिंदु सक्सेना, असिस्टेंट प्रोफेसर, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

विषय समन्वयक

डॉ. राजकुमार श्रीवास्तव, असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली

समीक्षक समूह

डॉ. सतनाम सिंह,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
डॉ. सुनील कुमार,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, कड़कड़डूमा, दिल्ली
डॉ. सुनीता रानी,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, मोतीबाग, दिल्ली
डॉ. धर्मेन्द्र डागर,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, घूमनहेड़ा, दिल्ली
डॉ. नीलम,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, मोतीबाग, दिल्ली
प्रभा उन्याल,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, राजेन्द्र नगर, दिल्ली
जोगिन्द्र कुमार,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, मोतीबाग, नई दिल्ली
डॉ. राहुल मिश्रा,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
नसरूद्दीन,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, कड़कड़डूमा, दिल्ली
डॉ. राजकुमार श्रीवास्तव	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली

प्रकाशन अधिकारी

डॉ. मुकेश यादव, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

प्रकाशन समूह

नवीन कुमार, राधा, जय भगवान, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

विषय–सूची

क्रमांक	पाठ	पृष्ठ संख्या
1	नये राजा और उनके राज्य	1
2	दिल्ली के सुल्तान	6
3	मुगल साम्राज्य	14
4	ईश्वरीय भक्ति	22
5	अठारहवीं शताब्दी में राजनैतिक गठन	34
6	पर्यावरण	41
7	पृथ्वी का स्वरूप	46
8	पृथ्वी का बदलता स्वरूप	51
9	मानव आवास, परिवहन एवं संचार	60
10	जलवायु प्रदेशों में मानव क्रियाऐं	69
11	समानता	74
12	लिंग बोध	79
13	संचार माध्यम् एवं विज्ञापन	86
14	बाजार	92

1 नये राजा और उनके राज्य

प्रस्तावना

सन् 750 से 1200 के मध्य का समय भारतीय इतिहास में आरम्भिक मध्यकालीन युग के नाम से जाना जाता है। पूर्व में इतिहासकारों द्वारा इसे 'अंधकार युग' की संज्ञा दी गई थी। यह संभवतः इसलिए कि इस दौरान संपूर्ण राष्ट्र छोटे–छोटे प्रांतों में विभक्त था, जो आपस में युद्ध करने में व्यस्त रहते थे। किन्तु नवीनतम् अध्ययन इस बात की ओर इशारा करते हैं कि राजनीतिक रूप से छिन्न–भिन्न भारत भी कला, साहित्य, तथा भाषा के क्षेत्र में नई समृद्ध सांस्कृतिक उपलब्धियों का केन्द्र बना। जबकि मंदिर स्थापत्य कला भारतीय इतिहास में इस कालखण्ड की सर्वश्रेष्ठ देन् है। इस प्रकार 'अंधेरे' से हटकर इसे भारतीय इतिहास का सबसे प्रभावशाली काल कहा जा सकता है।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन से हम :–

- नये राजवंशो जैसे राष्ट्रकूट, चालुक्य, गुर्जर–प्रतिहार के राज्यों को पहचान सकेंगे।
- नये राज्यों की प्रशासनिक और सैनिक व्यवस्था को परख सकेंगे।
- दक्षिण भारत के राज्यों की प्रशासनिक व्यवस्था की तुलना कर सकेंगे।
- कला एवं स्थापत्य कला विशेषकर चोल शासकों की विशेषताओं की व्याख्या कर सकेंगे।

नये राजवंश

750 ई. से 1200 ई. के दौरान भारत में तीन प्रमुख राजवंशों और उनके राज्यों का उदय हुआ– राष्ट्रकूट, चालुक्य और गुर्जर–प्रतिहार।

- **राष्ट्रकूट राजवंशः**

  दक्षिण भारत में 8वीं शताब्दी में दंतिदुर्ग ने राष्ट्रकूट वंश की स्थापना की। राष्ट्रकूटों की राजधानी शोलापुर के निकट मालखेड अथवा मान्यखेत थी। ध्रुव के शासनकाल में राष्ट्रकूटों ने वैभवशाली नगर कन्नौज पर अधिपत्य के लिए उत्तर भारत की ओर रूख किया। इसने त्रिकोणीय संघर्ष को जन्म दिया। राष्ट्रकूट वंश का प्रमुख शासक कृष्ण प्रथम था। इसने एलोरा में विख्यात् कैलाश मंदिर का निर्माण कराया। यह पत्थर के एक ही टुकड़े से बना है तथा भगवान शिव को समर्पित है। अरब लोगों द्वारा लिखे विवरण हमें सूचना देते हैं कि राष्ट्रकूट शासकों के अरब व्यापारियों के साथ बहुत अच्छे संबंध थे। इन व्यापारियों को मस्जिदों का निर्माण करने, बिना किसी अवरोध के अपने धर्म का अनुसरण करने की स्वतंत्रता थी। यह राष्ट्रकूट शासकों की धार्मिक उदारता को ही उजागर नहीं करता बल्कि अरब लोगों के साथ व्यापार बढ़ाकर आर्थिक लाभ प्राप्त करने की उनकी प्रवृत्ति को भी दर्शाता है।

- **चालुक्य राजवंश**

  दक्कन तथा दक्षिणी भारत के इतिहास में चालुक्य वंश ने छठी शताब्दी के प्रारंभ से लेकर 200 वर्ष तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने पश्चिमी दक्कन में अपने साम्राज्य की स्थापना की तथा एहोल (वर्तमान कर्नाटक में बादामी) को अपनी राजधानी बनाया। यह एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था। धीरे–धीरे यह एक धार्मिक केन्द्र भी बन गया जहाँ कई मंदिर थे। पुलकेशिन द्वितीय के शासनकाल में (सन् 610–642 ई.) साम्राज्य की ख्याति शीघ्रता से शिखर पर पहुँच गई। उनके बारे में हमें उसके दरबारी कवि रविकीर्ति द्वारा रचित प्रशस्ति से पता चलता है। इसमें उनके पूर्वजों, खासतौर से पिछली चार पीढ़ियों के बारे में बताया गया है। पुलकेशिन द्वितीय को अपने चाचा से यह राज्य मिला था।

भीतर गांव मंदिर

रविकीर्ति के अनुसार उन्होंने पूर्व तथा पश्चिम दोनों समुद्रतटीय इलाकों में अपने अभियान चलाए। इसके अतिरिक्त उन्होंने हर्ष को भी आगे बढ़ने से रोका। हर्ष का अर्थ 'आनन्द' होता है। कवि का कहना है कि इस पराजय के बाद हर्ष अब 'हर्ष' नहीं रहा। पुलकेशिन ने पल्लव राजा के ऊपर भी आक्रमण किया, जिसे काँचीपुरम की दीवार के पीछे शरण लेनी पड़ी। हर्ष को पराजित कर 'दक्षिणपथेश्वर' अर्थात् दक्षिण के देव की उपाधि अर्जित की। पल्लव तथा चालुक्य राजाओं के साथ संघर्ष के दौरान उन्हीं के सामंत राष्ट्रकूटों ने उनका तख्ता पलट दिया। सांस्कृतिक रूप से दक्कन क्षेत्र में कला तथा स्थापत्य कला की प्रगति के लिए इस युग का अपना महत्व है। राष्ट्रकूट राजाओं के अरब व्यापारियों के साथ अच्छे संबंध वे अरबों द्वारा किए जाने वाले समुन्द्री व्यापार से आर्थिक लाभ लेते रहे। इन्होंने 757 से 985 ई. तक दक्षिण में राज्य किया। इनके बाद चोल राजाओं ने इस क्षेत्र में 1122 ई. तक राज्य किया।

- **गुर्जर–प्रतिहार राजवंश:**

  गुर्जर–प्रतिहार वंश की स्थापना 8वीं शताब्दी में नागभट्ट प्रथम ने की थी। उन्होंने इसकी स्थापना मालवा क्षेत्र में की थी। वह एक राजपूत था। उसके उत्तराधिकारी वत्सराज ने अपने साम्राज्य को उत्तर भारत के एक बड़े हिस्से तक फैलाया। उन्होंने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया। वत्सराज की विस्तार नीति ने उसका बंगाल तथा बिहार के शासक धर्मपाल के साथ संघर्ष कराया। शीघ्र ही दक्षिण भारत से राष्ट्रकूट सम्राट भी इस संघर्ष में कूद पड़े तथा तभी त्रिकोणीय संघर्ष का प्रारम्भ हुआ अर्थात् तीन शक्तियों के बीच युद्ध। यह अगले डेढ़ सौ वर्षों तक आगे के विभिन्न शासकों के मध्य जारी रहा। तथापि कन्नौज पर अपना आधिपत्य बनाए रखने के लिए गुर्जर–प्रतिहारों का संघर्ष चलता रहा। इस वंश का एक और महान् शासक नवीं शताब्दी में मिहिर भोज था। अपने साम्राज्य को लुटेरों से सुरक्षित बनाए रखने के लिए अरब विद्वान सुलेमान ने उसकी प्रशंसा की।

1.1 पाठगत प्रश्न

1. राष्ट्रकूट वंश की स्थापना किसने की?
2. चालुक्य राजवंश के सबसे प्रसिद्ध शासक कौन हैं?
3. नागभट्ट प्रथम कौन था?

राज्यों की प्रशासनिक और सैनिक व्यवस्था

- **प्रशासनिक व्यवस्था**

  पहले के राजाओं की तरह इन राजाओं के लिए भी भूमि कर सबसे महत्वपूर्ण बना रहा।

  प्रशासन की प्राथमिक इकाई गाँव होते थे। लेकिन धीरे–धीरे कई नए बदलाव आए। राजाओं ने आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक या सैन्य शक्ति रखने वाले लोगों का समर्थन जुटाने के लिए कई कदम उठाए। उदाहरण के तौर पर:–

  - कुछ महत्वपूर्ण प्रशासकीय पद आनुवंशिक बन गए अर्थात् बेटे अपने पिता का पद पाते थे जैसे कि कवि हरिषेण अपने पिता की तरह महादंडनायक अर्थात् मुख्य न्याय अधिकारी थे।
  - कभी–कभी, एक ही व्यक्ति कई पदों पर कार्य करता था जैसे कि हरिषेण एक महादंडनायक होने के साथ–साथ कुमारामात्य अर्थात् एक महत्वपूर्ण मंत्री तथा एक संधि–विग्रहिक अर्थात् युद्ध और शांति के विषयों का भी मंत्री था।

- संभवतः वहाँ के स्थानीय प्रशासन में प्रमुख व्यक्तियों का बहुत बोलबाला था। इनमें नगर–श्रेष्ठी यानी मुख्य बैंकर या शहर का व्यापार, सार्थवाह यानी व्यापारियों के काफिले का नेता, प्रथम –कुलिक अर्थात् मुख्य शिल्पकार तथा कायस्थों यानी लिपिकों के प्रधान जैसे लोग होते थे।

  इस तरह की नीतियाँ कुछ हद तक प्रभावशाली होती थी, पर समय के साथ–साथ इनमें से कुछ व्यक्ति इतने अधिक शक्तिशाली हो जाते थे कि अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लेते थे। ऊपर दिए गए प्रतिहार साम्राज्य के साथ यही हुआ था।

  शासन का तत्कालीन ढाँचा प्रायः विकेन्द्रीकृत राजनीतिक पद्धति के रूप में दर्शाया गया है। यह वह प्रणाली है जिसमें निःसंदेह सर्वोच्च पद पर राजा ही होता है किन्तु वह अपना शासन जागीरदारों अथवा सामंतों जैसे उप–प्रमुखों के सहयोग से करता था। सामंत व्यवस्था से तात्पर्य ऐसे शासकों से था, जो पराजित हो जाते थे। किन्तु उनका राज्य उन्हें इस शर्त पर वापस मिल जाता था कि वह विजयी राजा की अधीनता स्वीकार करेंगे तथा उसे नगद या अन्य प्रकार से शुल्क की आपूर्ति करते रहेंगे। आवश्यकता पड़ने पर वे सैनिक सहायता भी करेंगे।

- **सैनिक व्यवस्था:**

  कुछ राजा अभी भी पुराने राजाओं की तरह एक सुसंगठित सेना रखते थे, जिसमें हाथी, रथ, घुड़सवार, और पैदल सिपाही होते थे पर इसके साथ–साथ कुछ सेनानायक भी होते थे, जो आवश्यकता पड़ने पर राजा को सैनिक सहायता दिया करते थे। इन सेना नायकों को कोई नियमित वेतन नहीं दिया जाता था। इनकी सेवा के बदले में इनमें से कुछ को भूमिदान दिया जाता था। दी गई भूमि से ये कर वसूलते थे जिससे वे सेना तथा घोड़ों की देखभाल करते थे। साथ ही वे इससे युद्ध के लिए हथियार जुटाते थे। इस तरह के व्यक्ति सामंत कहलाते थे। जहाँ कहीं भी शासक दुर्बल होते थे, ये सामंत स्वतंत्र होने की कोशिश करते थे।

1.2 पाठगत प्रश्न

1. मुख्य न्याय अधिकारी क्या कहलाते थे?
2. कुमारामात्य कौन थे?
3. सैनिकों को सेवा के बदले क्या दिया जाता था?

चोल शासक और राज्य

दक्षिण भारत में चोल शासकों के एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना 1000–1200 ई. में हुई। संगम काल में वर्णित 'प्रतापी चोल शासक' इस काल के चोल शासकों के मध्य संबंधों में स्पष्टता नहीं है। दक्षिण भारत में पल्लव वंश को सिंहासन से हटाने के बाद चोल शासक सत्ता में आए। चोल साम्राज्य का संस्थापक विजयालय (9 वीं शताब्दी) था। किन्तु उसके गौरव के वास्तविक वास्तुकार राजराजा प्रथम (985–1014 ई.) तथा उसका पुत्र राजेन्द्र प्रथम (1014–1044 ई.) थे। अपने सर्वोत्तम काल में चोल साम्राज्य उत्तर में तुंगभद्रा नदी (कृष्णा नदी की सहायक नदी) से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक विस्तृत था। चोल शासकों ने अपनी जल सेना का सफल उपयोग किया तथा न सिर्फ मालदीव तथा लक्षद्वीप को पराजित किया बल्कि श्रीलंका को भी अपने अधीन किया। उन्होंने जावा, सुमात्रा, तथा मलाया के भी शासकों को पराजित किया। राजराजा प्रथम का महानतम् योगदान तंजौर स्थित प्रभु श्री शिव को समर्पित उस प्रसिद्ध मंदिर का निर्माण है, जिसे राजराजेश्वर बृहदेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है। उसके पुत्र राजेन्द्र प्रथम का शासन और भी अधिक रोमांचक था। उसने पाल शासक महीपाल को पराजित किया और बंगाल में गंगा तक अपनी शक्ति का डंका बजवाया। इस विजय को स्मरणीय बनाने के लिए उसने एक नई राजधानी 'गंगईकोंड–चोलपुरम' की नींव डाली। स्वयं ने गंगई–कोंड (गंगा विजेता) की उपाधि धारण की। वह शिक्षा का महान् प्रश्रयदाता था तथा पंडित चोल के उप नाम से जाना जाता था। अन्तिम प्रमुख चोल शासक कुल्लोतुंग (1070–1122 ई.) था। उसके शासनकाल में चोल साम्राज्य में विघटन प्रारंभ हुआ। वह एक बहुत छोटे क्षेत्र में सिमट कर रह गया।

वृहदेश्वर मंदिर, तंजौर

1.3 पाठगत प्रश्न

1. चोल साम्राज्य की स्थापना कब हुई?
2. चोल साम्राज्य उत्तर में .... से लेकर दक्षिण में .... तक विस्तृत था।

कला एवं स्थापत्य कला

नई क्षेत्रीय शक्तियों के आने से नए राजनीतिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों का उदय हुआ जैसे– उत्तर में बंगाल, उड़ीसा, मध्य भारत में महाराष्ट्र तथा गुजरात दक्षिण भारत में आंध्र, कर्नाटक, तमिलनाडु। हमारे वर्तमान कला एवं स्थापत्य कला के रूप की नींव इसी युग में पड़ी।

- **चोलों की कला एवं स्थापत्य कला के नमूने एवं विशेषताएँ:**

इस काल के दौरान निर्मित हुए मंदिरों की स्थापत्य कला में हम तीन श्रेणियों का उदय पाते हैं, जिन्हें नागर, द्रविड़ तथा वेसर (नागर और वेसर मिश्रित शैली) के नाम से जाना जाता है। नागर शैली की प्रमुख विशेषता विशाल मीनारों का निर्माण था। इस शैली में निर्मित मंदिर उत्तर भारत के विस्तृत भू–भाग में फैले हैं, विशेषकर मध्य भारत, गुजरात और उड़ीसा में। तथापि प्रचलित नागर शैली में भी क्षेत्रीय स्तर पर क्षेत्रीय विशेषताएँ थी। इस शैली के प्रमुख मंदिरों में भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर है। दक्षिण भारत में मंदिर निर्माण की द्रविड़ शैली विकसित हुई। चोल शासनकाल में यह अपने गौरव के उच्चतम स्तर तक पहुँची। इस शैली की प्रमुख विशेषताएँ थी गर्भगृह, विमानम्, मंडप, गोपुरम् का निर्माण। गर्भगृह से तात्पर्य था मुख्यदेव का अन्तर्निवास स्थल। गर्भगृह के ऊपर बनी इमारतों को विमानम् कहा गया, मंडप अंकित स्तंभों का विशाल भवन, जो गर्भगृह के सम्मुख निर्मित होता था। मंदिर क्षेत्र के चारों ओर बने भव्य बड़े दरवाजों को गोपुरम् कहा गया।

इस शैली का सर्वाधिक प्रमुख मंदिर चोल शासक राजराजा द्वारा निर्मित तंजौर स्थित बृहदेश्वर मंदिर है। वेसर मंदिर नागर और द्रविड़ शैली मिश्रित पद्धति का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये चालुक्य शासकों के संरक्षण में निर्मित हुए तथा बादामी (कर्नाटक) के निकट पट्टकल में पाए गए। मूर्ति निर्माण के क्षेत्र में भी इस युग ने नई ऊँचाइयों को छुआ। चोल कलाकारों द्वारा तांबे की बनी नटराज की मूर्ति इस युग की अनमोल देन है। इन मूर्तियों में शिव को नृत्य करने की मुद्रा में दर्शाया गया है, जो कि अपनी सुंदर और बनावट में अतुलनीय है।

नटराज मूर्ति

अभ्यास

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:–
   I. त्रिकोणीय संघर्ष में शामिल होने वाले राज्य ...., ..., और ....थे।
   II. .... के शासनकाल में राष्ट्रकूटों ने कन्नौज पर अधिकार किया।
   III. विख्यात् कैलाश मंदिर .... में स्थित है।
   IV. चालुक्यों ने अपने साम्राज्य की राजधानी .... को बनाया।
   V. पुलकेशिन द्वितीय को राज्य अपने .... से मिला।
   VI. गुर्जर–प्रतिहार वंश की स्थापना .... ने की।
2. निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर लिखिए–
   1. राष्ट्रकूट वंश की स्थापना किसने और कब की?
   2. चालुक्य साम्राज्य के विस्तार में पुलकेशिन द्वितीय के योगदान का वर्णन कीजिए।
   3. पुलकेशिन द्वितीय ने 'दक्षिणेश्वर' की उपाधि कब ली?
   4. दक्षिण भारत के राज्यों की प्रशासनिक व्यवस्था की चार विशेषताएँ लिखिए।
   5. दक्षिण भारत के राज्यों की सैनिक व्यवस्था की व्याख्या कीजिए।
   6. चोल शासकों की कला एवं स्थापत्य कला की चार विशेषताएँ लिखिए।

आओ जानें–

(i) नागर शैली की प्रमुख विशेषता .... था।

(ii) उत्तर भारत में सि शैली में निर्मित मन्दिर हैं?

(iii) वृहदेश्वर मन्दिर के चित्र को देखिए और बताइए कि यह सि शैली में बना है?

2 दिल्ली के सुल्तान

प्रस्तावना

आपने राजा और रानी की कहानी अपनी दादी या नानी से सुनी होगी, क्या आपने कभी दिल्ली के सुल्तानों के बारे में सुना है? अगर नहीं सुना है, तो आपने कुतुबमीनार के बारे में अवश्य सुना होगा। चलो आज दिल्ली के सुल्तान और उनसे सम्बन्धित कार्यों के बारे में हम चर्चा करते हैं।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन से हम :–

- विद्यार्थी दिल्ली सल्तनत के इतिहास से परिचित होंगे।
- दिल्ली के सुल्तान और उनके कार्यों का संज्ञान ले सकेंगे।
- दिल्ली सल्तनत के इतिहास के स्रोत और स्थापत्य कला से अवगत होंगे।
- सल्तनत कालीन आर्थिक व्यवस्था, व्यापार एवं बाजार व्यवस्था को समझ सकेंगे।
- गैरिसन शहरों, भीतरी प्रदेशों की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।

आरंभिक बारहवीं शताब्दी में राजपूत वंश के तोमर राजा अनंगपाल तोमर ने दिल्ली नगर बसाया, उसे अपनी राजधानी बनाया। उस समय दिल्ली को 'ढिल्लिका' के नाम से जाना जाता था। 12 वीं शताब्दी के मध्य में तोमर राजाओं को परास्त कर चौहान वंश का शासन दिल्ली में स्थापित हुआ। चौहान के राज्यकाल में दिल्ली व्यापार और वाणिज्य का एक समृद्ध नगर बन चुका था।

सन् 1191 ई. में पृथ्वीराज चौहान दिल्ली का शासक था उसी समय तुर्कों का आक्रमण दिल्ली पर हुआ। 1191 ई. के तराईन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान तुर्क आक्रमणकारी मुहम्मद गौरी को परास्त कर देता है। मुहम्मद गौरी अपनी जान बचाकर युद्ध भूमि से भाग गया। सन् 1192 ई. में मुहम्मद गौरी ने एक बार फिर दिल्ली पर आक्रमण कर दिया, तराईन के द्वितीय युद्ध में मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान को परास्त कर दिया। यहीं से दिल्ली सल्तनत की स्थापना का सिलसिला शुरू हुआ। मुहम्मद गौरी अपने देश गौर वापस चला गया। दिल्ली में योग्य और विश्वनीय कुतुबुदीन ऐबक को अपना उत्तराधिकार बना दिया।

दिल्ली के शासक

राजपूत वंश

तोमर	आरंभिक बारहवीं शताब्दी
अनंगपाल	1130–1145
चौहान	1165–1192
पृथ्वीराज चौहान	1175–1192

प्रारंभिक तुर्क शासक 1192–1290

मुहम्मद गौरी	1192–1206
कुतुबुदीन ऐबक	1206–1210
शमसुदीन इल्तुतमिश	1210–1236
रज़िया	1236–1240
ग्यासुदीन बलबन	1266–1287
कैकूबाद कैमूर तथा फिरोज़	1287–1290

खलजी वंश (1290–1320)	
जलालुद्दीन ख़लजी	1290–1296
अलाउद्दीन खलजी	1296–1316
मलिक काफूर, मुबारकशाह, खुसरो	1316–1320
तुगलक वंश (1320–1414)	
ग्यासुदीन तुगलक	1320–1324
मुहम्मद बिन तुगलक	1324–1351
फिरोजशाह तुगलक	1351–1388
फिरोज के कमजोर उत्तराधिकारी तथा 1398 में तैमूर का आक्रमण	
सैय्यद वंश (1414–1451)	
खिज्र खान	1414–1451
लोदी (1451–1526)	
बहलोल लोदी	1451–1489
सिकन्दर लोदी	1489–1517
इब्राहीम लोदी	1517–1526

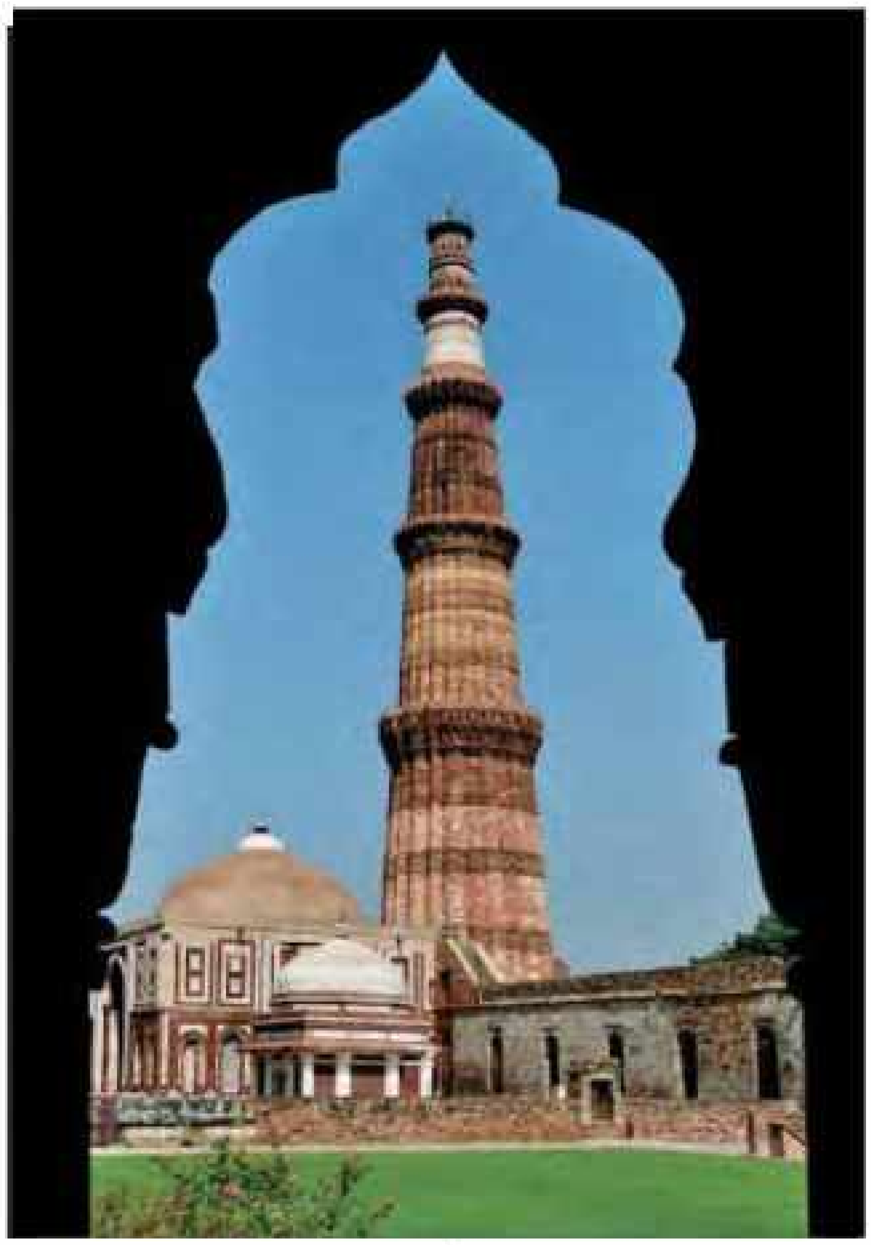

कुतुब मीनार

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206 ई. से 1210 ई.)

ऐबक का राज्याभिषेक 25 जून 1206 में लाहौर में हुआ, उसने भारत में अनेक प्रदेश जीते और शान्ति व्यवस्था भी कायम की। उसे अपनी दानशीलता के कारण 'लाख बख्श' के नाम से जाना गया। ऐबक ने दो प्रसिद्ध मस्जिदों का निर्माण करवाया – दिल्ली की कुव्वत–उल–इस्लाम और अजमेर का "ढाई दिन का झोपड़ा'। ऐबक ने कुतुबमीनार बनवाने का कार्य भी आरम्भ किया। कुतुब मीनार की ऊँचाई 238 फुट है। यह दिल्ली के महरौली में स्थित है।

कुतुबुदीन ऐबक तुर्क जनजाति का था, वह तुर्किस्तान का रहने वाला था, बचपन में एक दास के रूप में गौरी ने खरीदा था।

2.1 पाठगत प्रश्न

रिक्त स्थानों की पूर्ती कीजिए।

- सर्वप्रथम दिल्ली को .... राजधानी बनाया।
- पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद गौरी के बीच .... का युद्ध हुआ।
- दिल्ली सल्तनत का संस्थापक .... था।
- कुतुबमीनार बनाने का कार्य आरम्भ .... किया।

इल्तुतमिश (1210–1236 ई.)

ऐबक के दामाद इल्तुतमिश ने सुल्तान की शक्ति और प्रतिष्ठा स्थापित की उसने अपने विश्वासपात्र व्यक्तियों को लेकर 'चालीस गुलामों' के दल की स्थापना की। इल्तुतमिश ने पूरे राज्य को 'इक्ता' नामक छोटी–छोटी इकाइयों में विभाजित किया। इल्तुतमिश ने चांदी का 'टंका' और पीतल का 'जीतल' नामक मुद्राएँ चलवायी।

रज़िया (1236–1240 ई.)

रज़िया दिल्ली सल्तनत की प्रथम और अंतिम महिला सुल्तान थी। रज़िया इल्तुतमिश की पुत्री थी। रज़िया ने दिल्ली की गद्दी जनता के समर्थन से प्राप्त की थी। जनता सदैव उसके प्रति वफादार रही। तुर्क सरदार रज़िया को महिला होने के कारण दिल्ली की शासिका के रूप में देखना नहीं चाहते थे। यही वजह थी कि उसका विरोध किया गया।

बलवन (1266 ई. से 1287 ई.)

दिल्ली सल्तनत के आरंभिक सुल्तानों में बलवन एक महान शासक था। उसने दिल्ली सल्तनत की मजबूती के लिए स्थायी सेना, गुप्तचर व्यवस्था, प्रशासनिक सुधार, इक्तादार पर नियंत्रण स्थापित किया। बलवन ने दिल्ली के सुल्तान के पद को प्रतिष्ठा भी दिलायी।

2.2 पाठगत प्रश्न

निम्न रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

- चालीसा दल की स्थापना .... की।
- राज्य की छोटी–छोटी इकाइयों को .... कहा जाता था।
- इल्तुतमिश द्वारा चलायी गई मुद्राएँ .... थी।
- रज़िया .... समर्थन से सुल्तान बनी।
- स्थायी सेना की स्थापना .... की।

महत्वपूर्ण तथ्य

- कुतुबमीनार को इल्तुतमिश द्वारा पूरा करवाया गया।
- जीतल व टंका इल्तुतमिश द्वारा चलवाई गई मुद्राएं थी।
- 'चालीसा दल' तुर्क वफादारों का दल था।
- रज़िया प्रथम महिला सुल्तान थी।
- बलवन ने स्थायी सेना की स्थापना की।
- रज़िया इल्तुतमिश की पुत्री थी।
- 'कुव्वत उल इस्लाम' मस्जिद भारत की प्रथम मस्जिद है।

मामलुक राज्य (गुलाम शासन) के पतन के बाद दिल्ली पर खिलजी वंश की स्थापना हुई। जलालुदीन फिरोज खिलजी इस वंश का प्रथम सुल्तान था। खिलजी वंश का प्रसिद्ध शासक अलाउद्दीन खिलजी हुआ।

अलाउद्दीन खिलजी (1296 ई. से 1316 ई.)

अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली साम्राज्य की सीमा का बहुत विस्तार किया, साथ ही अनेक प्रशासनिक और राजनीतिक सुधार किये। अलाउद्दीन खिलजी ने एक सुसंगठित सेना की स्थापना की, न्याय व गुप्तचर व्यवस्था मजबूत की। एक बड़े साम्राज्य को चलाने के लिए स्थायी भू–राजस्व (लगान) वसूल करने के लिए विभाग खोला।

भारत में पहली बार शासन के प्रत्यक्ष निरीक्षण में बाजार एवं मूल्य नियंत्रण की व्यवस्था स्थापित की।

महत्वपूर्ण तथ्य

- अलाउद्दीन खिलजी ने लगान वसूल करने वाला विभाग दीवान–ए–मुस्तखराज खोला।
- डाक चौकियों की स्थापना अलाउदीन के द्वारा की गई।
- अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार एवं मूल्य नियंत्रण की व्यवस्था की।

खिलजी वंश के पतन के बाद तुगलक वंश की स्थापना गयासुदीन तुगलक के द्वारा की गई। इस वंश का प्रसिद्ध सुल्तान मुहम्मद–बिन–तुगलक था।

मुहम्मद–बिन–तुगलक(1324 ई. से 1351 ई तक)

मुहम्मद तुगलक एक विलक्षण प्रतिभा का शासक था। उसे असफलताओं का बादशाह भी कहा जाता हैं। उसने अनेक नई–नई योजनाएँ बनायी, यद्यपि ये योजनाएँ विफल रही–

- **राजधानी परिवर्तन** – मुहम्मद तुगलक ने दिल्ली से दौलताबाद अपनी राजधानी बनाने का निश्चय किया।
- **सांकेतिक मुद्रा का चलवाना** – राजकोष में बहुमूल्य धातुएँ जैसे सोना, चाँदी की कमी के कारण काँसे के सिक्के चलवाये जिनका मूल्य चाँदी के सिक्के के बराबर था।
- **दीवान–ए–अमीरकोही** – कृषि विस्तार के लिए नया विभाग दीवान–ए–अमीरकोही खुलवाया। इस विभाग के द्वारा किसान को कुएँ खुदवाने और बीज खरीदने के लिए धन दिया गया।
- **दोआब में कर वृद्धि** – दोआब में कर वृद्धि जिस समय हुआ उस समय दोआब में अकाल पड़ गया। किसानों ने कर देने से मना कर दिया।

समय से पहले नीतियाँ लागू करने के कारण मुहम्मद तुगलक असफल रहा और 'मूर्ख बादशाह' कहलाया।

दिल्ली सुल्तानों के बारे में जानकारी

- दिल्ली के सुल्तानों के बारे में जो प्रमुख स्रोत है– लिखित स्रोत, सिक्के व इमारतें।
- मिनहाज–उस–सिराज द्वारा लिखित तबकात–ए–नासिरी में दिल्ली सल्तनत का क्रमबद्ध विवरण देखा जा सकता है।
- जियाउद्दीन बरनी द्वारा लिखित तारीख–ए–फीरोजशाही तत्कालीन समय की सूचनाओं का प्रमुख स्रोत है।
- विदेशी यात्रियों के द्वारा लिखित विवरण– इब्नबतूता द्वारा लिखित 'रेहला'।
- पुरातात्विक स्रोतों में – कुव्वत उल–इस्लाम मस्जिद, कुतुबमीनार, अलाई दरवाजा, फिरोजशाह कोटला आदि इमारतें प्रमुख हैं। इन इमारतों की दीवार पर फारसी अभिलेख भी खुदवाये गये।

महत्वपूर्ण तथ्य

- मुहम्मद बिन तुगलक ने कृषि विकास हेतु दीवान–ए–अमीरकोही विभाग खोला।
- इब्नबतूता अफ्रीका का यात्री था।
- तबकाते नासिरी के लेखक मिन्हाज उस सिराज थे।
- ऐतिहासिक स्रोत–लिखित स्रोत, इमारतें एवं सिक्के।

2.3 पाठगत प्रश्न

निम्न रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. इब्नबतूता .... निवासी था।
2. अमीर–ए–कोही विभाग .... विकास हेतु खोला गया।
3. दिल्ली से दौलताबाद .... राजधानी ले गया।
4. तारीख–ए–फीरोजशाही .... के लेखक हैं।
5. सल्तनत कालीन चार इमारतों के नाम लिखिए।

गैरिसन शहर

तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में दिल्ली सुल्तानों का शासन दिल्ली के आस पास के क्षेत्रों तक फैला था। जिन शहरों का किलेबंद बसाव जहाँ सैनिक रहते थे उन्हें गैरिसन शहर कहा जाता था। दिल्ली से सुदूर बंगाल और सिंध प्रदेशों पर नियंत्रण करना कठिन था। खराब मौसम में सम्पर्क मार्ग का खत्म हो जाना और वहाँ के सूबेदारों विद्रोह या बगावत चुनौती देता रहता था।

भीतरी प्रदेश उन शहरों को कहा जाता था जो बंदरगाहों के आस पास के इलाके होते थे।

सल्तनत कालीन प्रशासन व्यवस्था

सुल्तान

सल्तनत का सुल्तान एक शक्तिशाली सर्वोच्च पद पर था। दिल्ली सुल्तान जनहित के लिए नागरिक और राजनीतिक नियम बनाते थे। सिक्कों पर उसका नाम लिखा जाता था। खुतबा एक औपचारिक धर्मोपदेश है जो शुक्रवार के दिन पढ़ा जाता है। इसमें सुल्तान का नाम समुदाय के प्रमुख में लिया जाता था।

विजारत (वित्त विभाग)

वित्त विभाग का प्रमुख वजीर था। इसका कार्य राजस्व वसूल करना, हिसाब–किताब रखना, वेतन बाँटना था।

दीवान–ए–अर्ज–(सैन्य विभाग)

सैन्य विभाग का प्रमुख आरिज–ए–मुमलिक था। वह सैनिक और सैन्य संबंधी कार्यों के लिए उत्तरदायी था। वह इक्ता धारकों के सैनिकों का निरीक्षण करता था।

दीवान–ए–इंशा

उस विभाग पर राज्य के पत्राचार का उत्तरदायित्व था। इस विभाग का प्रमुख दबीर–ए–मुमालिक था।

दीवान–ए–रिसालत – (न्याय विभाग)

इस विभाग का कार्य धार्मिक कार्य कलापों पर दृष्टि रखना और क़ाजियों की नियुक्ति करना। इस विभाग का प्रमुख सद्र–उस–सुदूर कहलाता था।

बरीद–ए–मुमालिक

राज्य के संवाद या समाचार विभाग का प्रमुख था।

महत्वपूर्ण तथ्य

- सल्तनत का सर्वोच्च पद सुल्तान का था।
- दीवान–ए–अर्ज सैन्य विभाग था, जिसका प्रमुख आरिज–ए–मुमालिक था।
- दीवान–ए–इंशा पत्राचार विभाग था। उस का प्रमुख दबीर–ए–मुमालिक
- वित्त विभाग का प्रमुख वजीर था।
- न्याय विभाग का प्रमुख सद्र–उस–सुदूर कहलाता था।
- बरीद–ए–मुमालिक राज्य के समाचार विभाग का प्रमुख था।

2.4 पाठगत प्रश्न

1. **सुमेलित कीजिए–**

क. दीवान–ए–अर्ज	न्याय विभाग का प्रमुख
ख. बरीद–ए–मुमालिक	सैन्य विभाग का प्रमुख
ग. सीवान–ए–अमीरकोही	समाचार विभाग का प्रमुख
घ. सद्र–उस–सुदूर	कृषि विभाग

2. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –**
   - सल्तनतकाल में वित्त विभाग का प्रमुख .... था।
   - गैरिसन शहर में .... रहते थे।
   - सल्तनत का सर्वोच्च पद .... था।
   - दीवान–ए–इंशा विभाग का .... प्रमुख था।
   - सैन्य विभाग .... के नाम से जाना जाता था।

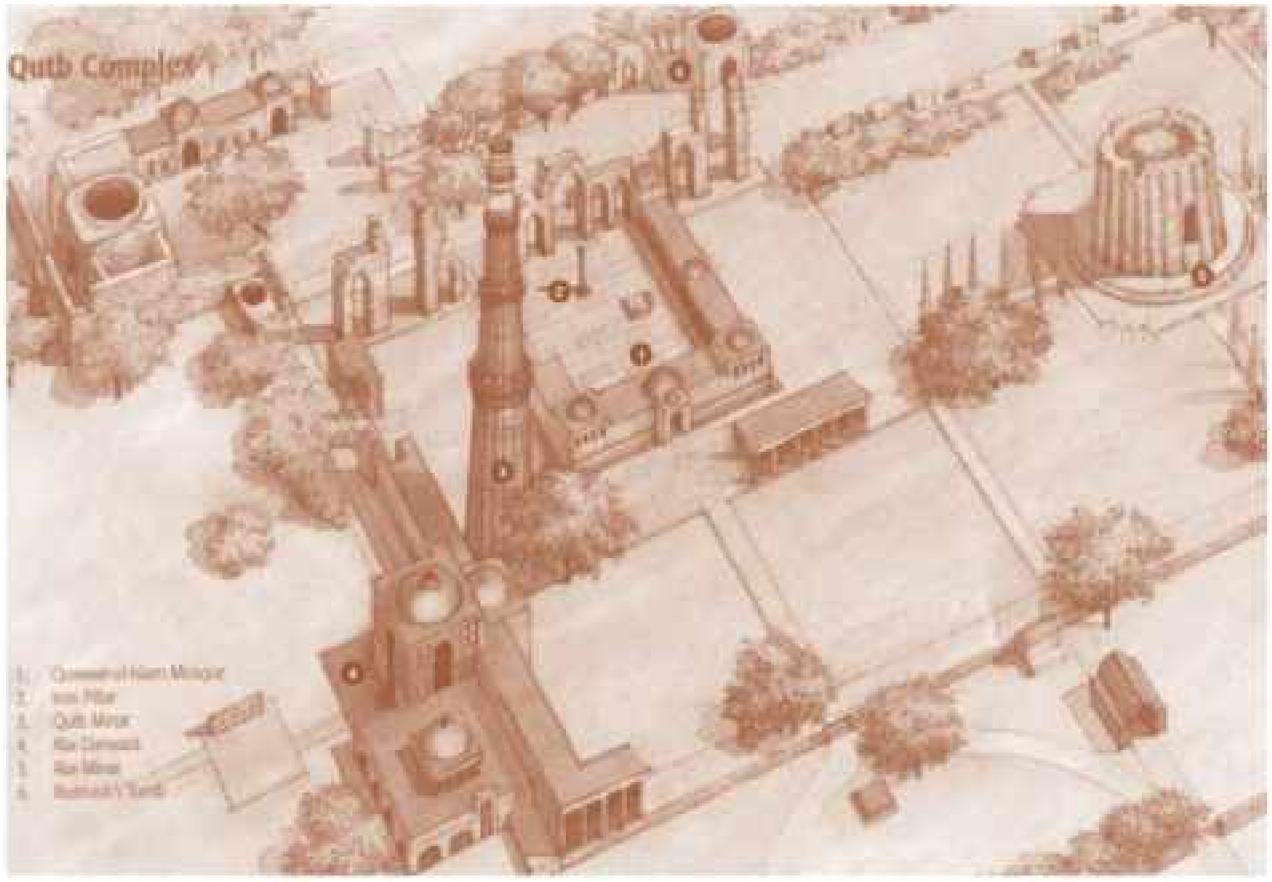

स्रोत: एन.सी.ई.आर.टी. : हमारे अतीत

बारहवीं सदी के आखिरी दशक में बनी कुव्वत अल–इस्लाम मस्जिद तथा उसकी मीनारें। यह जामा मस्जिद दिल्ली के सुलतानों द्वारा बनाए गए सबसे पहले शहर में स्थित है। इतिहास में इस शहर को देहली–ए–कुह्ना (पुराना शहर) कहा गया है। इस मस्जिद का इल्तुतमिश और अलाउद्दीन ख़लजी ने और विस्तार किया। मीनार तीन सुलतानों – कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश और फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ द्वारा बनवाई गई थी।

मस्जिद

यह अरबी का शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ है– ऐसा स्थान जहाँ मुसलमान अल्लाह की आराधना में सज़दा (घुटने और माथा टेककर) करते हैं। जामा मस्जिद (या मस्जिद–ए–जामी) वह मस्जिद होती है, जहाँ अनेक मुसलमान एकत्र होकर साथ–साथ नमाज पढ़ते हैं। नमाज की रस्म के लिए सारे नमाज़ियों में से सबसे अधिक सम्माननीय और विद्वान पुरुष को इमाम (नेता) के रूप में चुना जाता है। इमाम शुक्रवार की नमाज़ के दौरान धर्मोपदेश (खुतबा) भी देता है।

नमाज़ के दौरान मुसलमान मक्का की तरफ़ मुँह करके खड़े होते हैं। भारत में मक्का पश्चिम की ओर पड़ता है। मक्का की ओर की दिशा को 'किबला' कहा जाता है।

बेगमपुरी मसजिद। यह मुहम्मद तुग़लक़ के राज्यकाल में, दिल्ली में उसकी नयी राजधानी जहाँपनाह (विश्व की शरणस्थली) की मुख्य मस्जिद के तौर पर बनाई गई थी।

सल्तनत कालीन प्रमुख इमारतें–

सल्तनत काल में भारतीय और अरबी स्थापत्य पर आधारित इमारतों का निर्माण हुआ। आज भी इन इमारतों को दिल्ली और अजमेर में देखा जा सकता है। जो सल्तनत की सम्पन्नता और स्थायित्व की प्रतीक है।

कुव्वत उल इस्लाम मस्जिद भारत में तुर्कों द्वारा बनवायी गई प्रथम मस्जिद है। इस मस्जिद का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने करवाया, यह आज कुतुबमीनार के परिसर (अहाता) में स्थित है।

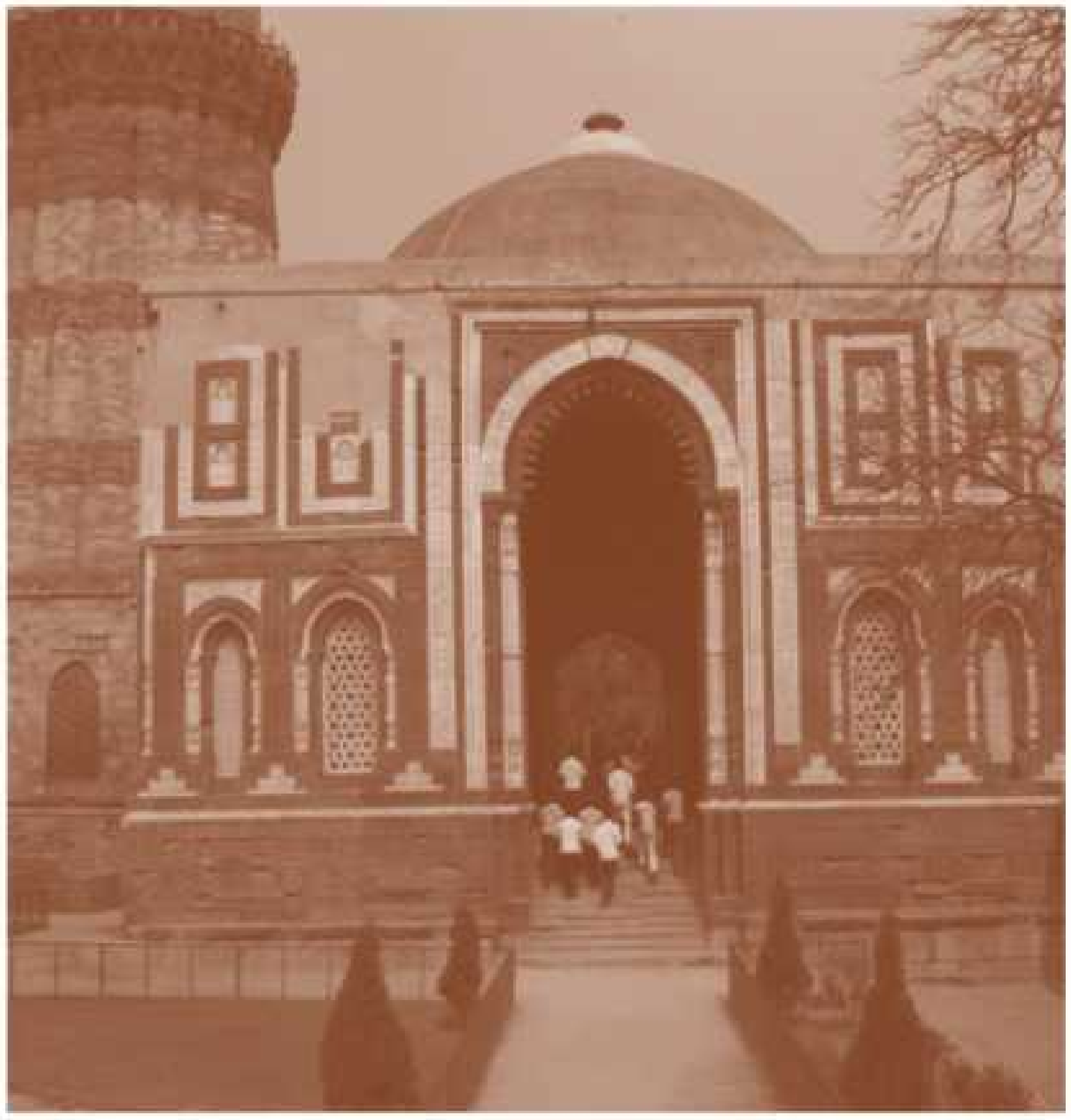

अलाई दरवाज़ा – अलाई दरवाज़ा अल्लाउद्दीन खिलजी द्वारा बनवाया गया जो दिल्ली के कुतुब परिसर में स्थित है।

इल्तुतमिश का मकबरा – इल्तुतमिश का मकबरा दिल्ली के कुतुब परिसर में स्थित है, यह इमारत इल्तुतमिश द्वारा बनवाया गया।

फिरोज़ शाह तुग़लक़ का मकबरा – फिरोजशाह तुगलक का मकबरा फिरोजशाह द्वारा बनवाया गया, यह दिल्ली के हौज़ खास में स्थित है।

अभ्यास

1. **निम्नलिखित को समेलित कीजिए–**

क.	पृथ्वीराज चौहान	1296–1316
ख.	कुतुवुद्दीन ऐबक	1489–1517
ग.	आलाउद्दीन खिलजी	1206–1210
घ.	फिरोजशाह तुगलक	1175–1192
ङ.	सिकन्दर लोदी	1351–1388

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

1. राजपूत वंश के शासकों के ना लिखिए।
2. कुतुबमीनार का मॉडल तैयार कीजिए।
3. मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा बनाई गई योजनाएँ असफल क्यों हुई? कारण बताइए।
4. तुर्क सरदार रज़िया के महिला होने के कारण उसे शासिका के रू॰ में देखना नहीं चाहते थे?
5. क्या आज के समय में महिलाओ के प्रति समाज का दृष्टिकोण बदला है? यदि हाँ तो कैसे? यदि नहीं तो क्यों नहीं?

क्रियाकलाप–

दिल्ली में प्रमुख एतिहासिक इमारतों की एक सूची तैयार कीजिए और पता कीजिए कि ये इमारतें किसने बनवाई?

3 मुगल साम्राज्य

मुगल साम्राज्य बाबर (1526 ई.) के आक्रमण से प्रारम्भ होकर अंग्रजों के शासन काल (1857 ई.) तक चलता है। भारत के इतिहास में इनकी भूमिका काफी दूरगामी है। आइए जाने कैसे –

अधिगम उद्देश्यः

1. मुगल साम्राज्य से अवगत होगे।
2. मुगलवंश के महान शासकों के बारे में जान सकेंगे।
3. मुगलों की उत्तराधिकारी व्यवस्था को समझ सकेंगे।
4. मुगल सैन्य व्यवस्था, जात–सवार, तुगलुमां पद्धति को जान पाएगें।
5. मुगलकालीन प्रशासन की वेशेषता जान पाएँगे।
6. अकबर के द्वारा मुगल साम्राज्य के स्थाई विस्तार के पीछे की नीति को समझ पाएगें।
7. मुगल काल के राजस्व व्यवस्था की समझ छात्रों में विकसित होगी।

मुगल साम्राज्य

पन्द्रह अगस्त को भारत के प्रधानमंत्री दिल्ली के जिस लाल किला की प्राचीर से राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं उसका निर्माण मुगल वंश के शासक ने करवाया था। मुगलवंश की स्थापना उत्तर मध्यकाल में बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्ध (1526) में विजय के साथ की। जिसको एक विशाल साम्राज्य का स्वरूप उसके उत्तराधिकारियों ने दिया। भारत जैसे विविधिता वाले देश में इतना विशाल साम्राज्य मध्यकाल में स्थापित करना ही अपने आप में इस वंश की महानता को दर्शाता है।

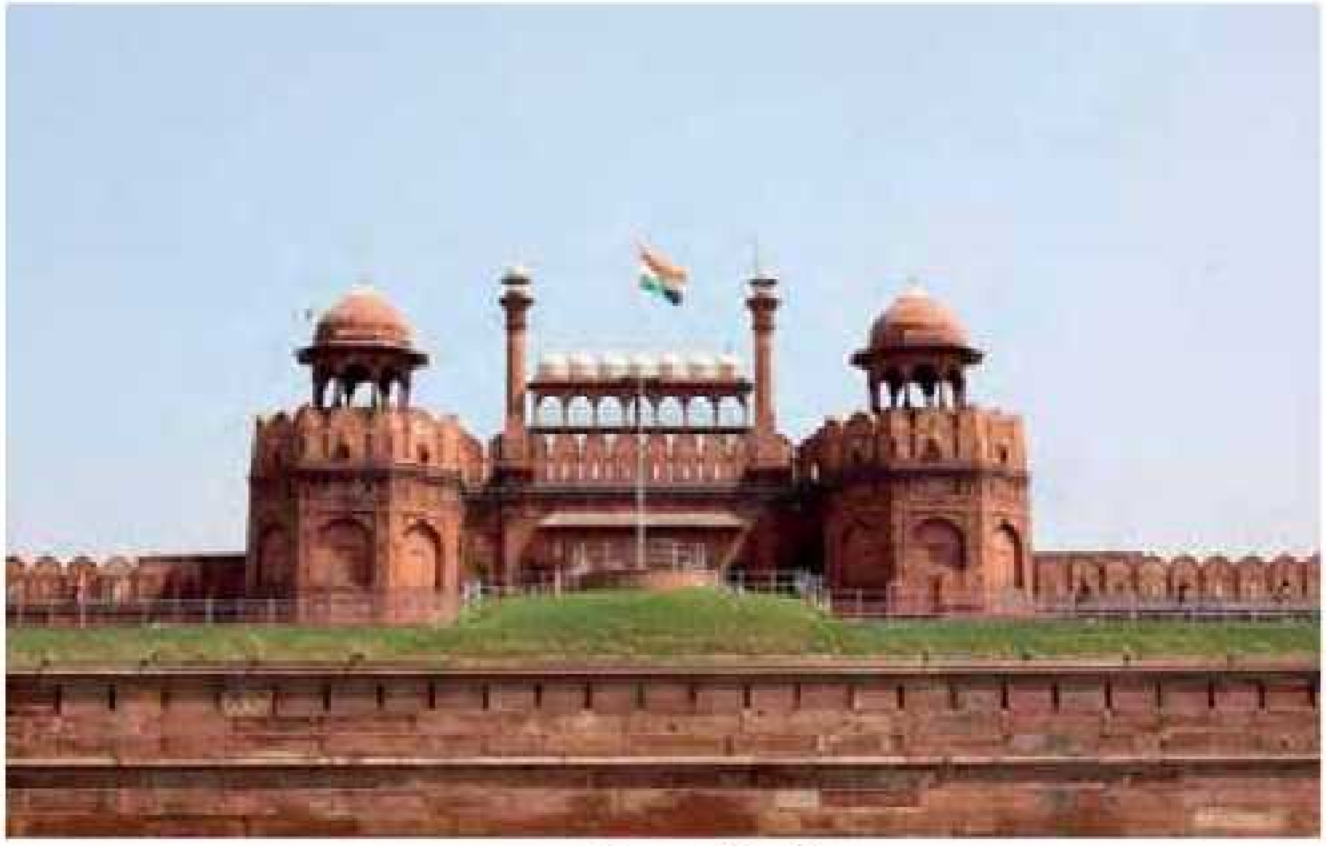

लाल किला (दिल्ली)

मुगलः

मुगल चंगेज खाँ एवं तैमूर के वंशज थे। भारत में मुगल वंश के संस्थापक बाबर ने पद 'पादशाह' की स्थापना की, जिसके तहत शासक को बादशाह कहा जाता था। इस वंश का भारत में 1526 ई. से 1857 ई. तक शासन रहा। बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब जैसे महान शासक इस वंश में हुए। इन सभी ने भारत के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास में अहम भूमिका निभाई। सही मायने में भारत में हिन्दू –मुस्लिम सांझी संस्कृति का विकास इसी वंश के शासन के दौरान हुआ।

बाबर (1526–30 ई.)

बाबर का जन्म 24 फरवरी 1483 ई. में हुआ। इसके पिता उमर शेख मिर्जा, फरगना (ट्रांस ऑक्सियाना) नामक एक छोटे से राज्य के शासक थे। अल्पायु में पिता की मृत्यु के पश्चात् बाबर फरगना का शासक बना। इसने भारत पर 5 बार आक्रमण किया। भारत के विरूद्ध प्रथम सैन्य अभियान 1519 ई. में 'युसूफजाई' जाति के विरूद्ध था। बाबर को दिल्ली पर आक्रमण के लिए पंजाब के शासक दौलत खाँ लोदी एवं मेवाड़ के शासक राणा सांगा ने निमंत्रण दिया। 1526 ई. में दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी के साथ पानीपत के मैदान में बाबर ने निर्णायक युद्ध किया। इसमें बाबर विजयी रहा। बाबर ने इस युद्ध में 'तुगलुमा पद्धति' एवं 'बारूद' का प्रयोग किया।

बाबर ने भारत पर 1526–30 ई. तक शासन किया। इस दौरान उसका अधिकांश समय युद्ध भूमि में ही व्यतीत हुआ। बाबर ने राणा सांगा के साथ हुए युद्ध को 'जिहाद' की संज्ञा दी एवं विजय के पश्चात् 'गाजी' की उपाधि धारण की। बाबर अरबी और फारसी का ज्ञान रखता था। तुर्की उसकी मातृभाषा थी। इसने अपनी आत्मकथा लिखी जिसे 'तुजुक–ए–बाबरी' या 'बाबर नामा' के नाम से जाना जाता है। बाबर के मृत्यु के समय तक दिल्ली एवं आगरा के साथ–साथ सम्पूर्ण उत्तर भारत पर मुगलों का नियंत्रण स्थापित हो गया था।

मुगल सैन्य युद्ध संरचना

- ★ तुगलुमा पद्धति– मुगल सैन्य युद्ध संरचना को कहते है।
- ★ बाबर ने भारत में पहली बार तोप का प्रयोग किया था।

बाबर द्वारा भारत में लड़े गए प्रमुख युद्ध–

1. 1526 ई. में पानीपत– इब्राहिम लोदी
2. 1527 ई. में खानवा– राणा सांगा
3. 1528 ई. में चंदेरी– मेदिनी राय

हुमायूँ (1530ई. से 1556 ई.)

बाबर के तीन पुत्रों में सबसे बड़ा हुमायूँ था। बाबर की मृत्यु के पश्चात् 1530 में 23 वर्ष की अवस्था में हुमायूँ मुगल बादशाह बना। गद्दी पर बैठने की साथ कई तरह के समस्या उसके सामने उठ खड़ा हुआ। इन समस्याओं में मुगल शासन व्यवस्था को स्थापित करना, अफगान समस्या से निपटना, गुजरात के शासक बहादुरशाह पर नियंत्रण एवं मुगल साम्राज्य के उत्तराधिकारियों के बीच साम्राज्य का विभाजन प्रमुख था।

गद्दी पर बैठने के साथ हुमायूँ ने सर्वप्रथम तैमूरी विरासत की परम्परा के अनुरूप अपने साम्राज्य को भाईयों में विभाजित कर दिया। 'काबुल और कंधार' कामरान को दे दिया। कामरान ने लाहौर और मुल्तान पर भी अपना अधिकार कर लिया। हुमायूँ पश्चिमी सीमा की सुरक्षा एवं गृह युद्ध से बचने के लिए कामरान की इन हरकतों को देखता रह गया।

हुमायूँ के लिए सर्वाधिक समस्या गुजरात के सुल्तान बहादुरशाह एवं अफगान सरदार शेरशाह से था। बहादुरशाह ने जब चित्तौड़ पर आक्रमण किया तो चित्तौड़ की रानी कर्णावती ने राखी भेजकर हुमायूँ से मदद माँगी। मुगलों के भय से बहादुरशाह चित्तौड़ से अपना घेरा उठा कर गुजरात वापस चला गया।

युद्धरत मुगल सैनिक

हुमायूँ के द्वारा लड़े गये प्रमुख युद्ध

पूरब में अफगानों की शक्ति शेर खाँ के नेतृत्व में बढ़ती जा रही थी। इससे निपटना ज्यादा जरूरी था। पर अपनी अस्थिर नीति के वजह से 15 जून 1539 ई. को चौसा के युद्ध में एवं 17 मई 1540 ई. को बिलग्राम या कनौज के युद्ध में हुमायूँ की शेर खाँ के हाथों हार हुई। हुमायूँ शेर खाँ से हार कर भारत से भाग गया। 15 वर्ष तक हुमायूँ बिना साम्राज्य का मुगल बादशाह रहा और दर दर भटकता रहा। 1555 ई. में उसने पुनः भारत मे मुगल साम्राज्य कायम किया। परंतु दुर्भाग्य वश 1556 ई. में दिल्ली में स्थित अपने पुस्तकालय शेरमंडल (दीनपनाह) के प्रथम मंजिल से गिर गया और उसकी मृत्यु हो गयी।

3.1 पाठगत प्रश्न

1. बाबर के पिता कहाँ के शासक थे?
2. बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए किस ने निमंत्रण दिया?
3. हुमायूँ ने 'कामरान' को कौन–कौन सा क्षेत्र दिया?
4. हुमायूँ की मृत्यु किस वजह से हुई?

अकबर (1556ई. से 1605 ई.)

मुगल साम्राज्य का सबसे महान् शासक अकबर था। जिसका जन्म 15 अक्टूबर 1542 ई. को अमरकोट के शासक राणा वीरसाल के महल में हमीदा बानू बेगम के गर्भ से हुआ था। 14 वर्ष के अल्पायु में पंजाब के कालानौर में अकबर मुगल साम्राज्य का बादशाह 1556 ई. में बना। 1556 ई. से 1560 ई. तक अकबर का संरक्षक बैरम खाँ रहा। गद्दी पर बैठते ही अकबर को 1556 ई. (5 नवम्बर) में पानीपत के मैदान में हेमू के साथ युद्ध करना पड़ा। इस युद्ध में हेमू अफगान का नेतृत्व कर रहा था और दिल्ली पर कब्जा कर लिया था। पुनः एकबार पानीपत के मैदान में मुगलों की जीत हुई। इस युद्ध को पानीपत की दूसरी लड़ाई के नाम से जाना जाता है। सही मायने में मुगल वंश का आधिपत्य भारत पर इसी युद्ध में विजय प्राप्ति के साथ हुआ।

मुगल हाथी सेना

अकबर के शासन के प्रारम्भिक चार वर्ष में बैरम खाँ सूत्रधार बना रहा। इस दौरान मुगल साम्राज्य काबुल से जौनपुर तक एवं पश्चिम में अजमेर तक फैल गया। अकबर ने मालवा, गढ़कटंगा (उत्तरी मध्यप्रदेश), राजस्थान के अधिकांश भाग, बंगाल, बिहार एवं गुजरात के अधिकांश भाग को अपने साम्राज्य में मिला लिया। अकबर ने दक्षिण भारत की तरफ भी अपना सैन्य अभियान शुरू किया पर वह दक्षिण में ज्यादा समय नहीं दे पाया।

अकबर को अपने शासन के अंतिम दिनों में अपने एकमात्र जीवित पुत्र सलीम (जहाँगीर) के विद्रोह का सामना करना पड़ा। 1605 ई. में अकबर की मृत्यु हो गई।

3.2 पाठगत प्रश्न

1. अकबर का जन्म 1542 ई. में .... के राजा के महल में हुआ था।
2. अकबर का संरक्षक .... था।

जहाँगीर एवं शाहजहाँ (1605 ई.–1658 ई.)

17वीं सदी के पूर्वाह्न में भारत में दो महान् मुगल बादशाह हुए–जहाँगीर एवं शाहजहाँ। 1605 ई. में अकबर की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र सलीम, जहाँगीर (1605 ई.–1627 ई.) के नाम से मुगल बादशाह बना। जहाँगीर ने अकबर के सैन्य अभियान को आगे बढ़ाया। मेवाड़ के सिसोदिया शासक अमर सिंह ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली। अहोमों और अहमदनगर के विरूद्ध सैन्य अभियान भेजा। इन सैन्य अभियान में ज्यादा सफलता हाथ नहीं आई। जहाँगीर के शासन के अंतिम वर्षों में शाहजादा खुर्रम (शाहजहाँ) के विद्रोह का सामना करना पड़ा। जहाँगीर की बेगम नूरजहाँ द्वारा सत्ता पर अत्यधिक नियंत्रण की वजह से खुर्रम ने विद्रोह किया था। मुगल शासकों में सबसे अधिक न्याय व्यवस्था पर जहाँगीर ने ध्यान दिया। इसलिए अपने महल के सामने एक घंटा लगवाया जिसे बजा कर न्याय की फरियाद की जा सकती थी। जहाँगीर 'चित्रकला' एवं 'बाग' लगाने का बहुत प्रेमी था।

1627 ई. में जहाँगीर की मृत्यु के पश्चात् 'खुर्रम', शाहजहाँ (1627–1658 ई.) के नाम से मुगल बादशाह बना। शाहजहाँ ने दक्कन में मुगल सैन्य अभियान जारी रखा। अफगान सूबेदार खान जहाँ लोदी के विद्रोह को दबाया। अहमदनगर के विरूद्ध अभियान शुरू किया जिसमें बुंदेलों की हार हुई और ओरछा पर कब्जा कर लिया। उत्तर–पश्चिम में बल्ख पर अधिकार करने के लिए उज़्बेगों के खिलाफ सैन्य अभियान भेजा, जिसमें उसे असफलता प्राप्त हुई। फलस्वरूप कांधार मुगलों के हाथों से निकल कर सफाविदों के हाथ चला गया। 1632 ई. में अहमदनगर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।

शाहजहाँ के काल को मध्यकाल का स्वर्णयुग माना जाता है। इस काल में भारत में 'स्थापत्यकला एवं सांस्कृतिक' विकास काफी हुआ। बावजूद इसके शाहजहाँ के अंतिम वर्षों में काफी उथल–पुथल रही। 1657–58 ई. में शाहजहाँ के पुत्रों के बीच उत्तराधिकार को लेकर युद्ध प्रारम्भ हो गया। इसमें शाहजहाँ के तीसरे पुत्र औरंगजेब को सफलता मिली। औरंगजेब ने अपने तीनों भाइयों को मार डाला और शाहजहाँ को आगरा के किले में कैद कर दिया। इस युद्ध ने सिद्ध कर दिया कि मुगल उत्तराधिकारी तलवार के बल से निश्चित होता है।

3.2 पाठगत प्रश्न

1. बादशाह बनने से पूर्व जहाँगीर का क्या नाम था?
2. किस बादशाह के शासनकाल को मध्यकालीन भारत का स्वर्णयुग कहा जाता है?
3. शाहजहाँ को आगरा के लाल किले में किसने और क्यों बंदी बनाया?

औरंगजेब (1658ई.–1707ई.)

औरंगजेब का जन्म 24 अक्टूबर 1618 ई. को दोहद (गुजरात) नामक स्थान पर हुआ। इसने अपना दोबार राज्याभिषेक किया। औरंगजेब सुन्नी मत के करीब था और इसे 'जिंदा पीर' भी कहा जाता था। शाहजहाँ के शासनकाल में कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारी का निर्वहन कर चुका था जिसमें उत्तर–पश्चिम एवं दक्षिण का अभियान प्रमुख था। औरंगजेब ने उत्तर–पूर्व में अहोमों पर विजय प्राप्त की। यूसफजाई एवं सिखों के खिलाफ अभियान चलाया जिसमें पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हो पाई। मारवाड़ के राठौड़ ने भी विद्रोह कर दिया।

औरंगजेब ने शासन का अधिकांश हिस्सा दक्षिण भारत में व्यतीत किया। जिस क्रम में मराठा सरदार शिवाजी से युद्ध अहम था। प्रारंभ में तो उसे सफलता मिली पर कालक्रम में मराठा का प्रभाव बढ़ने लगा और शिवाजी ने अपने आप को स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया। दक्षिण के तरफ ध्यान देने के पीछे औरंगजेब का मुख्य कारण शाहजादा अकबर द्वारा विद्रोह एवं उसे मराठा और दक्कन के सुल्तानों से मिला सहयोग था।

अकबर के विद्रोह के पश्चात् औरंगजेब ने दक्कन के साम्राज्य को मुगल साम्राज्य में मिलाने की योजना बनाई। 1685 ई. में बीजापुर और 1687 ई. में गोलकुंडा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया। पर मराठों पर विजय प्राप्त नहीं कर सका। मराठों का छापामार युद्ध जारी रहा। दक्षिण के युद्ध की कमान औरंगजेब ने अपने हाथों में ले रखी था। दक्षिण में अपने साम्राज्य विस्तार को अधूरा छोड़कर 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु हो गई।

औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् पुनः उत्तराधिकार की लड़ाई प्रारंभ हो गई। पर औरंगजेब के पश्चात् मुगलवंश में कोई सुयोग्य शासक नहीं हुआ जो मुगल साम्राज्य को एकीकृत कर के रख सके। बावजूद इसके 1857 ई. तक मुगल वंश के शासक प्रतीक के रूप में ही शासन करता रहे।

3.3 पाठगत प्रश्न

1. औरंगजेब ने किस–किस प्रांत को मुगल साम्राज्य में मिलाया।
2. औरंगजेब ने दक्षिण में युद्ध की कमान किस को सौंपा।

मुगल प्रशासन

साम्राज्य विस्तार के साथ मुगलों ने विभिन्न सामाजिक समूहों के सदस्यों को प्रशासन में सम्मिलित किया। प्रारम्भ में जहाँ मुगल प्रशासन में ज्यादातर सरदार तुर्की (तुरानी) थे वहीं कालक्रम में ईरानी भारतीय मुसलमान, अफगान, राजपूत, मराठा इत्यादि को सम्मिलित किया। मुगल साम्राज्य में जो प्रशासनिक पद पर होता था उसे मनसबदार कहा जाता था। अकबर ने मनसबदारी व्यवस्था द्वारा ही एक विशाल सैन्य व्यवस्था स्थापित की। मनसबदार ऐसे व्यक्तियों को कहा जाता था, जिसे कोई सरकारी हैसियत/पद मिलता था। जिसके पास एक दर्जा या मनसब था जो एक श्रेणी व्यवस्था थी। इसके जरिए पद, वेतन एवं सैन्य उत्तरदायित्व मुगल के समय में निर्धारित किया जाता था।

मनसबदारी व्यवस्था दशमलव प्रणाली पर आधारित थी। सबसे निचला मनसब 10 (दस) का और सबसे ऊपर 5000 (पाँच हजार) का दिया जाता था। किसी–किसी को 5000 से ऊपर का भी दर्जा मिल जाता था। ये दर्जा सामान्यतः दो भागों में विभक्त था 'जात' और 'सवार'। जात व्यक्तिगत दर्जा एवं वेतन को निर्धारित करता था। सवार से यह स्पष्ट होता था कि कितने घुड़सवार रखने होंगे। युद्ध के समय अपने सवार के अनुरूप युद्ध भूमि में घुड़सवार उपलब्ध कराने होते थे। इसके लिए पहले उनके सवारों का निरीक्षण होता था तथा घोड़ों को दागा जाता था एवं सैनिकों का पंजीकरण होता था।

मनसबदार को वेतन के रूप में भूमि का टुकड़ा दिया जाता था जिसे 'जागीर' कहा जाता था। इस जागीर से केवल राजस्व इक्ट्ठा कर सकता था। प्रशासन इनके हाथों में नहीं होता था। घोड़ो को दागने और सैनिक के पंजीकरण की प्रक्रिया–दाग प्रथा और हुलिया प्रथा कहलाती थी।

अकबर के समय जागीरों का सर्वाधिक आंकलन किया गया जो मनसबदार के वेतन के लगभग बराबर होता था पर औरंगजेब के शासनकाल तक स्थिति बदल गई। अब राजस्व मनसबदार के वेतन से बहुत कम होता था। इस समय तक मनसबदार भी बढ़ गए जिन्हें जागीर के लिए इंतजार करना पड़ता था। इस वजह से कई जागीरदार जागीर से ज्यादा से ज्यादा राजस्व वसूलने का प्रयत्न करते थे। जिससे किसानों को मुसीबतों का सामना करना पड़ता था। औरंगजेब इस अव्यवस्था पर नियंत्रण नहीं कर पाया। इस कारण औरंगजेब के समय कई किसान विद्रोह हुए।

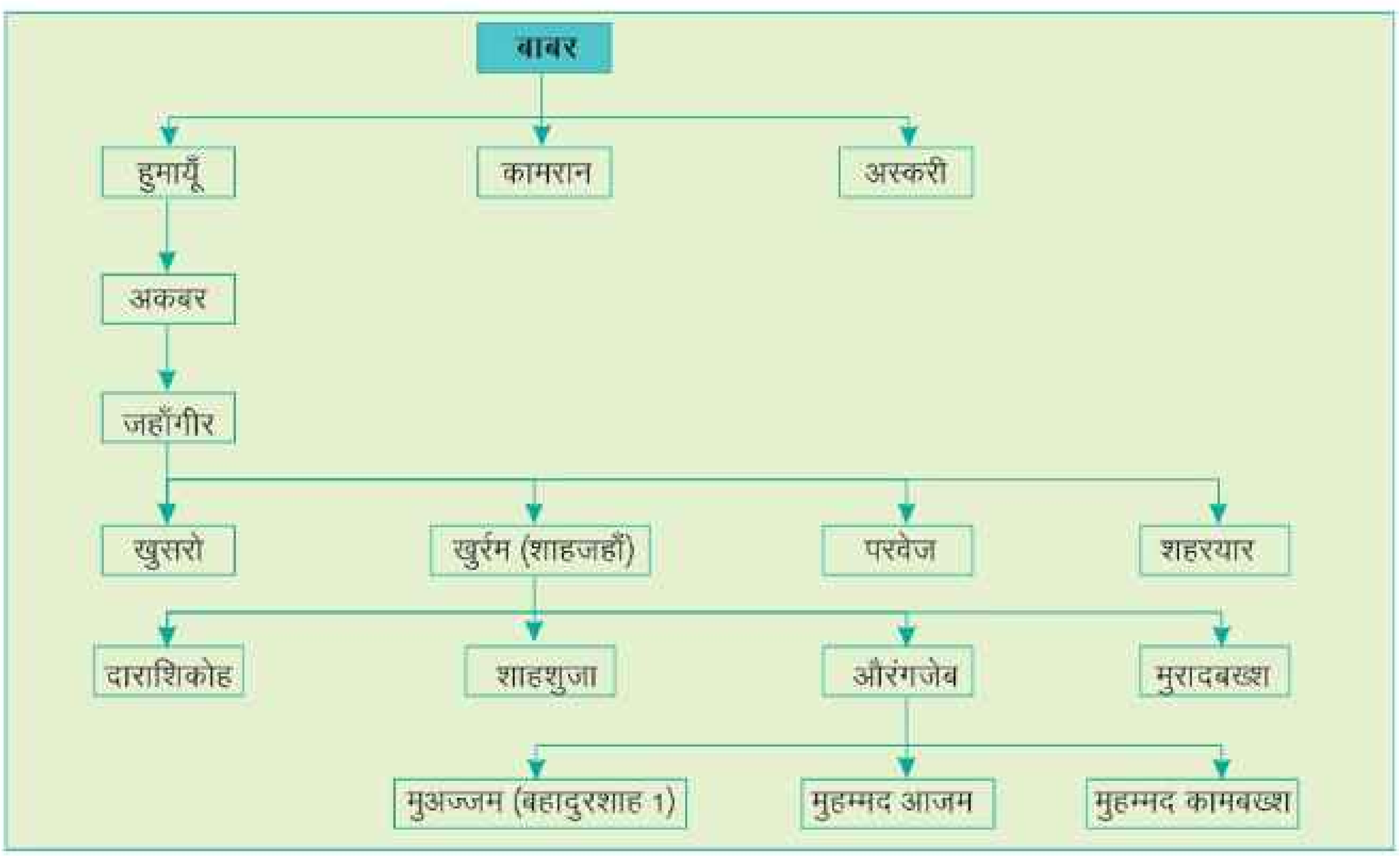

राजस्व : जब्त और ज़मींदार

मुगल साम्राज्य में राजस्व का प्रमुख साधन भू–राजस्व था जो किसानों द्वारा फसल के पैदावार से लिया जाता था। यह सामान्यतः राजकोष में मध्यस्थों के माध्यम से पहुँचता था। ये मुखिया या सरदार होते थे जिसे इस समय जमींदार कहा जाता था।

अकबर के समय राजा टोडरमल (राजस्वमंत्री) ने 'दहसाला' पद्धति प्रारंभ की। राजस्व नकद अथवा कृषि उपज अनाज के रूप में निश्चित की गई। प्रत्येक सूबे (प्रांत) को राजस्व मंडलों में बाँटा गया तथा फसल के हिसाब से राजस्व दर की अलग सूची बनाई गयी। राजस्व प्राप्त करने की इस व्यवस्था को 'जब्त' कहा जाता था। ये मुगल प्रशासनिक अधिकारी द्वारा भूमि का निरीक्षण वाले स्थानों पर प्रचलित थी। पर गुजरात और बंगाल जैसे प्रांतों में संभव नहीं हो पाई।

कहीं–कहीं ज़मींदार इतने शक्तिशाली थे कि वे किसानों के साथ मिल कर इस व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह भी कर देते थे। 17वीं सदी में ऐसे किसान विद्रोह मुगल साम्राज्य को चुनौती देने लगे।

राजपूत नीतिः

राजपूत के साथ संबंध में अकबर ने दूर दृष्टि का परिचय दिया। जिसकी शुरूआत हुमायूँ के समय ही प्रारंभ हो गया था। राजपूत एक शक्तिशाली योद्धा वर्ग था जिसको साथ लिए बिना स्थाई मुगल साम्राज्य की परिकल्पना नहीं की जा सकती थी। इस लिए अकबर ने राजपूतों को पद एवं सम्मान प्रदान किया और उसके साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किये। बदले में राजपूतों ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर अपना शासन चलाया।

अकबर अपने हिन्दू बड़ी पत्नियों को पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की एवं उसके संबंधियों को सम्मानजनक स्थान दिया। तभी तो अकबर ने साथ राजा मानसिंह को सर्वाधिक उच्च मनसबदारी प्रदान की थी। अकबर राजपूत के साथ संबंध में कभी वैवाहिक संबंध पर जोर नहीं दिया। अकबर ने जजिया और तीर्थयात्रा कर समाप्त कर दिया। अब युद्ध बंदियों को जबर्दस्ती मुसलमान नहीं बनाया जाता था।

अकबर की राजपूत नीति मुगल साम्राज्य और राजपूतों दोनों के लिए लाभदायक साबित हुई। राजपूतों के साथ जो संबंध अकबर ने प्रारंभ किए उसे जहाँगीर एवं शाहजहाँ ने भी जारी रखा पर औरंगजेब के समय आकर इसमें कुछ कड़वाहट आ गयी।

3.4 पाठगत प्रश्न

1. अकबर का राजस्व मंत्री.. था।
2. भारत में मनसबदारी व्यवस्था...............................शुरु की।
3. अकबर ने इबादतखाना की स्थापना.. स्थान पर की थी।

अकबरः धार्मिक नीति

1570 ई. में अकबर ने फतेहपुर सीकरी में उलेमा, ब्राह्मणों, जेसुइट पादरियों (रोमन कैथोलिक) और जरथुष्ट धर्म के अनुयायियों के साथ धर्म के मामलों पर चर्चा प्रारंभ की। ये चर्चा 'इबादतखाना' में की गई। अकबर विभिन्न धर्मों और रीति रिवाजों में रुचि रखता था। फलस्वरूप इस धार्मिक परिचर्चा से अकबर की समझ बनी कि जो विद्वान धार्मिक रीति और मतांधता पर बल देते हैं, वे सामान्यतः कट्टर होते हैं। इस अनुभव ने अकबर को 'सुलह–ए–कुल' या सर्वत्र शांति के विचार की ओर ले गया। सहिष्णुता की यह धारणा विभिन्न धर्मों के अनुयायियों में अंतर नहीं करती थी, बल्कि इसका केन्द्र बिन्दु नीतिशास्त्र की एक व्यवस्था थी जो सर्वत्र लागू की जा सकती थी और जिसमें केवल सच्चाई, न्याय और शांति पर बल था। अकबर के इस नीति गत सिद्धांत को जहाँगीर और शाहजहाँ ने भी अपनाया।

फतेहपुर सीकरी के इबादतखाना में अकबर विभिन्न धर्मों के विद्वानों के साथ चर्चा करते हुए

अभ्यास

1. सही विकल्प को चुनिए–

1. सुलह–ए–कुल के विचार किस मुगल बादशाह ने चलाया?
   (a) बाबर (b) हुमायूँ
   (c) अकबर (d) जहाँगीर
2. 'जागीर' मुगल समय में किसे कहा जाता था?
   (a) भूमि का एक टुकड़ा को (b) युद्ध भूमि को
   (c) धार्मिक स्थल को (d) दहेज में मिले समान को
3. 'दहसाला' व्यवस्था सर्वप्रथम किस मुगल बादशाह के समय में प्रारंभ किया गया?
   (a) हुमायूँ (c) अकबर
   (c) शाहजहाँ (d) औरंगजेब
4. पानीपत के मैदान में अकबर ने किस से युद्ध किया?
   (a) शेरशाह (b) हेमू
   (c) इब्राहिम लोदी (d) राणा सांगा

2. खाली जगह को भरिए–

1. दिल्ली का लालकिला .... ने बनवाया था।
2. मुगल .... एवं .... के वंशज थे।
3. मुगल वंश का शासन भारत में .... से .... तक रहा।
4. गाजी की उपाधि .... ने धारण थी।

3. मिलान कीजिए–

1.	पानीपत	1527 ई.
2.	बिलग्राम	1528 ई.
3.	चौसा	1526 ई.
4.	खानवा	1540 ई.
5.	चंदेरी	1539 ई.

4. लघुउत्तरीय प्रश्न–

1. मुगल कौन थे?
2. मुगल कालीन भू–राजस्व व्यवस्था का वर्णन करें।
3. अकबर द्वारा प्रारम्भ किए गए धार्मिक परिचर्चा से हमें क्या जानकारी मिलती है?

5. परियोजना कार्य–

1. दिल्ली में मुगलवंश के समय बने इमारतों की सूची बनाएँ और चित्रों का संकलन करें।
2. दिल्ली में स्थित एतिहासिक इमारतों में से मुगलकालीन इमारत का भ्रमण करें एवं किस इमारत को किस मुगल बादशाह ने बनाया, पता करें।

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक / शिक्षिका विगत पाठों में विद्यार्थी की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1	______			
2	______			
3	______			
4	______			
5	______			
6	______			
7	______			
8	______			
9	______			
10	______			

4 ईश्वरीय भक्ति

प्रस्तावना

पूजा करते हुए मैनें अपनी माँ की आँखों में आँसू बहते देखे। मैनें चकित भाव से माँ से पूछा कि आप क्यों रो रही हैं? आप ठीक तो हैं ना। माँ ने जवाब देते हुए कहा कि यह ईश्वर के प्रति प्रेम भाव है, परम पिता का विरह है। जब भी हम उसके भजन, कीर्तन, सत्संग, कव्वाली, जाप करते हैं या सुनते हैं तो एक अलग से भाव आते हैं जिसमें आँखों से यकायक आँसू बहने लगते हैं। उसे किसी भी भाव से पुकारो, वह अपना लगने लगता है। ईश्वर के प्रति ऐसा प्रेम या गहरी भक्ति सूफी संतो व भक्तों की देन है जिन्होंने जीवन के सत्य, परमेश्वर, भक्ति, जीवन–मरण और पुर्नजन्म के बारे में विचार किया।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ से विद्यार्थी : –

- दक्षिण भारत के धार्मिक परम्पराओं (नयनार व अलवार) की विशेषताओं का वर्णन कर पाएगें
- महाराष्ट्र के संतो का परिचय प्राप्त कर सकेंगें।
- इस्लाम और सूफी संतो के विचारों को जान पायेंगे
- उत्तर भारत में धार्मिक बदलाव एवं नानक, कबीर एवं मीराबाई के विचारों से अवगत हो पाएंगे।

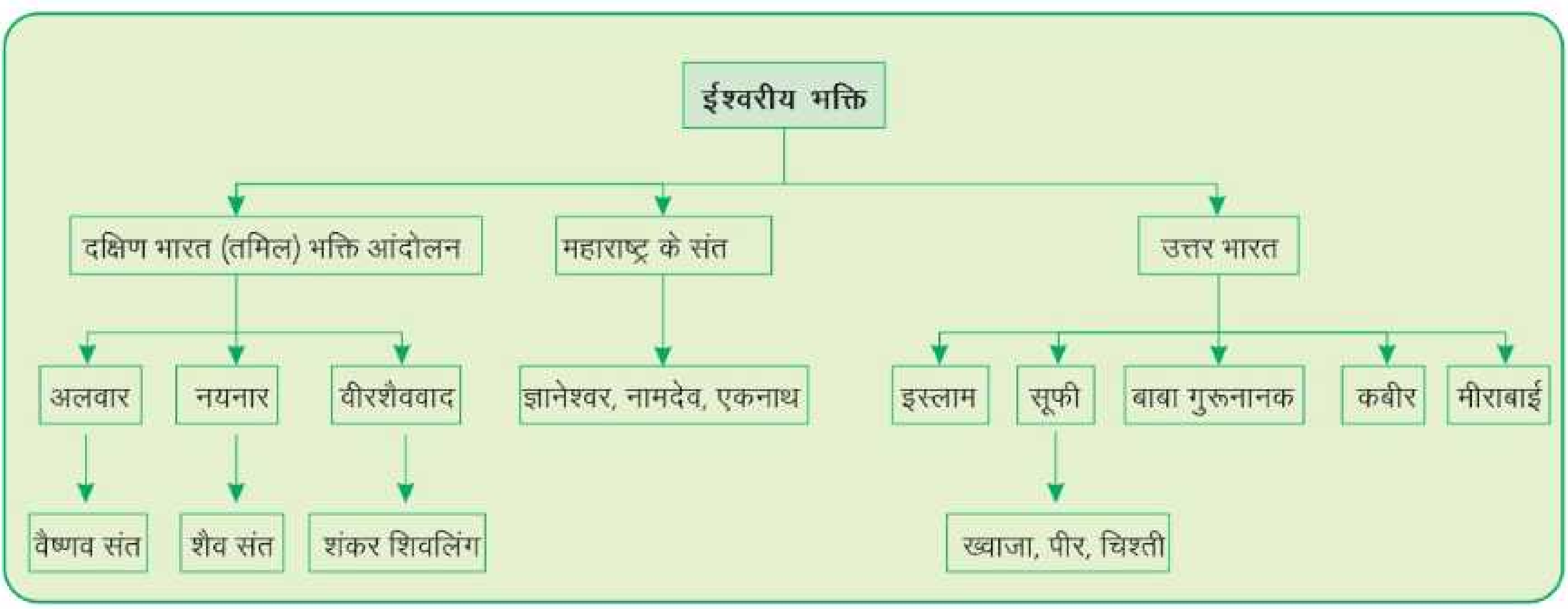

नए विचार

अनेक लोग अपने देवी–देवताओं की पूजा करते थे। कर्मों को जीवन का आधार माना जाता था। लोग अपने कर्मों के अनुसार जीवन–मरण और पुनर्जीवन के चक्र से गुजरते हैं। जीवन का सत्य जानने के लिए लोगों के अंदर उत्सुकता हुई। पूजा की अलग–अलग पद्धतियाँ अपनाई जाती थी। सच्ची भक्ति से ईश्वर की कृपा मिलती है।

दक्षिण भारत में भक्ति परंपरा को दो भागों में बाँटा जाता है–

1. सगुण – ईश्वर की उपासना मूर्ति के रूप में की जाती है।
2. निर्गुण – ईश्वर की उपासना निराकार ब्रह्म के रूप में की जाती है।

शिव, विष्णु व उनके अवतारों की भक्ति मूर्ति रूप में की जाती है जिसे सगुण भक्ति कहते हैं और निर्गुण भक्ति में निराकार परमात्मा की अराधना की जाती है।

सगुण उपासना स्थल

	क्षेत्र		प्रसिद्ध संत		क्षेत्र		प्रसिद्ध संत
(I)	पंजाब	–	बाबा गुरू नानक	(VI)	मध्य प्रदेश	–	वल्लभाचार्य
(I)	राजस्थान	–	मीरा बाई	(VII)	कर्नाटक	–	रामानुजम्
(III	गुजरात	–	नरसी मेहता	(VIII)	आंध्र प्रदेश	–	पुरंदरदास, जस
(IV)	महाराष्ट्र	–	एकनाथ, तुकाराम, नामदेव	(IX)	बंगाल (नदिया)	–	चैतन्यदेव
(V)	उत्तर प्रदेश	–	सूरदास, कबीर, रैदास				

भारत के रेखा मानचित्र में प्रसिद्ध संतों के क्षेत्र को दशाईए।

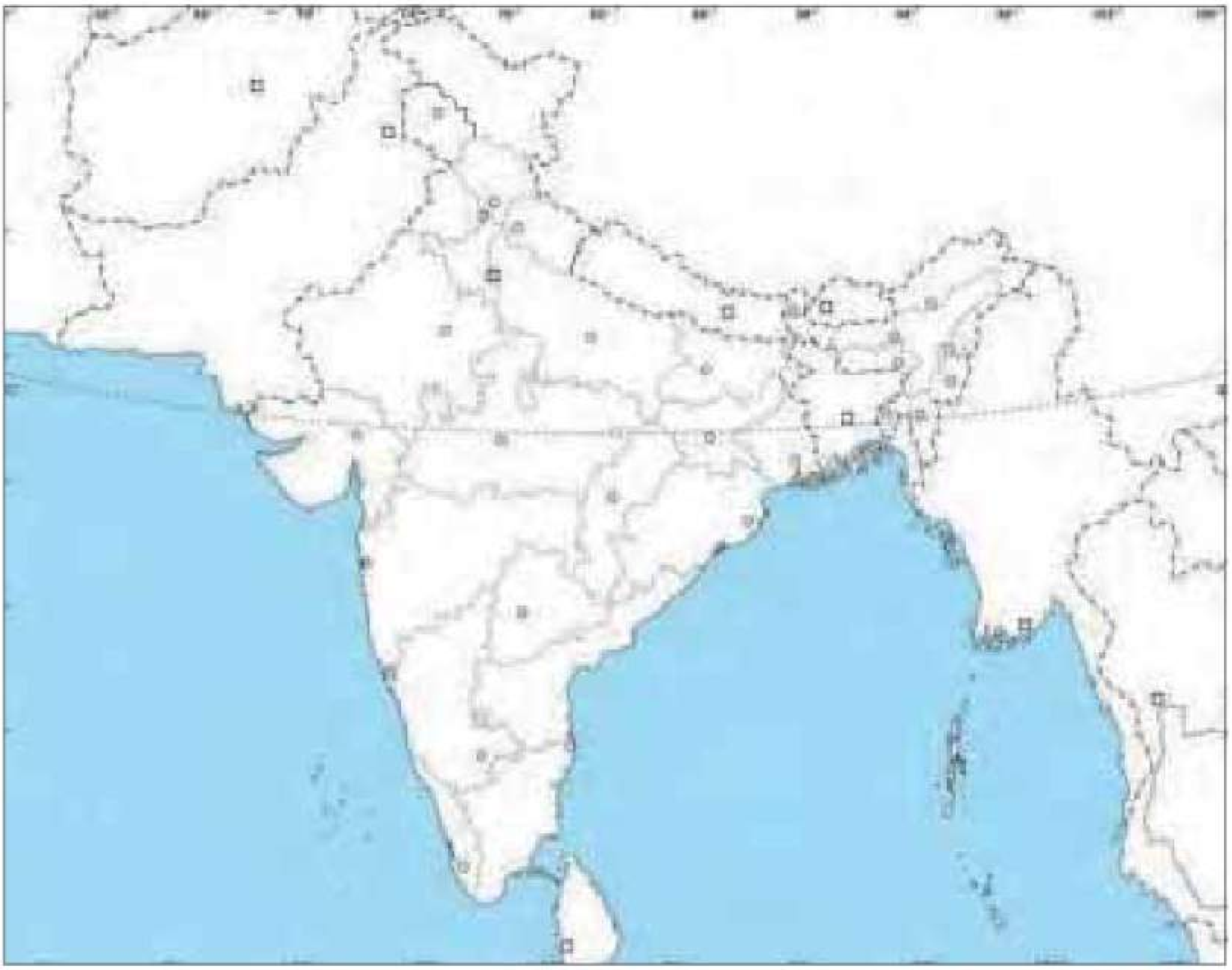

दक्षिण भारत के अलवार और नयनार

छठीं शताब्दी में अलवार (विष्णु की भक्ति) और नयनार (शिव भक्तों) ने धार्मिक आंदोलनों की बात कही। वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमकर तमिल में अपने देव को याद कर भजन गाते थे।

1. ये संत सभी जातियों के थे
2. यह 'अस्पृश्यता' को नहीं मानते थे
3. वे विष्णु व शिव के प्रति सच्चे प्रेम को मुक्ति का मार्ग बताते थे
4. इनकी रचनाओं को वेदों की तरह सम्मान दिया जाता है
5. भक्ति के साथ–साथ त्याग, प्यार और शूरवीरता की बात कही।
6. अलवार संतों की संख्या 12 थी।
7. नायनार संतों की संख्या 64 थी।
8. संकीर्तन की शुरुआत चैतन्य महाप्रभु ने की थी।
9. मीराबाई मेवाड़ के राजा रत्नसिंह की पत्नी थी।
10. कबीर, नानक निर्गुण परंपरा के संत थे।

इस्लाम मत

इस्लाम शब्द अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ 'सल्लमा' है अर्थात् आत्मसमर्पण (अल्लाह की आज्ञा के प्रति) ईश्वर के सामने लोगों का आत्मसमर्पण और इस आत्मसमर्पण के साथ आती है शांति व सुरक्षा। इस्लाम धर्म के दो सम्प्रदाय– शिया एवं सुन्नी है।

इस्लाम धर्म के प्रमुख विचार/सिद्धांत

1. केवल एक अल्लाह (ईश्वर) में विश्वास रखना।
2. इस्लाम धर्म की पवित्र पुस्तक कुरान पर विश्वास करना।
3. अल्लाह (ईश्वर) के प्रति समर्पण का भाव रखना।
4. पैगम्बर मुहम्मद अल्लाह के दूत है। कुरान अल्लाह द्वारा पैगम्बर मुहम्मद साहिब को प्रकट हुई।
5. इस्लाम ने मूर्तिपूजा को नहीं माना है।
6. दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ना (अल्लाह से प्रार्थना करना)।
7. जरूरतमदों को खैरात (दान) और ज़कात देना।
8. रमज़ान के महीने में रोज़ा (व्रत) रखना।
9. जीवन में एक बार हज़ के लिए मक्का जाना (यदि व्यक्ति जाने में सर्मथ हो।)
10. प्रेम और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना।

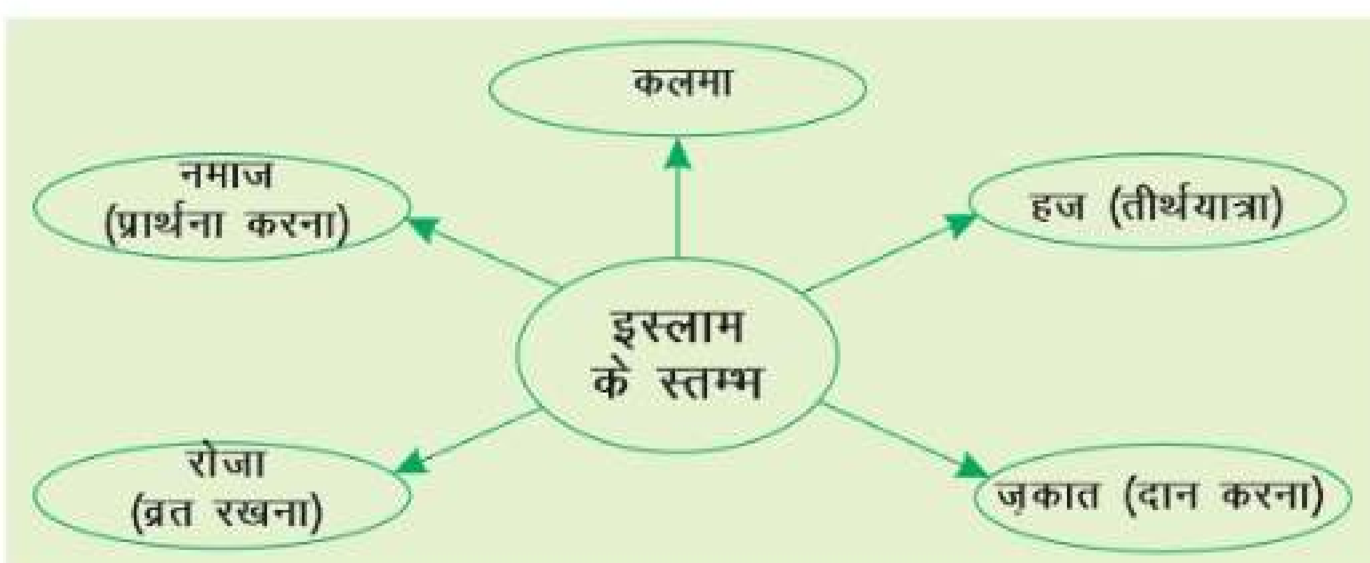

जामा मस्जिद दिल्ली

1. सूफ़ीमत के विचार –

1. अल्लाह (ईश्वर) से प्रेम करो।
2. लोगों के लिए दयाभाव रखो।
3. कर्मकाण्ड और आचार–संहिता का विरोध।
4. ईश्वर के साथ हमेशा जुड़े रहना।
5. मुक्ति के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों का पालन करना।
6. औलिया या पीर की देख–रेख में जिक्र (नाम का जाप) चिंतन (विचार), करना

2. चिश्ती सिलसिला के मुख्य सूफी संत–

	सूफ़ी संत		दरगाह का स्थान
(I)	शेख मुइनुद्दीन चिश्ती	–	अजमेर
(II)	शेख निज़ामुद्दीन औलिया	–	दिल्ली
(III)	शेख नसीरूद्दीन चिराग–ए–देहली	–	दिल्ली
(IV)	शेख कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी	–	दिल्ली
(V)	बाबा फ़रीद	–	पंजाब
(VI)	बंदानवाज़ गेसूदराज़	–	गुलबर्ग
(VII)	हाजी अली	–	मुम्बई

3. रिक्त स्थान भरिए –

(I) भक्ति आन्दोल की .... से शुरुआत हुई।

(ii) आलवार संतों की .... संख्या थी।

(iii) नयनार संतों की .... संख्या थी।

(iv) महाराष्ट्र के प्रमुख संत .... थे।

(v) सूफी संतो के निवास स्थान को .... कहते थे।

(vi) कबीर .... परंपरा के संत थे।

ख़ानक़ाह और सिलसिला

सूफ़ी संतो के निवास स्थान को खानकाह कहा गया। ख़ानक़ाहों का नियंत्रण शेख, पीर अथवा मुर्शिद के हाथों में था। (ख़ानक़ाहों) यहाँ विशेष बैठकों का आयोजन किया जाता था। यहाँ शाही घरानों के लोग, आम लोग सभी जा सकते थे। यहाँ पर आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा होती थी। लोग अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए संतो का आशीर्वाद मांगते थे। सूफ़ी संतो की दरगाह एक तीर्थस्थल की तरह होती थी।

सिलसिला – का शाब्दिक अर्थ है जंजीर जो शेख और मुरीद के बीच एक रिश्ते का प्रतीक थी। यह सूफ़ी केन्द्र थे। यहाँ पर सूफ़ी संतो द्वारा दीक्षा दी जाती थी। सिलसिलों में औलियाओं की एक लंबी परंपरा थी।

अमीर खुसरो

अमीर खुसरो – महान कवि, संगीतज्ञ और शेख निजामुद्दीन औलिया के अनुयायी थे। वे हिन्दी भाषा की खड़ी बोली के पहले कवि है उन्हें तूती ए हिन्द कहा जाता है। इनका जन्म एटा में हुआ था। कव्वाली, गजल की शुरूआत भारत में उन्होंने की। भारत में तबला, सारंगी वाद्य की शुरूआत भी अमीर खुसरों ने की।

4.1 पाठगत प्रश्न

1. रिक्त स्थान भरिए –
   1. इस्लाम का अरबी में अर्थ .... है।
   2. पैगम्बर .... ईश्वर के दूत हैं।
   3. दिन में .... बार नमाज़ पढ़नी चाहिए।
   4. सूफ़ी लोगों के लिए .... रखते थे।

2. इस्लाम के पाँच स्तम्भ कौन से हैं?

   1. .... 2. .... 3. ....

   4. .... 5. ....

3. किन्हीं तीन सूफ़ी संतो के नाम लिखिए–

   1. .... 2. .... 3. ....

   4. .... 5. ....

कबीरदास

कबीर का जन्म लगभग चौदहवीं–पंद्रहवीं सदी में हुआ। उस समय के संत कवियों में वह अत्यधिक प्रभावशाली संत थे। कबीर का जन्म लहरतारा मोहल्ले (बनारस) में हुआ था। कबीर का पालन–पोषण मुसलमान जुलाहा यानी बुनकर परिवार में हुआ था। उन्होंने अपने जीवन में कई चुनौतियों का सामना किया था। इनकी मृत्यु मगहर (खलीलाबाद, उ.प्र.) स्थान पर हुई।

कबीर की वाणी का संग्रह "बीजक" नाम से प्रसिद्ध है। उसके तीन भाग हैं – साखी, सबद और रमैनी। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वास और कर्मकाण्ड की निंदा की, भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई और हिन्दू मुस्लिम एकता पर बल दिया।

कवीर दास रामानुज के शिष्य थे। वह पूरे जीवन अपने व्यवसाय से जुड़े रहे। वह निर्गुण ब्रह्म के मानने वाले थे। कबीर दास ने अन्धविश्वास और समाज में व्याप्त रूढ़ियों का खण्डन किया।

कबीर के दोहे

बुरा जो देखण मैं चला, बुरा न मिलया कोए।
जो मन खोजा आपणा, तो मुझसे बुरा न कोए।।

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होएगी, बहूरी करोगे कब।।

सांई इतना दीजिए, जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं।
सब अंधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या मांहि।।

गुरू गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरू आपणो, जिन गोविंद दियो बताय।।

उपरोक्त दोहे को पढ़िए और उसका भावार्थ समझने की कोशिस कीजिए।

कबीर दास के उपदेश

1. वे सत्य को अल्लाह, खुदा, हजरत और पीर कहते थे।
2. वे सत्य को अलख (अदृश्य), निराकार भी कहते थे।
3. उन्होंने एक ही ईश्वर होने की बात कही है जो कि निराकार है।
4. उन्होंने बहु–देवताओं और मूर्ति पूजा को नहीं माना है।

5. उन्होंने "नाम–सिमरन" की बात कही हैं।
6. उन्होंने हिंदू और इस्लाम धर्म के आडम्बरों को नहीं माना है।

कबीर को भक्ति का मार्ग दिखाने वाले गुरू रामानंद थे।

"कबीर के दोहे हमारी हिंदी की किताब में भी है।"

"क्या आप जानते हैं – कबीर का अरबी में अर्थ महान होता है।"

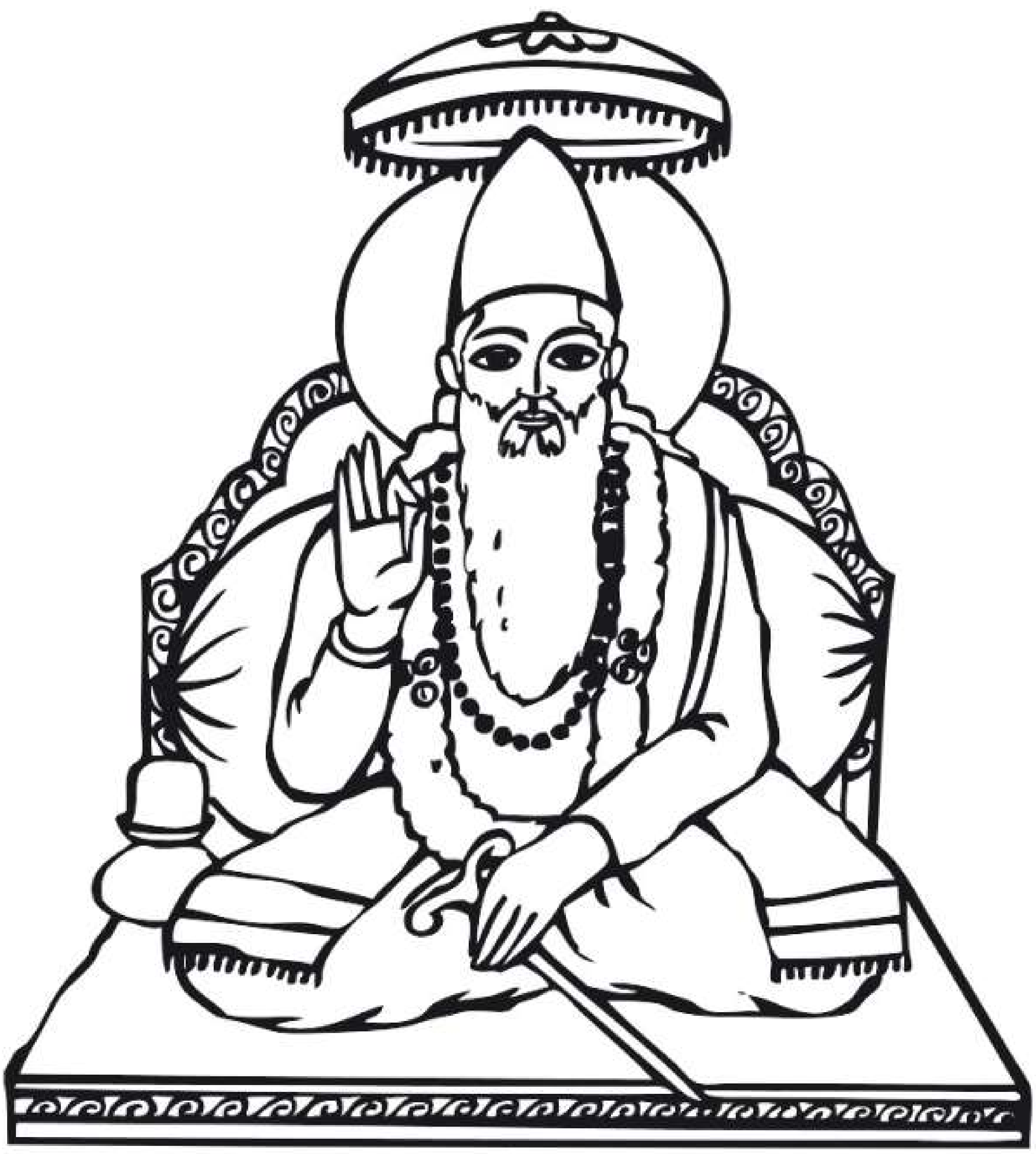

कबीरदास

1. काल करे सो आज .... बहुरी करोगे कब।।
   कबीर के इस दोहे में जीवन समय के महत्व की चर्चा करें।

2. गुरू गोविन्द दोऊ .... जिन गोविन्द दियो बताय।।
   कबीर के उपरोक्त दोहे में वर्णित गुरु के गुणों के आधार पर एक लघु निबंध लिखो।

गुरू नानक

क्या आप कभी किसी गुरूद्वारे गए हैं? क्या आपने कभी गुरू नानक जी के बारे में सुना है?

बाबा गुरु नानक जी का जन्म (1469–1539) एक पटवारी के यहाँ तलवंडी नामक जगह पर हुआ। यह पंजाब (पाकिस्तान) का एक गाँव था जो रावी नदी के पास था। उन्होंने फारसी पढ़ी और लेखाकार का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उनका विवाह छोटी उम्र में ही हो गया था पर वह अपना अधिक समय सूफ़ी और भक्त संतो के बीच गुजारते थे। उन्होंने दूर–दराज़ की यात्राएँ भी की।

गुरू नानक देवजी के उपदेश / शिक्षाएँ

1. गुरू नानक जी धर्म के बाहरी आडंबरों को नहीं माना।
2. उन्होंने जाति अथवा लिंग–भेद का विरोध किया।
3. उन्होंने निर्गुण भक्ति का प्रचार किया।
4. उनके अनुसार ईश्वर का कोई आकार नहीं है।
5. उन्होंने रब को उपासना के लिए एक आसान उपाय बताया और वह था सिमरण या नाम जपो।
6. उन्होंने सांझी रसोई और लंगर का प्रचलन शुरू किया। नाम जपना, किरत करना और वंड छकना (बाँटकर खाना) का महत्व बताया।
7. उन्होंने अपने विचार पंजाबी भाषा में शबद (भजन) के माध्यम से सामने रखे।
8. उन्होंने उपासना (नाम–जप) के लिए "धर्मसाल" की बात कही, जिसे गुरूद्वारा कहते हैं।

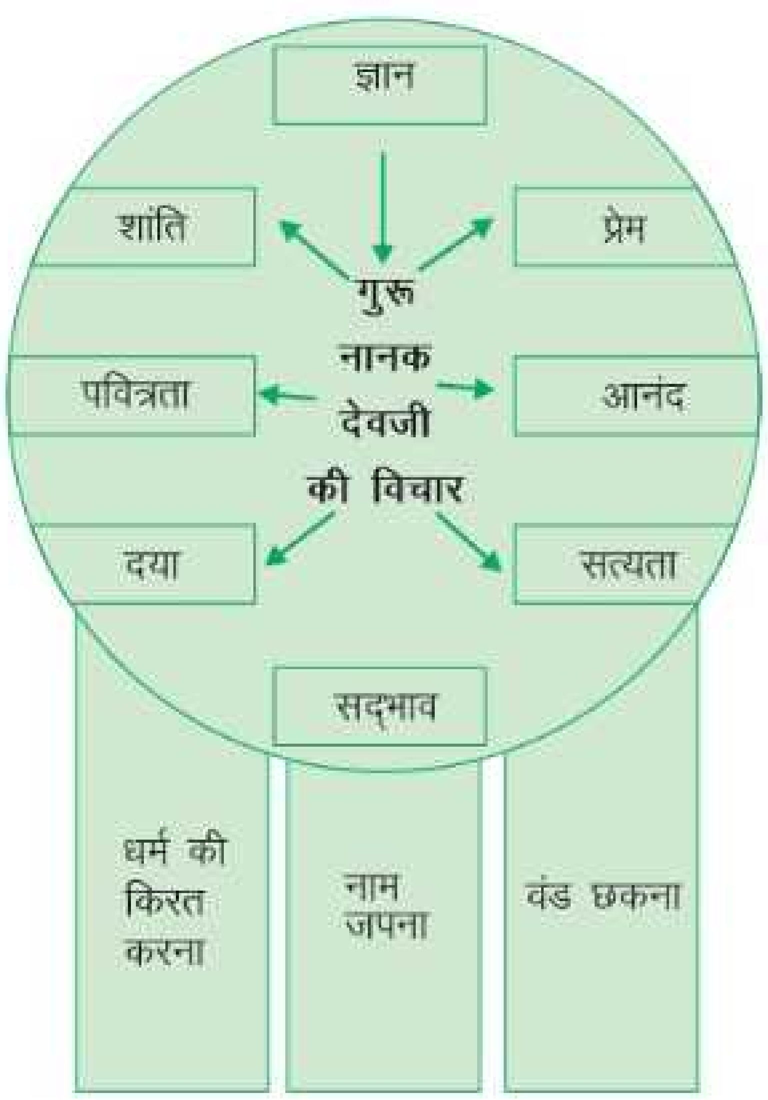

गुरु नानक

सिक्ख धर्म के दस सद्गुरूओं के नाम

गुरू नानक देव जी	प्रथम गुरू साहिब
गुरू अंगद देव जी	द्वितीय गुरू साहिब
गुरू अमरदास जी	तृतीय गुरू साहिब
गुरू रामदास जी	चौथे गुरू साहिब
गुरू अरजन देव जी	पाँचवें गुरू साहिब
गुरू हरगोविंद जी	छठे गुरू साहिब
गुरू हर रॉय जी	सातवें गुरू साहिब
गुरू हरकिशन जी	आठवें गुरू साहिब
गुरू तेग बहादुर जी	नवें गुरू साहिब
गुरू गोबिंद सिंह जी	दसवें गुरू साहिब
गुरू ग्रंथ साहिब जी	आज के गुरू

क्रियाकलाप –

गुरु नानक देव जी की जीवन परिचय से सम्बन्धित तथ्य लिखें।

सिक्ख धर्म से सम्बन्धित तथ्य–

1. पाँचवें गुरू अरजन देव जी ने गुरू नानक देव जी तथा उनके बाद के सभी गुरु जनों की रचनाओं का संग्रह किया।
2. इस संग्रह में उन्होंने अपनी कृतियाँ भी जोड़ दी थी।
3. गुरू अंगद के सभी उत्तराधिकारियों ने अपनी रचनाएँ गुरु नानक जी के नाम से लिखी।
4. गुरू ग्रन्थ साहिब में शेख फरीद, संत कबीर, भगत नामदेव इत्यादि कुल 36 महापुरूषों की वाणी जोड़ी गई।
5. आज इस संग्रह को सिक्खों के पवित्र ग्रंथ "गुरू ग्रंथ साहिब" के रूप में जाना जाता है। इसकी रचना पंजाबी भाषा में हुई है।
6. अमृतसर (पंजाब) में केंद्रीय गुरूद्वारा "हरमंदिर साहब" बनाया गया।
7. 1699 में गुरू गोबिंद सिंह ने खालसा पंथ की नींव रखी। उन्होंने पाँच चिन्ह धारण करने को कहा है–

   1. कृपाण
   2. कच्छ
   3. कंघा
   4. कड़ा (लोहे का)
   5. केश

8. गुरू गोविंद सिंह के नेतृत्व में 'सिक्ख' समुदाय एक सामाजिक, सैन्य एवं धार्मिक रूप में संगठित होकर सामने आया।

4.2 पाठगत प्रश्न

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–
   1. सिखों का केंद्रीय गुरूद्वारा .... में बनाया गया।
   2. सिखों के दसवें गुरू .... जी ने खालसा पंथ की नींव रखी थी।
   3. सिखों का पवित्र ग्रंथ .... है।
   4. कबीर ने अपने काव्य में .... भाषा का इस्तेमाल किया है।
2. निम्नलिखित का मिलान कीजिए –

क	ख
(i) बीजक	अमृतसर
(ii) हरमंदिर साहब	कबीर
(iii) गुरू ग्रंथ साहब	गुरू गोविंद सिंह
(iv) खालसा पंथ	गुरू अरजन देव

मीरा बाई

मीरा बाई भक्ति परंपरा की प्रसिद्ध कवयित्री हैं। वह श्री कृष्ण की अनन्य भक्तिन थीं उन्होंने कृष्ण भक्ति के अनेक भजनों की रचना की।

मीरा बाई का जन्म राजस्थान के पाली जिले के एक राजपूत परिवार में हुआ था।

इनका विवाह इनकी इच्छा के विरूद्ध मेवाड़ के राजसी घराने में हुआ था। मीरा बाई ने ''रविदास'' को अपना गुरू माना। उन्होंने श्रीकृष्ण को ही अपना सब कुछ समझा। उन्होंने अपने गहरे भक्ति भाव को भजनों में गाया है। इन्होंने मथुरा–वृंदावन में रहकर कृष्ण भक्ति धारा को आगे बढ़ाया। मीरा ने अपना अन्तिम समय द्वारका में रहकर व्यतीत किया।

''पायो जी मैंने, राम रतन धन पायो
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरू
किरपा कर अपणायो
पायो जी मैंने, राम रतन धन पायो
जनम–जनम की पूँजी पाई
जग में सबै खोबायो
खरचे नहीं, कोई चोर न लेवै
दिन–दिन बढ़त सवायौ
पायो जी मैंने, राम रतन धन पायो
सत की नाव, खेवटिया सतगुरू
भव सागर तरि आयौ
मीरा के प्रभु गिरधर नागर
हरिख–हरिख जस गायौ
पायो जी मैंने, राम रतन धन पायो''

पाठ का सार

1. मध्यकाल में अनेक धर्मों का और विचारों का विकास हुआ।
2. तमिलनाडु में अलवार और नयनार, विष्णु और शिव भक्त थे।
3. कर्नाटक व तमिलनाडू में वीरशैव (शिवलिंग) भक्त भी हुए थे।
4. ज्ञानेश्वर, तुकाराम, नामदेव और एकनाथ महाराष्ट्र के संत थे।
5. उत्तर भारत में इस्लाम, सूफ़ी संतो, बाबा गुरू नानक, कबीर और मीरा बाई जैसे भक्त व संत के विचारों का प्रसार हुआ।
6. सूफी संतो ने इस्लाम व कुरान की व्याख्या अपनी भाषा में, अपने संगीत से की थी। उन्होंने ख़ानकाह व सिलसिलों की स्थापना की।
7. बाबा गुरू नानक ने एक ईश्वर होने की बात कही। उनकी बातों को गुरू ग्रंथ में लिखा गया।
8. सिखों के दसवें गुरू ने खालसा पंथ की स्थापना की।
9. कबीर ने एकेश्वरवाद पर बल दिया।
10. मीरा बाई श्रीकृष्ण की अनन्य भक्तिन थी। उन्होंने अनेक भजनों की रचना की थी।

अभ्यास

1. निम्नलिखित का सही मिलान कीजिए –

	क	ख
(I)	मीरा बाई	सूफ़ी संत
(II)	बाबा नानक देव	श्रीकृष्ण भक्त
(III)	निजामुद्दीन औलिया	सिक्ख धर्म
(IV)	कबीर दास	जुलाहे

2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए –

1. इस्लाम धर्म के कोई दो विचार लिखिए।
2. किन्हीं तीन सूफ़ी संतो का नाम लिखिए।
4. सूफी मत के चार विचार लिखिए।
5. कबीरदास के चार उपदेशों को बताइये।
6. गुरुनानक देवजी के मुख्य विचार कौन–कौन से है?

5 अठारहवीं शताब्दी के राजनैतिक गठन

प्रस्तावना

इस पाठ में हम 18वीं शताब्दी के दौरान मुगल शासक औरंगजेब की मृत्यु (1707 ई.) के बाद भारतीय राजनीतिक दशा एवं मुगल साम्राज्य की सीमा में हुए परिवर्तनों को सीखेंगे कि किस तरह राजनैतिक, आर्थिक, सत्ता, प्रांतीय सूबेदारों, स्थानीय सरदारों व अन्य समूहों में स्वतंत्रता आयी जिसे औरंगजेब के उत्तराधिकारी रोक न सके।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ से निम्न अधिगम बिंदुओं को समझ पाएँगे –

1. मुगल साम्राज्य का पतन
2. उत्तराधिकारी राज्य
   - 2.1 हैदराबाद
   - 2.2 अवध
   - 2.3 बंगाल
3. राजपूत राज्य
4. स्वतंत्र राज्य
   - 4.1 सिक्ख
   - 4.2 मराठा
   - 4.3 जाट

मुगल साम्राज्य के पतन

मुगल साम्राज्य सम्राट अकबर के समय से लेकर औरंगजेब के समय तक सफलता की ऊँचाई पर पहुँचा। परन्तु सत्रहवीं शताब्दी के अंत में मुगल साम्राज्य के सामने अनेक संकट खड़े हुए जिसने मुगल साम्राज्य के पतन का रास्ता खोल दिया।

मुगल साम्राज्य का पतन अनेक कारणों से हुआ जैसे– (1) औरंगजेब के दक्कन युद्ध में सैन्य एवं वित्तीय संसाधन का अधिक खर्च, (2) कमजोर उत्तराधिकारी (3) उत्तराधिकार के नियम का अभाव (4) मनसबदारों के विद्रोह और बगावत (5) विदेशी आक्रमण (6) राजस्व की मात्रा में कमी, आदि। साथ ही उत्तरी तथा पश्चिमी भारत के जमींदारों और किसानों के विद्रोह ने मुगल साम्राज्य के पतन की समस्या को और भी गंभीर बना दिया। क्योंकि जमींदार और किसान करों की वृद्धि के विरोध में थे।

शक्तिशाली सरदार एवं विद्रोही समूह ने मुगल सत्ता को चुनौती दी। उन समूहों ने राजनैतिक और आर्थिक सत्ता प्राप्त कर मुगल साम्राज्य के पतन को बढ़ावा दिया।

1739 ई. में ईरान के शासक नादिरशाह द्वारा दिल्ली पर आक्रमण कर भारी मात्रा में धन–दौलत लूट ली। अफगान शासक अहमद शाह अब्दाली ने 1748 ई. – 1769 ई. के बीच ग्यारह बार उत्तरी भारत में आक्रमण कर लूटपाट की।

मुगल दरबार के दो बड़े अभिजात गुट– ईरानी और तुरानी (तुर्क मूल के) थे जिनके बीच प्रतिस्पर्धा रहती थी।

परवर्ती मुगल शासक इनके हाथ की कठपुतली थे। इन्होंने फर्रूखसियर और आलमगीर द्वितीय की हत्या करवा दी।

5.1 पाठगत प्रश्न

1. किस मुगल शासक के काल में मुगल साम्राज्य ने सफलता की ऊँचाई प्राप्त की?
2. मुगल साम्राज्य के पतन के कारणों को लिखें?

उत्तराधिकारी राज्य

मुगल सम्राटों के पतन के बाद बड़े प्रांतों के सूबेदारों और जमींदारों ने अपनी शक्ति बढ़ा ली। अठारहवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य तीन प्रकार के स्वतंत्र क्षेत्रीय राज्यों में बँट गया।

प्रथम – अवध, बंगाल और हैदराबाद जो मुगल प्रांत थे। ये शक्तिशाली एवं स्वतंत्र थे। परन्तु इन्होंने मुगल शासकों से संबंध बनाए रखा। ये उत्तराधिकारी राज्य थे।

द्वितीय – वतन जागीर के रूप में स्वतंत्र राजपूत प्रदेश।

तृतीय – मराठा, सिक्ख एवं जाट राज्य जिन्होंने लंबे सशस्त्र संघर्ष द्वारा मुगलों से मुक्त या स्वतंत्र राज्यों की नींव रखी।

हैदराबाद

फर्रूखसियर का विश्वास पात्र निजाम उल–मुल्क आसफजहाँ (1724–48ई.) शक्तिशाली व्यक्ति था। अवध की सूबेदारी के बाद उसे दक्कन का सूबेदार बनाया गया। दक्कन उपद्रव तथा दरबार में प्रतिस्पर्धा का लाभ उठाकर हैदराबाद में अपना स्वतंत्र सत्ता स्थापित की और हैदराबाद राज्य की स्थापना की। आसफजहाँ कुशल सैनिक तथा प्रशासक उत्तर भारत से लाया। नए मनसबदार नियुक्त कर जागीरें दी। मुगल सम्राट से वह निर्देश नहीं लेता था। मुगल सम्राट उसके निर्णय में दखल नहीं देते थे बल्कि निर्णयों पर सहमति दे देते थे।

अवध

बुरहान–उल–मुल्क सआदत खान 1722 ई. में अवध का सूबेदार बना। मुगल शासकों की कमजोरी का फायदा उठाकर राजनैतिक, वित्तीय और सैनिक रूप से स्वतंत्र रूप से कार्य करने लगा। अवध गंगा नदी के उपजाऊ मैदान एवं उत्तरी भारत और बंगाल के व्यापारिक मार्ग में स्थित होने के कारण समृद्ध था।

सआदत खान ने मुगल प्रभाव को कम करने के लिए मुगल जागीरदारों की जगह अपने निष्ठावान सेवकों की नियुक्ति की। जागीर अधिकारियों के संपत्ति की जाँच की गई। जिलों में राजस्व का फिर से निर्धारण हुआ। राजपूतों एवं रूहेलखण्ड के अफगानों की उपजाऊ कृषि भूमि को अपने राज्य में मिलाया। राजस्व वसूली की इजारेदारी प्रथा शुरू की। इजारेदारी प्रथा ने साहूकारों, सेठों और महाजनों जैसे नए समूह को जन्म दिया जिसने राज्य की राजस्व प्रणाली को प्रभावित किया।

बंगाल

मुर्शीद कुली खान बंगाल में मुगल सूबेदार न होकर नायब थे। उसने हैदराबाद, अवध की तरह राजस्व प्रशासन पर नियंत्रण कर स्वतंत्र सत्ता स्थापित की। बंगाल में नए तरीकों से राजस्व निर्धारण किया। जमींदारों से कठोरता से नकद भू–राजस्व वसूला। जमींदारों को भू–राजस्व चुकाने के लिए महाजनों तथा साहूकारों से उधार लेना पड़ता था। साहूकारों का राज्य से घनिष्ठ संबंध था। जगत सेठ का साहूकार घराना काफी समृद्ध था जो राज्य की आर्थिक गतिविधियाँ प्रभावित करता था। इजारेदारी प्रथा से साहूकारों और महाजनों की राजनीतिक व्यवस्था में साझेदारी बढ़ी।

5.2 पाठगत प्रश्न

1. मुगल साम्राज्य के उत्तराधिकारी राज्य कौन कौन से थे?
2. बंगाल में मुगल नायब कौन था? उसने कौन से कार्य किए?

राजपूत राज्य

आमेर और जोधपुर राजपूत घराने विशिष्टता के साथ मुगल सेवा में थे। ये अपने वतन जागीर में स्वायत्तता के साथ शासन करते थे। जोधपुर के राजा अजीत सिंह को गुजरात तथा आमेर के राजा सवाई जयसिंह को मालवा की सूबेदारी दी गई। जहाँदारशाह ने 1713 ई. में उसका नवीकरण किया। जोधपुर के शासक ने नागौर और आमेर के शासक ने बूँदी के हिस्सों पर कब्जा किया। जयसिंह को 1722 ई. में आगरा की सूबेदारी दी गई। जयसिंह ने अपनी राजधानी जयपुर में स्थापित किया। 1740 ई. के बाद राजस्थान में मराठों के अभियान के कारण यह विस्तार रूक गया। जयसिंह ने विशाल सेना, तोपखाना और भारी धन संपदा के कारण दिल्ली से लेकर नर्मदा तट तक अपना प्रभाव फैलाया।

5.3 पाठगत प्रश्न

1. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–
   (क) जोधपुर के राजा .... एवं आमेर के राजा .... थे।
   (ख) जयसिंह को .... ई. में .... की सूबेदारी दी गई।
   (ग) जहाँदारशाह ने .... ई. में इसका नवीकरण किया।
2. जयसिंह ने अपनी राजधानी कहाँ बनाई?

स्वतंत्र राज्य

मराठों, सिक्खों एवं जाटों ने मुगल केन्द्रीय शक्ति कमजोर होने पर लंबे सशस्त्र संघर्ष के द्वारा स्वतंत्रता प्राप्त की।

सिख

सिखों के राजनैतिक समुदाय के रूप में गठन ने 17वीं शताब्दी में क्षेत्रीय राज्य निर्माण को बढ़ावा दिया। गुरू गोविंद सिंह ने 1699 ई. में खालसा पंथ की स्थापना की। गुरू गोविंद सिंह ने राजपूत और मुगल शासकों के विरूद्ध लड़ाई लड़ी। गुरू गोविंद सिंह की मृत्यु के बाद बंदा बहादुर ने खालसा का नेतृत्व किया। गुरू नानक एवं गुरू गोविंद सिंह के नाम के सिक्के ढ़लवाये। सतलुज और यमुना के बीच के क्षेत्र में स्वतंत्र सत्ता स्थापित की। 1715 ई. में बंदा बहादुर को बंदी बनाकर 1716 ई. में वध कर दिया गया। अठारहवीं सदी में सिक्खों ने जत्थों और मिसलों के रूप में अपने आपको संगठित किया। जत्थों और मिसलों की संयुक्त सेना दल खालसा कहलाती थी। दल खालसा वैशाखी और दीवाली में अमृतसर में बैठक बुलाकर सामूहिक निर्णय (गुरमता– गुरू का प्रस्ताव) लेते थे। वे किसानों से उपज का 20 प्रतिशत कर लेकर संरक्षण देते थे। इस प्रथा को राखी व्यवस्था कहा जाता था

"राज करेगा खालसा यानी शासन उनके भाग्य में है" – की प्रेरणा से खालसा ने मुगल सूबेदारों और अहमदशाह अब्दाली के खिलाफ विद्रोह किया। खालसा ने 1765 ई. में अपना सिक्का ढ़लवाकर स्वतंत्र शासन स्थापित किया।

18वीं शताब्दी में महाराजा रणजीत सिंह ने विभिन्न सिख समूहों (मिसल) में एकता कायम की और सिंधु से यमुना तक फैले क्षेत्र में शासन का विस्तार किया। 1799 ई. में लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।

भरतपुर राज्य

जाट राजा सूरजमल ने भरतपुर राज्य की स्थापना की, इनकी राजधानी डींग थी।

5.4 पाठगत प्रश्न

1. खालसा पंथ की स्थापना किसने और कब की?
2. रणजीत सिंह कहाँ के राजा थे?

मराठा

शक्तिशाली मराठा राज्य मुगलों के विरोध से पैदा हुआ। शिवाजी (1627 ई.–1680 ई.) ने देशमुखों (योद्धा परिवार) और कुनबी (कृषक–पशुचारक) मराठों की सहायता से मराठा राज्य की स्थापना की। शिवाजी के बाद में मराठा के चित्त पावन ब्राह्मण पेशवा (प्रधानमंत्री मराठा राज्य के) उत्तराधिकारी बने उन्होंने। पूणे को मराठा राज्य की राजधानी बनाया।

पेशवाओं ने सफल सैन्य संगठन का विकास किया। मुगल सेना से वहाँ संघर्ष करते जहाँ रसद और कुमुक आने के रास्ते रोके जा सकें। मुगलों के किलेबंद क्षेत्र की बजाय शहरों और कस्बों पर आक्रमण करते थे।

1720 ई. से 1761 ई. के दौरान मराठा साम्राज्य का विस्तार मालवा, गुजरात, राजस्थान, पंजाब, बंगाल, उड़ीसा, कर्नाटक, तमिल, तेलुगु, दिल्ली तक हुआ। मराठों को दक्कन का अधिपति मानकर चौथ (25 प्रतिशत) तथा सर देशमुखी (9–10 प्रतिशत) कर भू–राजस्व से वसूलने का अधिकार प्राप्त हुआ।

मराठों ने सैन्य अभियान के साथ प्रभावी प्रशासन व्यवस्था, कृषि को प्रोत्साहन, व्यापार और वाणिज्यिक और सांस्कृतिक केन्द्रों का विकास किया। उज्जैन को सिंधिया ने तथा होल्कर ने इंदौर को संरक्षण दिया। व्यापार के नए मार्ग खोले गए। बुरहानपुर को आगरा और सूरत के साथ दक्षिण में पुणे और नागपुर तथा पूर्व में लखनऊ तथा इलाहाबाद के साथ जोड़ा गया। चन्देरी के रेशमी वस्त्रोत्पादकों को पुणे में नया बाजार मिला। इससे मराठा सरदार सिंधिया, गायकवाड़ और भोंसले को सेना खड़ी करने के लिए संसाधन मिला। मराठों ने अपनी प्रभुसत्ता स्वीकार करवाने के लिए साम्राज्य में सम्मिलित कर भेंट लेना स्वीकार किया।

मराठों के सैन्य अभियान एवं लूट–पाट के कारण अन्य शासक विरोधी हो गए जिसके कारण 1761 ई. में पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों की कोई सहायता नहीं की जिससे मराठों की बुरी तरह हार हुई।

5.5 पाठगत प्रश्न

1. सही मिलान कीजिए

(I) पेशवा	पुणे
(ii) कुनबी	प्रधानमंत्री
(iii) चौथ	9–10 प्रतिशत भू–राजस्व
(iv) सरदेश मुखी	25 प्रतिशत भू–राजस्व
(v) मराठा राजधानी	कृषक–पशुचारक

5.6 पाठगत प्रश्न

1. निम्नलिखित में से सही / गलत को पहचानिए–

    (क) पानीपत और बल्लभगढ़ को प्रमुख व्यापारिक केन्द्र बनाया।

    (ख) सूरजमल ने भरतपुर राज्य की स्थापना की।

    (ग) भरतपुर का किला परंपरागत शैली में नहीं बना था।

    (घ) जाट नेता चूड़ामन ने दिल्ली और आगरा के बीच प्रभुत्व कायम किया।

पाठ का सार–

- मुगलवंश का पतन औरंगजेब की नीतियों, उसके अयोग्य उत्तराधिकारी, शक्तिशाली सरदारों एवं किसानों के विद्रोह तथा नादिरशाह के आक्रमण एवं लूट–पाट से हुआ। जिसने क्षेत्रीय शक्तियों को स्वतंत्र सत्ता स्थापित करने का अवसर प्रदान किया।
- 18वीं शताब्दी में अवध, हैदराबाद, बंगाल, मुगलों के उत्तराधिकारी राज्य के रूप में सआदत खान, निजाम–उल–मुल्क तथा अलीवर्दी खान ने क्षेत्रीय राज्य कायम किया। ये स्वतंत्र थे पर मुगलों से संबंध नहीं तोड़े।
- सिक्ख, जाट, मराठा और राजपूतों ने भी कमजोर केन्द्रीय शक्ति का लाभ उठाकर लम्बे संघर्ष के द्वारा स्वतंत्र क्षेत्रीय राज्यों का गठन किया।
- इन क्षेत्रीय शासकों ने अपनी सत्ता को मजबूत करने के लिए अनेक प्रशासनिक एवं आर्थिक परिवर्तन किए जिसमें इजारेदारी प्रथा महत्वपूर्ण थी जिससे साहूकार, सेठ, महाजन राज्य की आर्थिक व्यवस्था को प्रभावित करने लगे।
- अंग्रेज भी इन व्यवस्था से जुड़कर राजनैतिक गतिविधियों में संलग्न हुए।
- उमरा – मुगल अभिजात वर्ग
- इजारादार – एक राजस्व कृषक जो राजस्व वसूलकर देता था
- कुनबी – मराठा कृषक योद्धा
- वतन जागीर – राजपूतों का स्वतंत्र क्षेत्र
- गुरमता – गुरू का प्रस्ताव / सामूहिक निर्णय
- राखी – सुरक्षा के बदले सिक्खों द्वारा किसानों से उपज का 20 प्रतिशत लिया जाने वाला कर

अभ्यास

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

   (क) शक्तिशाली सरदार और विद्रोही समूह ने .... को चुनौती दी। (मुगल सत्ता / मराठों की सत्ता)

   (ख) अवध राज्य का संस्थापक .... था। (अलीवर्दी खां / सआदत खां)

   (ग) निजाम उल मुल्क आसफजहाँ ने हैदराबाद की स्थापना .... में की।(1720–22 ई. / 1735–36 ई.)

   (घ) औरंगजेब ने .... में एक लंबी लड़ाई लड़ी। (दक्कन / उत्तर)

2. सही और गलत कथन को चिह्नित करें:–

   (क) गुरू गोविंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की।

   (ख) पुणे अठारहवीं शताब्दी में मराठों की राजधानी थी।

   (ग) पानीपत की तीसरी लड़ाई 1761 ई. में मराठों की हार हुई।

   (घ) नादिरशाह ने 1739 ई. में बंगाल पर आक्रमण कर लूट–पाट की।

3. सही मिलान कीजिए –

(i) सूबेदार	उच्च अभिजात
(ii) फौजदार	प्रान्तीय सूबेदार
(iii) इजारादार	मराठा कृषक योद्धा
(iv) मिसल	मुगल सैन्य कमांडर
(v) चौथ	सिक्ख योद्धाओं का समूह
(vi) कुनबी	मराठों द्वारा लगाया जाने वाला कर
(vii) उमरा	एक राजस्व कृषक

4. अवध और बंगाल के नवाबों ने जागीरदारी प्रथा को समाप्त करने की कोशिस क्यों की?

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक / शिक्षिका विगत पाठों में विद्यार्थी की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1	______________________			
2	______________________			
3	______________________			
4	______________________			
5	______________________			
6	______________________			
7	______________________			
8	______________________			
9	______________________			
10	______________________			

6 पर्यावरण

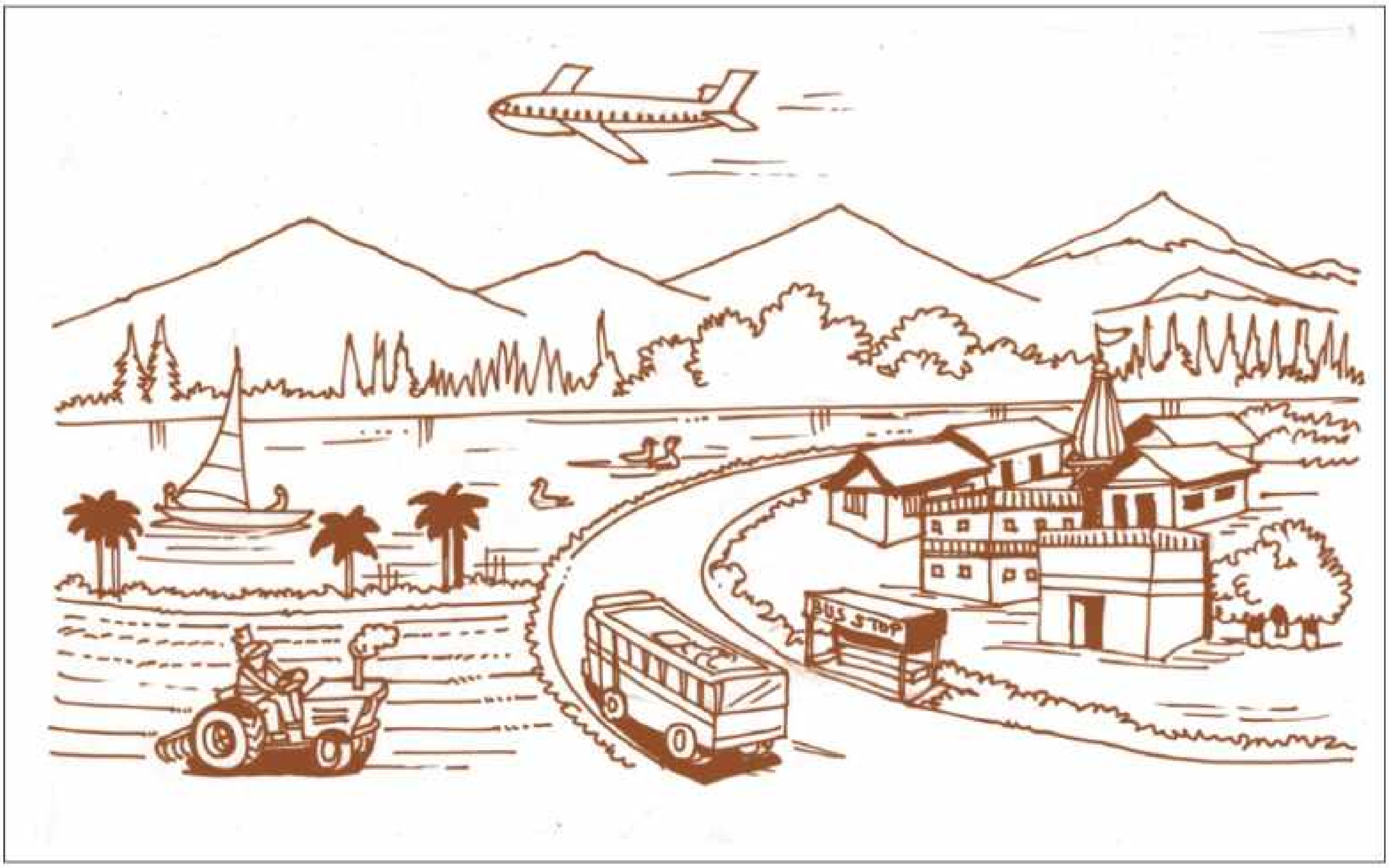

पर्यावरण

प्रस्तावना

पर्यावरण शब्द 'परि' तथा 'आवरण' दो शब्दों के योग से बना है। जिसमें 'परि' का अर्थ है चारों ओर तथा 'आवरण' का अर्थ है घेरे हुए। इस प्रकार से वे परिस्थितियाँ जो हमें चारों ओर से घेरे रहती हैं, पर्यावरण कहलाती हैं। अर्थात् जीवित प्राणी के चारों ओर पाए जाने वाले लोग, स्थान, वस्तुएँ एवं प्रकृति को पर्यावरण कहते हैं। यह प्राकृतिक एवं मानवीय परिघटनाओं का मिश्रण है, जिसमें पृथ्वी पर पायी जाने वाली जैव तथा अजैव दोनों ही परिस्थितियाँ सम्मिलित हैं। ये दो प्रकार का होता है– प्राकृतिक एवं मानवीय पर्यावरण।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ से हम –

- पर्यावरण की अवधारणा जान सकेंगे।
- पर्यावरण के घटकों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- पर्यावरण के प्रकार (मानवीय व प्राकृतिक) को जान सकेंगे।
- पर्यावरण के प्रति जागरूक हो सकेंगे।
- पर्यावरण संरक्षण कर सकेंगे।

पर्यावरण के घटक

जो भी हम अपने आस पास देखते हैं वही सब हमारा पर्यावरण है। पर्यावरण अनेक प्राकृतिक एवं मानव निर्मित पदार्थों से मिलकर बना है।

पर्यावरण का निर्माण करने वाले पदार्थ (पर्यावरण के अंग)

- प्राकृतिक पदार्थ पर्वत, पठार, मैदान, नदियाँ, झीलें, पेड़, प्राणी आदि।
- मानव निर्मित वस्तुएँ सड़क, पुल, अस्पताल, विद्यालय, कार, कपड़े आदि।

इससे स्पष्ट है कि पर्यावरण का निर्माण करने वाले कुछ पदार्थों का निर्माण प्रकृति ने किया है और कुछ वस्तुओं का निर्माण मानव ने किया है।

पर्यावरण के घटक

पर्यावरण घटकों के तीन वर्ग

प्राकृतिक घटक	**मानव निर्मित घटक**	**मानव**
स्थल	भवन	व्यक्ति
जल	रेल	परिवार
वायु	पार्क	समुदाय
पेड़–पौधे एवं	पुल	धर्म
जीव–जन्तु	किले	शिक्षा
	स्कूल	आर्थिक
	सड़क	राजनैतिक
	स्मारक आदि	

क्रियाकलाप

प्रकृति निर्मित एवं मानव निर्मित वस्तुओं के चित्र संकलित करें।

6.1 पाठगत प्रश्न

निम्नलिखित खाली स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. स्थल पर्यावरण का .... घटक है।
2. स्कूल पर्यावरण का .... घटक है।

क्रियाकलाप –

अपने आसपास निम्नलिखित सूचनाओं को एकत्रित कीजिए–

1. विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधों के नाम
2. विभिन्न प्रकार के जानवरों के नाम
3. जानवरों के रहने के स्थान
4. जानवरों की दशा
5. विभिन्न तरह के पक्षियों के नाम

पर्यावरण के प्रकार

1. प्राकृतिक पर्यावरण
2. मानवीय पर्यावरण

प्राकृतिक पर्यावरण

जल एवं स्थल का वितरण

स्थल, जल, वायु, पेड़–पौधे एवं जीव–जन्तु मिलकर प्राकृतिक पर्यावरण बनाते हैं, अर्थात् पृथ्वी के चारों परिमण्डल मिलकर प्राकृतिक पर्यावरण का निर्माण करते हैं ये चार परिमण्डल हैं:–

1. स्थल मण्डल
2. जल मण्डल
3. वायु मण्डल
4. जैव मण्डल

1. स्थल मण्डल

पृथ्वी के ठोस और समुद्रतल से ऊपर निकले भागों को स्थलमण्डल कहते हैं। स्थल मण्डल में द्वीप, महाद्वीप, प्रायद्वीप, उप महाद्वीप आदि शामिल हैं। सम्पूर्ण पृथ्वी के लगभग 29 प्रतिशत भाग पर स्थल मण्डल का विस्तार है। यह चट्टानों तथा खनिजों से बना है। यह पर्वत, पठार, मैदान, घाटी जैसी विभिन्न स्थालाकृतियों वाला विषम धरातल है। स्थल हमें कृषि, पशुपालन, वन, चारागाह, अधिवासों, परिवहन, संचार, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा अन्य सेवाओं के लिए धरातल (भूमि) प्रदान करता है। इससे अनेक बहुमूल्य खनिजों की भी प्रप्ति होती है। इस प्रकार इसी धरातल पर मानव अपनी अनुक्रियाओं द्वारा मानवीय पर्यावरण का निर्माण करता है।

2. जल मण्डल

पृथ्वी का वह भाग जो जल से आवृत्त है, जल मण्डल कहलाता है। इसके अंतर्गत सागरों, महासागरों, झीलों, नदियों आदि को शामिल किया जाता है। जल मण्डल पृथ्वी के लगभग 71 प्रतिशत भाग पर विस्तृत है। जल मण्डल जैव मण्डल के विकास के लिए आवश्यक है। इसलिए तो कहा जाता है कि 'जल ही जीवन है।'

> **"क्या आप जानते हैं?**
> – स्थलीय भागों का अधिकतम विस्तार विषुवत वृत केउत्तर में है।"

3. वायु मण्डल

पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए वायु के विशाल आवरण को वायु मण्डल कहते हैं। वायु मण्डल पृथ्वी की गुरूत्वाकर्षण शक्ति के कारण उसके साथ संबद्ध है। "वायुमण्डल विभिन्न गैसों का मिश्रण है परन्तु इसमें गैसों के अतिरिक्त धूलकण, परागकण, नमक कण एवं जल वाष्प भी होता है। नाइट्रोजन (78%) और आक्सीजन (21%) गैसें वायुमण्डल में सबसे अधिक पाई जाती है।

वायु मण्डल ही सूर्य से आने वाली परावैंगनी किरणों को रोककर धरातल पर जैव मण्डल के अस्तित्व को सुरक्षित रखता है। मौसम, ऋतु एवं जलवायु वायुमण्डलीय परिस्थितियों का ही परिणाम है।

4. जैव मण्डल

वनस्पति जगत एवं प्राणी जगत मिलकर जैव मण्डल का निर्माण करते हैं। यह पृथ्वी का वह संकीर्ण क्षेत्र है जहाँ स्थल, जल एवं वायु मिलकर जीवन को संभव बनाते हैं।

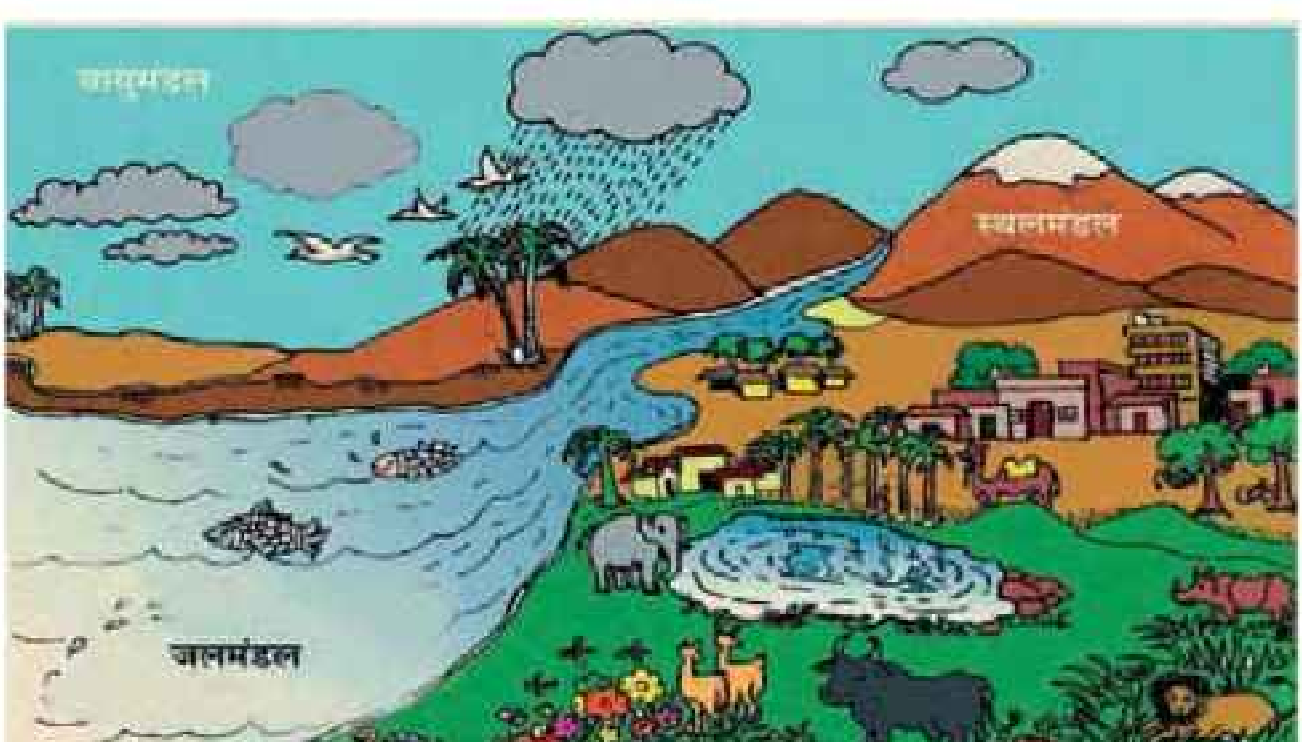

पृथ्वी के परिमंडल

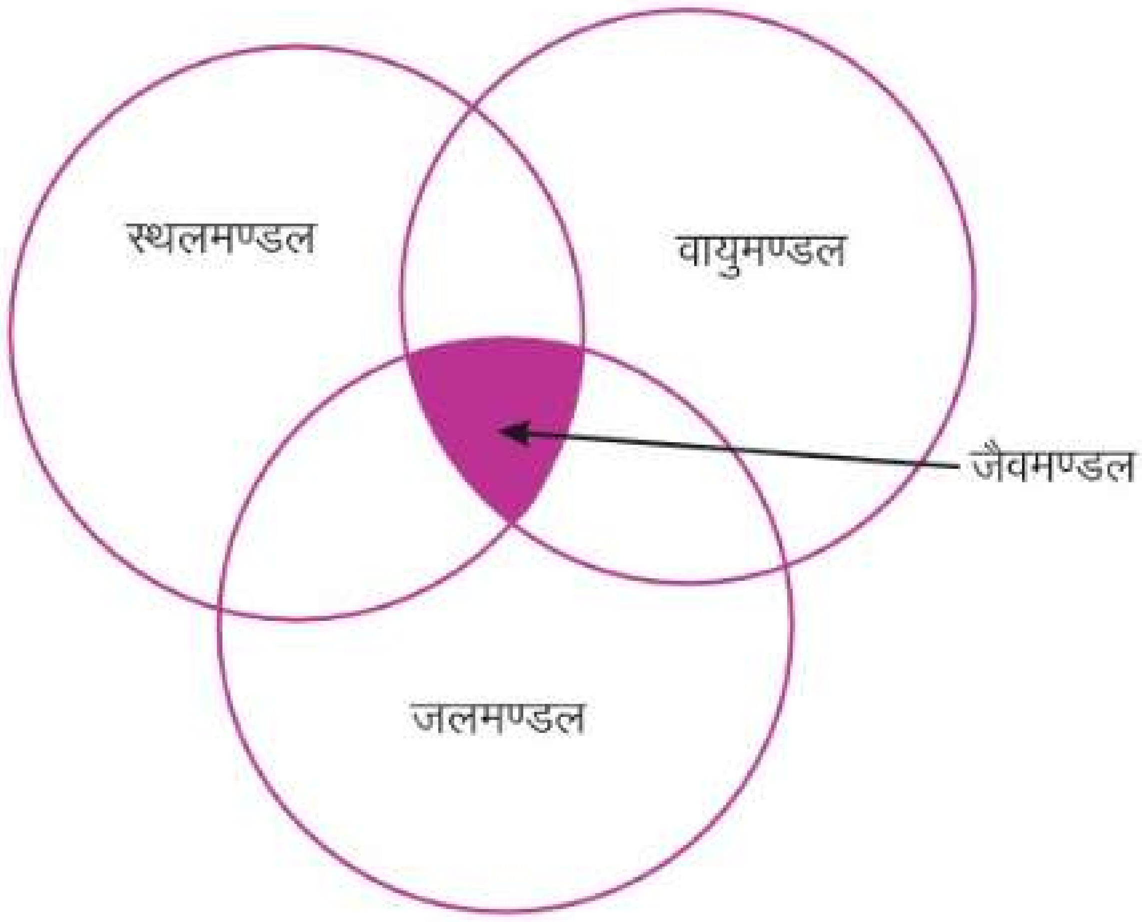

पर्यावरण के क्षेत्र

"क्या आप जानते हैं?
– ऑक्सीजन एक जीवनदायिनी गैस है, सामान्य व्यक्ति 180 सेकण्ड या 3 मिनट से अधिक ऑक्सीजन के बिना जीवित नहीं रह सकता।"

6.2 पाठगत प्रश्न

निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. पृथ्वी के लगभग .... भाग पर स्थल का विस्तार है।
2. पृथ्वी के लगभग .... भाग पर जल का विस्तार है।

मानवीय पर्यावरण

मानव एवं पर्यावरण में अटूट रिश्ता है। मनुष्य अपने पर्यावरण से प्रभावित होता है, साथ ही वह अपने पर्यावरण को भी प्रभावित करता है। आदिम मानव अपना जीवन प्रकृति के अनुसार व्यतीत करता था। ऐसा इसलिए संभव था कि आदिकाल में आवश्यकताएँ अत्यंत सीमित थी, जिन्हें वह प्रकृति से ही पूरा कर लेता था। समय के साथ मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ी और अपनी आवश्कयताओं की पूर्ति हेतु उसने प्रकृति द्वारा प्रस्तुत संभावनाओं का अपने कल्याण हेतु प्रयोग करना शुरू कर दिया। मानव, मानव समाज और मानव निर्मित वस्तुएँ जैसे– किला, पार्क, पुल, अस्पताल, स्कूल आदि मिलकर मानवीय पर्यावरण का निर्माण करते हैं।

पारितंत्र क्या है?

सभी प्रकार के पेड़–पौधे, जीव–जंतु एवं मानव अपने पर्यावरण पर आश्रित होते हैं। प्रायः वे एक–दूसरे पर भी निर्भर है।

'जीवधारियों का आपसी एवं अपने पर्यावरण के बीच का संबंध ही पारितंत्र का निर्माण करता है।

"क्या आप जानते हैं?
– "क्या आप जानते हैं?
– प्रत्येक वर्ष 5 जून को पर्यावरण दिवस मनाया जाता है।"

पर्यावरण असंतुलित क्यों हो रहा है?

हमारे प्राकृतिक पर्यावरण में बदलाव के लिए हमारी बढ़ती आवश्यकताएँ उत्तरदायी है। ये जरूरतें दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। जिससे मनुष्य तेजी से प्राकृतिक तत्वों का दोहन कर रहा है। कभी–कभी तो हम विकास के लिए प्राकृतिक तत्वों का इतना अधिक शोषण करते हैं कि वह नष्ट हो जाता है। यदि विकास कार्यों को विवेकपूर्ण तरीके से न किया जाए, तो पर्यावरणीय असंतुलन का खतरा पैदा हो सकता है। यह खतरा जैव जगत के लिए काफी नुकसान देह हो सकता है। अधिक जनसंख्या वृद्धि पर्यावरण के लिए ठीक नहीं है।

17 जून 2013 को हिमालय क्षेत्र (उत्तराखण्ड) में घटित होने वाली आपदा अत्यधिक मानवीय हस्तक्षेप का ही परिणाम है इस प्रकार की दुर्घटनाओं को रोकने के लिए विकास की सतत् पोषणीय अवधारणा को अपनाना चाहिए।

"क्या आप जानते हैं? – सतत् पोषणीय विकास का तात्पर्य है– जिसमें पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना तथा भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विकास कार्य किये जाते हैं।"

अभ्यास

1. सही उत्तर चिह्नित कीजिए–

   1. निम्न में से कौनसा प्राकृतिक पर्यावरण का घटक है?

      (क) किला (ख) नदी (ग) पार्क (घ) विद्यालय

   2. निम्न में से कौनसा मानवीय पर्यावरण का घटक नहीं है?

      (क) स्थल (ख) परिवार (ग) समुदाय

   3. निम्न में से कौनसा मानव निर्मित पर्यावरण है?

      (क) पर्वत (ख) सागर (ग) सड़क

   4. इनमें से, कौनसा पर्यावरण असंतुलन के लिए उत्तरदायी है?

      (क) पादप वृद्धि (ख) बढ़ती आवश्यकताएँ (ग) जनसंख्या वृद्धि

2. निम्नलिखित स्तंभों को मिलाकर सही जोड़े बनाइए–

(क) पर्यावरण	(1) पृथ्वी को घेरने वाला वायु का आवरण
(ख) जल मण्डल	(2) हमारे आस–पास का क्षेत्र
(ग) वायु मण्डल	(3) जल से आवृत्त क्षेत्र
(घ) जैव मण्डल	(4) वह संकीर्ण क्षेत्र जहाँ स्थल, जल व वायु पारस्परिक क्रिया करते हैं

3. निम्नलिखित में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

   1. जीवित प्राणी के चारों ओर की परिस्थितियों को .... कहते हैं।
   2. प्रतिवर्ष .... को पर्यावरण दिवस मनाया जाता है।
   3. मानव अपने पर्यावरण में अपनी आवश्यकतानुसार .... करता है।
   4. स्मारक .... निर्मित पर्यावरण का उदाहरण है।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए–

   1. अपने आस–पास पर्यावरण के घटकों को पहचान कर सूची तैयार कीजिए।।
   2. प्राकृतिक पर्यावरण और मानवीय पर्यावरण के दो–दो उदाहरण दीजिए।
   3. पर्यावरण संरक्षण क्यों आवश्यक हैं?

5. क्रियाकलाप– पर्यावरण संरक्षण कैसे करेंगे? अपने साथियों के साथ चर्चा कीजिए।

7 पृथ्वी का स्वरूप

अन्तरिक्ष में पृथ्वी के स्वरूप

प्रस्तावना

हमारी पृथ्वी सौर मण्डल का एक अनोखा ग्रह है। यह हमेशा परिवर्तनशील रहती है। इसके अन्दर और बाहर निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं। पृथ्वी पर बाहर होने वाले परिवर्तनों को तो हम आसानी से देख सकते हैं। परन्तु क्या कभी आपने सोचा है कि हमारी पृथ्वी अन्दर से कैसी है? क्या कभी आपने यह जानने की कोशिश की है कि हमारी पृथ्वी किन–किन पदार्थों से बनी है। वास्तव में पृथ्वी की आन्तरिक स्थिति की जानकारी प्राप्त करना एक कठिन कार्य है। पृथ्वी का आन्तरिक भाग मानव के लिए अदृश्य है। आज हम इस अध्याय में पृथ्वी की आंतरिक संरचना और शैलों के बारे में ही पढ़ेंगे।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के उपरान्त हम सीखेंगे–

- पृथ्वी की आन्तरिक संरचना
- शैलों के प्रकार
- शैलों के उपयोग
- शैलचक्र

पृथ्वी की आन्तरिक संरचना

हमारी पृथ्वी की संरचना प्याज की तरह कई सकेन्द्री परतों के रूप में हुई है। जो खोल की तरह एक दूसरे के ऊपर स्थित है। पृथ्वी के केन्द्र तक पहुँचने के लिए हमें लगभग 6371 किमी. की गहराई तक खोदना होगा जो बिलकुल ही असंभव कार्य है। अभी तक मानव ने तेल की खोज के लिए लगभग 6 किमी. तक की ही खुदाई की है। अभी तक विश्व की सबसे गहरी खदान भी दक्षिणी अफ्रीका में लगभग 4 किमी. तक ही गहरी है। अब प्रश्न यह उठता है कि पृथ्वी के अन्दर इतनी गहराई तक जाने के लिए क्या किया जाए। इस समस्या को हल करने में भूगोलवेत्ताओं और वैज्ञानिकों ने अनेकों प्रयास किए हैं। इन्होंने पृथ्वी की आन्तरिक संरचना की जानकारी के लिए बहुत से तरीकों का सहारा लिया है। भूवैज्ञानिकों ने भूकम्पीय तरंगों को पृथ्वी की आन्तरिक संरचना को जानने का सबसे सटीक प्रमाण माना है। इन्होंने अपने अध्ययन व विश्लेषण के आधार पर पृथ्वी को तीन बड़ी परतों में विभाजित किया है। इनको आप इस चित्र में आसानी से देख सकते हैं।

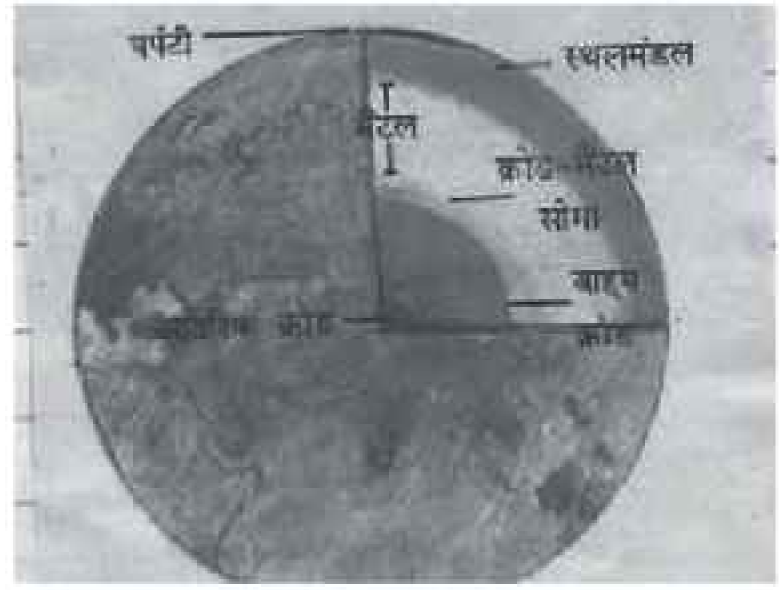

पृथ्वी की आन्तरिक संरचना

भूपर्पटी

यह पृथ्वी की सबसे ऊपरी परत है। पृथ्वी पर यह स्थल भाग व महासागरों के नीचे फैली है। इस परत में जल्दी टूटने की प्रवृति पायी जाती है। भूपर्पटी की मोटाई महाद्वीपों के नीचे व महासागरों के नीचे अलग–अलग है। महाद्वीपों पर इसकी मोटाई लगभग 30 किमी. और महासागरों के नीचे यह लगभग 5 किमी. मोटी है। पर्वतीय श्रृंखलाओं में इसकी मोटाई और भी अधिक लगभग 70 किमी. तक पायी जाती है। यह परत सिलिका और एल्युमिनियम जैसे हलके खनिजों से बनी है। इसलिए इस परत को **सिआल** नाम से भी जाना जाता है। इसका औसत घनत्व 3 ग्राम प्रति घन सेमी. है। यह पृथ्वी के ऊपर एक बहुत ही पतली व हलकी परत है।

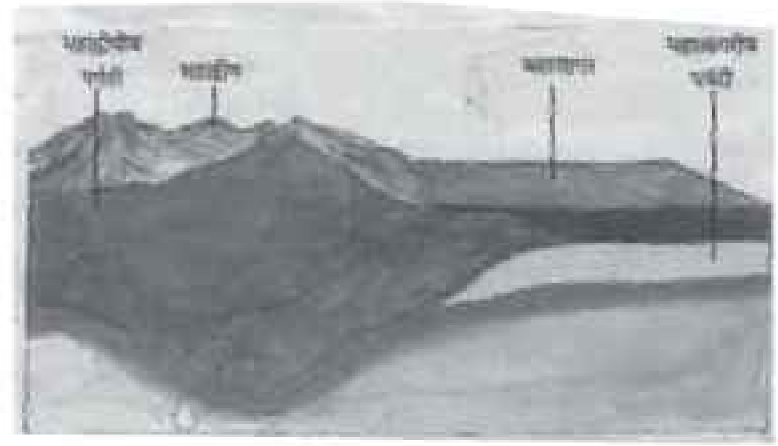
महाद्वीपीय पर्पटी एवं महासागरीय पर्पटी

मैंटल

पृथ्वी की यह परत भूपर्पटी के नीचे स्थित है। इसकी गहराई लगभग 2900 किमी. तक है। यह परत सिलिका और मेग्नेशियम जैसे खनिजों से बनी है। जो ऊपरी परत की अपेक्षा भारी है। इस परत को **सिमा** के नाम से भी जाना जाता है। इसका घनत्व भूपर्पटी से अधिक लगभग 5 ग्राम प्रति घन सेमी. तक है।

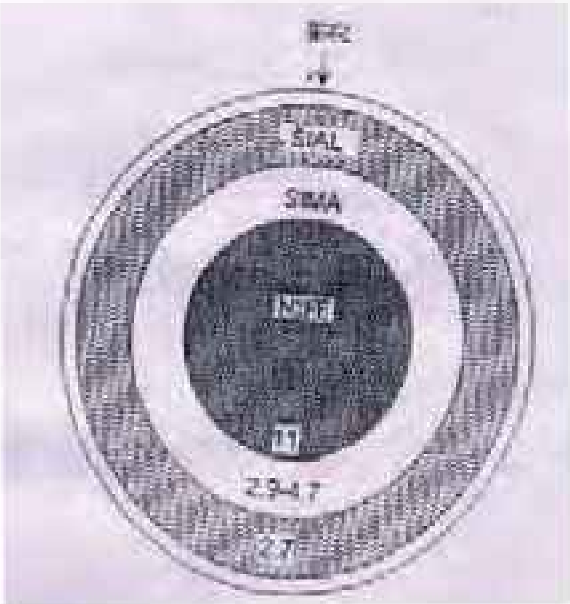

पृथ्वी की परतें

क्रोड़

यह पृथ्वी की सबसे अन्दर की परत है जो 2900 किमी. से शुरू होकर पृथ्वी के केन्द्र 6371 किमी. तक फैली है। यह बहुत ही भारी तत्वों से बनी है। इसलिए इसका घनत्व सबसे अधिक पाया जाता है। यह लोहे और निकिल जैसे भारी तत्वों से बनी है, इस परत का बाहारी भाग तरल (पिघली) अवस्था में है और आन्तरिक भाग ठोस है। इसका घनत्व 5 से लेकर 11 ग्राम प्रति घन सेमी. है। इसको **निफे** के नाम से भी जानते हैं।

क्रियाकलाप

1 पृथ्वी के आंतरिक भाग का एक स्वच्छ चित्र बनाइए और विभिन्न परतों के नाम लिखिए।

शैल (चट्टान)

पृथ्वी के आन्तरिक भाग को जानने के बाद हमारा ध्यान पृथ्वी के ऊपरी भाग पर जाता है। भूपर्पटी का जो भाग जल से ढका है उसे जल मण्डल कहते हैं। जल के ऊपर उठे भाग को स्थल मण्डल कहा जाता है। यह भूपर्पटी विभिन्न प्रकार की शैलों से बनी है। जिन खनिज पदार्थों से मिलकर भूपर्पटी बनी है उन्हें शैल कहा जाता है। भूपर्पटी को बनाने वाले खनिज पदार्थों के किसी भी प्राकृतिक पिंड को शैल कहते हैं। ये ग्रेनाइट की तरह कठोर, खड़िया तथा रेत की तरह मुलायम हो सकती है। ये विभिन्न रंगों की हो सकती है।

शैलों के प्रकार

शैलों की निर्माण प्रक्रिया के आधार पर शैलों को तीन वर्गों में बाँटा जाता है।

1. आग्नेय शैल
2. अवसादी शैल
3. कायान्तरित शैल

आग्नेय शैल

आग्नेय शैलों की उत्पत्ति गरम और तरल मैग्मा के ठंडा होने से हुई है। धरातल पर सबसे पहले इन्हीं शैलों का निर्माण हुआ है। इसलिए इन शैलों को प्राथमिक शैल भी कहा जाता है। ये शैल दो प्रकार की होती है। जब मैग्मा धरातल के अन्दर ही जमा होकर ठण्डा हो जाता है और ऊपर नहीं आ पाता तो इस प्रकार से बनी आग्नेय शैलों को **अन्तर्भेदी** आग्नेय शैल कहा जाता है। ग्रेनाइट इसका उदाहरण है। जब मैग्मा धरातल के ऊपर आकर ठन्डा हो जाता है तो इस प्रकार बनी आग्नेय शैलों को **बहिर्भेदी** आग्नेय शैल कहते हैं। इस प्रकार बनी शैल जल्दी ठन्डी हो जाती है, इसलिए इनमें रवे नहीं पाए जाते। बेसाल्ट इस प्रकार की शैल का उत्तम उदाहरण है। दक्कन का पठार बेसाल्ट शैलों का बना है।

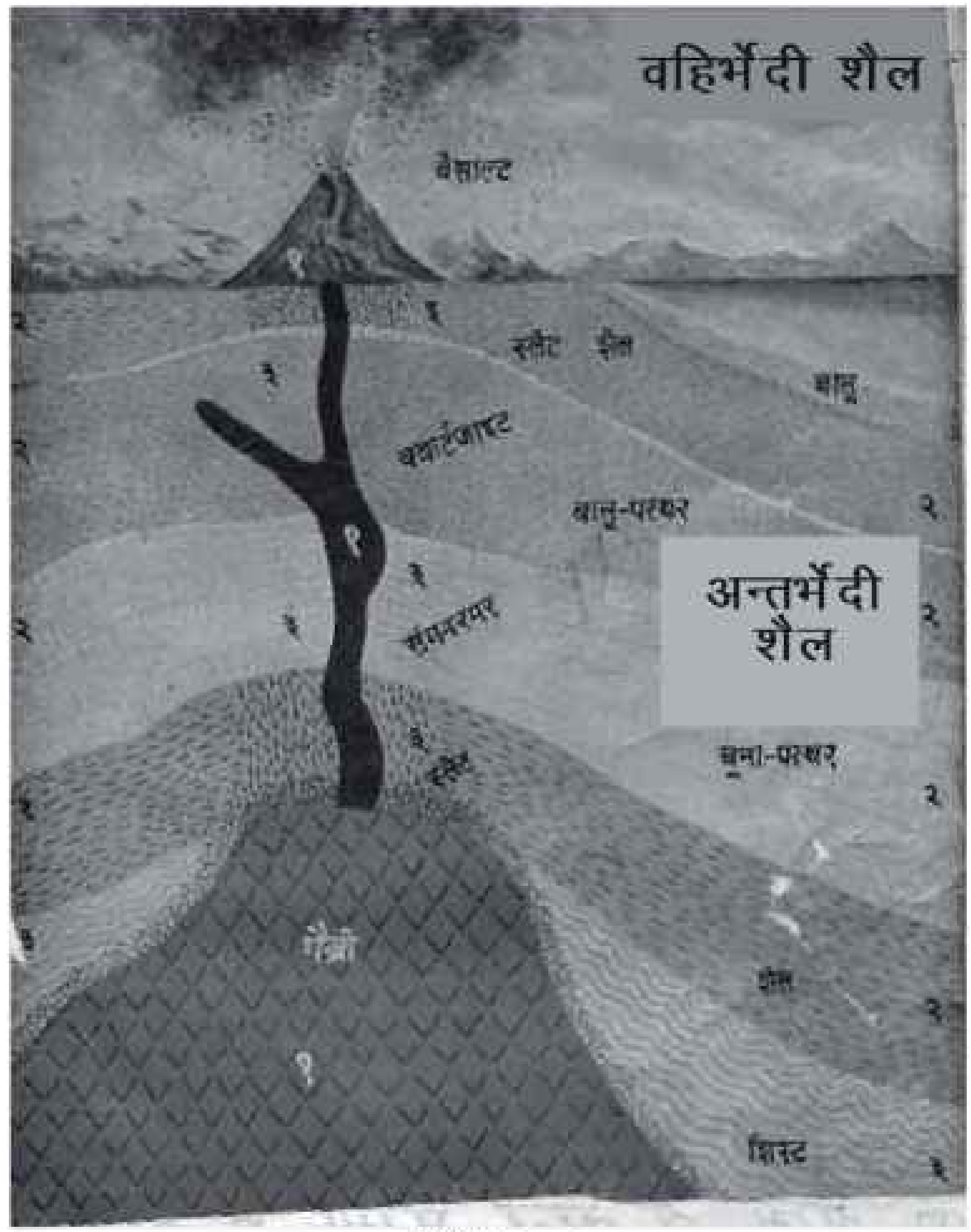

शैलों के प्रकार

अवसादी शैल

धरातल पर प्राकृतिक वाह्य कारक (जलवायु, हिम, लहरें आदि) लगातार चट्टानों (शैलों) का क्षरण करते रहते हैं। जिस कारण शैले टूटती फूटती रहती हैं। इस टूटे हुए मलबे को अवसाद कहते हैं। यह मलवा या अवसाद अपरदन के कारकों (पवन, जल, हिमानी) द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाकर जमा किया जाता है। समय के साथ यह जमा किया हुआ अवसाद एवं परतों के रूप में कठोर चट्टानों का रूप ले लेता है। ऐसी शैलों को अवसादी शैल कहा जाता है। ये शैल परतदार होती है और इनमें वनस्पति एवं जीव जन्तुओं के अवशेष भी मिलते रहते हैं। इसलिए इन शैलों में जीवाश्म पाए जाते हैं। धरातल का लगभग 80 प्रतिशत भाग इन्ही शैलों से बना है। बलुआ पत्थर इस प्रकार की शैल का उदाहरण है। इसी पत्थर से हमारा लाल किला बना है। चूना पत्थर, कोयला, डोलोमाईट अवसादी चट्टानों के अन्य उदाहरण है।

कायान्तरित शैल

धरातल पर एक तीसरे प्रकार की शैल भी पायी जाती है। इनका निर्माण अत्यधिक ताप एवं दाब द्वारा परिवर्तन होने से होता है। जब अवसादी या आग्नेय शैल उच्च ताप या दाब के कारण अपना रूप, रंग, गुण व संगठन बदल लेती हैं तो वे कायान्तरित शैल बन जाती हैं। कायान्तरित होकर ये पहले से अधिक कठोर हो जाती हैं। चूना पत्थर परिवर्तित होकर संगमरमर, चिकनी मिट्टी स्लेट, बलुआ पत्थर क्वार्टजाइट में बदल जाती है। विश्व प्रसिद्ध ताज महल ऐसी ही परिवर्तित शैल संगमरमर से बना है। नीचे दिए गए चित्रों में दबाव और ताप के कारण शैलों के कायान्तरण को दर्शाया गया है।

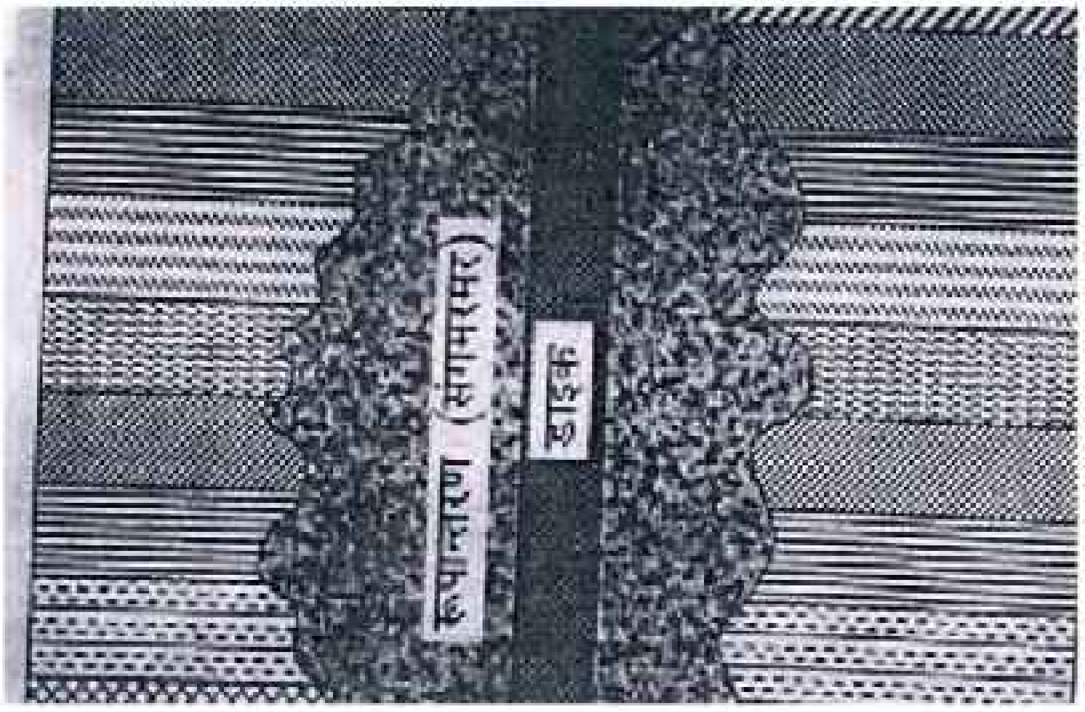

ताप से कायान्तरण

दबाव से कायान्तरण

शैल चक्र

एक शैल से दूसरी शैल में परिवर्तन धरातल पर चक्रीय रूप से चलता रहता है। आरम्भ में पृथ्वी आग का गोला थी और धीरे–धीरे ठण्डी हुई तो उस समय धरातल पर आग्नेय शैलों का निर्माण हुआ। फिर धीरे–धीरे ये शैल टूटने–फूटने लगी और मलबे में बदलने लगी। अपरदन के कारकों ने इनको एक स्थान से दूसरे स्थान पर जमा करके अवसादी शैलों का निर्माण किया। अधिक ताप व दाब के कारण ये आग्नेय और अवसादी शैल कायान्तरित शैल में परिवर्तित होने लगी। अत्यधिक ताप के कारण शैलें पिघलकर मैग्मा बनने लगती हैं। ये मैग्मा ठण्डा होकर आग्नेय शैलों का निर्माण करता है। यह परिवर्तन चक्रीय रूप में सदैव चलता रहता है, इसी को शैलचक्र कहते हैं। यह एक सतत् प्रक्रिया है, जिसमें पुरानी शैल अपना रूप बदलकर नई शैल में बदल जाती है। इस परिवर्तन से कोई भी शैल अपने मूल रूप में नहीं रहती।

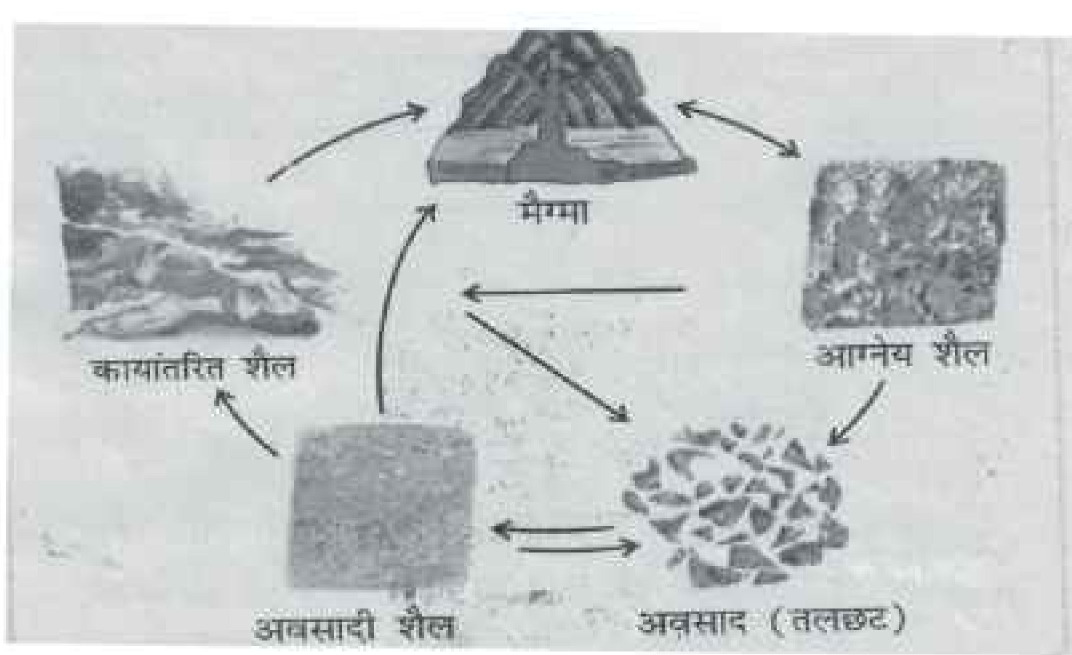

शैल चक्र

शैलों का उपयोग

शैलें पृथ्वी के धरातल का निर्माण करती है। इस धरातल पर ही सभी मनुष्य, जीव–जन्तु व पेड़–पौधे अपना जीवन चक्र पूरा करते हैं। इस का आधार शैलें ही होती हैं। मानव के जीवन में भी इन शैलों का बड़ा महत्व है। विभिन्न प्रकार के खनिजों की प्राप्ति इन शैलों से ही होती है। मकान, सड़कें, पुल, बाँध आदि का निर्माण इन शैलों से ही होता है। कोयला, गैस, खनिज तेल जैसे जीवाश्म ईंधन हमें शैलों से ही मिलते हैं। हमारे एतिहासिक स्थल, मन्दिर, मस्जिद सभी शैलों से ही बनाए जाते हैं।

7.2 पाठगत प्रश्न

1. शैलचक्र को चित्र द्वारा दर्शाइए।
2. आग्नेय शैलों की विशेषता बताइए।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर दीजिए।
    1. भूपर्पटी का अर्थ बताइए।
    2. पृथ्वी की तीन परतों के नाम लिखिए।
    3. शैल किसे कहते हैं?
    4. आग्नेय शैलों का अर्थ बताइए।
2. निम्नलिखित का उचित मिलान कीजिए–

(क) सिआल	(1) पृथ्वी की सबसे आन्तरिक परत
(ख) ग्रेनाईट	(2) अवसादी चट्टान
(ग) संगमरमर	(3) आग्नेय शैल
(घ) बलुआ पत्थर	(4) पृथ्वी की सबसे ऊपरी परत
(ड़) क्रोड	(5) कायान्तिरित शैल

3. निम्नलिखित खाली स्थानों को पूरा कीजिए–
    1. पृथ्वी की मध्यवर्ती परत का नाम .... है।
    2. अवसाद के जमा होने से बनी शैल को .... कहते हैं।
    3. चूना पत्थर कायान्तिरित होकर .... में बदलता है।
    4. पृथ्वी की सबसे आन्तरिक परत को .... कहते हैं।
    5. आग्नेय शैल .... के ठन्डा होने से बनती है।
4. चट्टानों के चार उपयोग लिखिए।
5. पृथ्वी के आन्तरिक संरचना की किस परत का घनत्व सबसे अधिक है?
6. स्वयं करके सीखें–
    1. घरेलू उपयोग में आने वाले खनिजों की सूची बनाइए।
    2. पृथ्वी की आन्तरिक संरचना का चित्र बनाइए।

8 पृथ्वी का बदलता स्वरूप

प्रस्तावना

पृथ्वी का स्वरूप निरंतर बदल रहा है। आज की पृथ्वी का स्वरूप वह नहीं है जो कल था। हवाएं हर रोज टनों मिट्टी एक जगह से उड़ाकर दूसरे स्थान पर जमा करती हैं। वर्षा का बहता पानी तथा नदी बड़ी मात्रा में पृथ्वी के धरातल को काटकर बहा ले जाती हैं और जहाँ उसकी गति कम होती है वहाँ उस पदार्थ को छोड़ देती है। सागर में गिरने से पहले प्रायः नदी डेल्टा बनाती है। 16 व 17 जून 2013 में उत्तराखण्ड राज्य के केदारनाथ पर्वतीय क्षेत्र में तेज वर्षा से चट्टानों के खिसकने एवं पर्वतों के टूटने से नदी में बाढ़ आने पर किस प्रकार उस क्षेत्र के धरातल का स्वरूप बदल गया। बड़े पैमाने पर जान माल का नुकसान हुआ।

इसी प्रकार आकस्मिक भूकम्प एवं ज्वालामुखी विस्फोट से पृथ्वी के किसी न किसी क्षेत्र में रोज परिवर्तन आ रहा है। करोड़ों वर्ष पूर्व पृथ्वी पर एक ही महाद्वीप था जो एक महासागर से घिरा था। आज पृथ्वी पर सात महाद्वीप एवं पाँच महासागर पृथ्वी के बदलते स्वरूप के गवाह हैं। अंतर्जनित हलचल के कारण पृथ्वी का कोई भाग ऊपर उठ गया है जबकि कोई भाग नीचे धंस गया है। पृथ्वी के स्वरूप में परिवर्तन की गति मंद होने के कारण हमें अपने जीवन में लगता है कि कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ है।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद हम जानेंगे–

1. पृथ्वी पर स्थल मंडल, जल मंडल एवं वायु मंडल की जानकारी।
2. पृथ्वी के स्वरूप के बदलने में लगने वाले अंतर्जनित तथा बहिर्जनित बलों की जानकारी।
3. अंतर्जनित बलों के रूप में ज्वालामुखी एवं भूकम्प की जानकारी।
4. बहिर्जनित बलों में नदी के कार्य, महासागरीय तरंगे तथा जलधाराओं की जानकारी।
5. महासागरों में ज्वार भाटा की जानकारी।
6. वायु मंडल का संगटन एवं संरचना का ज्ञान।

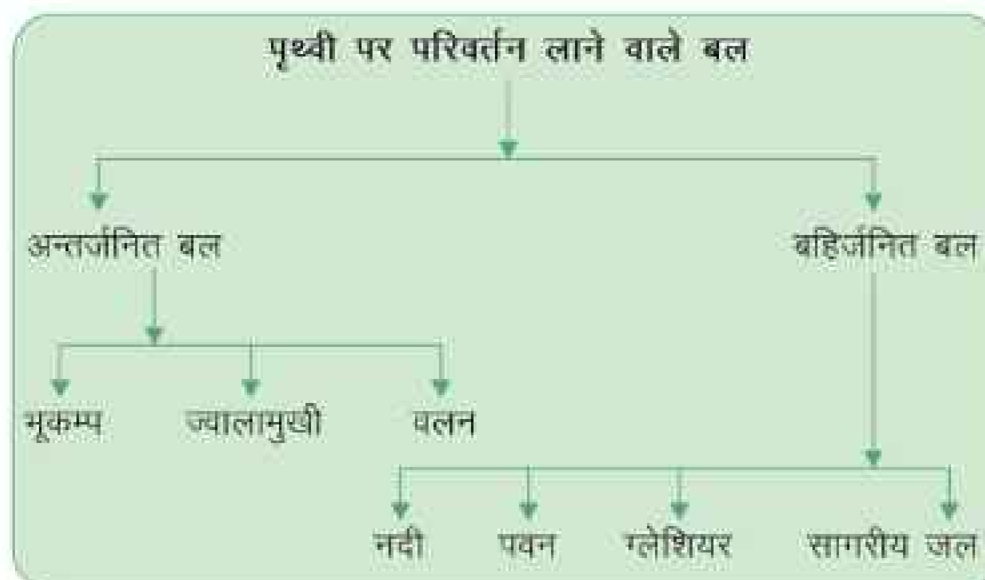

स्थलमंडल

स्थलमंडल अनेक प्लेटों में विभाजित है। इन प्लेटों को स्थलमंडलीय प्लेट कहते हैं। ये प्लेटें पृथ्वी के भीतर पिघले मैग्मा पर तैरती रहती है तथा धीमी गति से गतिमान रहती हैं। पृथ्वी के धरातल पर परिवर्तन लाने में दो प्रकार के बल कार्य करते हैं अर्न्तजनित और बहिर्जनित बल जो बल पृथ्वी के आंतरिक भाग में कार्य करते हैं उन्हें अंतर्जनित बल कहते हैं तथा दूसरा बल जो धरातल पर कार्यरत हैं उन्हें बहिर्जनित बल कहते हैं। स्थलमंडल एक साथ जुड़ा हुआ नहीं है बल्कि अंतर्जनित बलों के कारण अलग–अलग खंडों में बँटा है। छोटे स्थलखंड जो चारों ओर से जल से घिरे होते हैं उन्हें द्वीप कहते हैं जैसे– श्रीलंका, मालदीव आदि। स्थलखण्ड के विशाल भूखण्डों को जो महासागर से घिरे होते हैं उन्हें महाद्वीप कहते हैं। पृथ्वी पर एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया, तथा अंटार्कटिका सात महाद्वीप हैं। इनमें एशिया सबसे बड़ा जबकि आस्ट्रेलिया सबसे छोटा महाद्वीप है। अंटार्कटिका महाद्वीप पर मानव निवास नहीं है क्योंकि वहाँ वर्ष भर बर्फ की मोटी परत जमी रहती है। स्थलमंडल विभिन्न प्रकार की शैलों (चट्टानों) से बने होते हैं। इस पर पर्वत, पठार तथा मैदान मौजूद हैं। मानव की सभी क्रियाकलाप स्थलमंडल पर होते हैं यथा कृषि, उद्योग, बस्ती, सड़क आदि। आइए पृथ्वी पर लगने वाले बलों को विस्तार से देखें।

अंतर्जनित बल

अंतर्जनित बल कभी धीमी गति तो कभी आकस्मिक गति से कार्य करते हैं। धीमी गति से इन बलों से पृथ्वी के धरातल का कोई भाग नीचे धंस जाता है। देखिए चित्र में रिफ्ट घाटी का बनना। जबकि कोई भाग ऊपर उठ जाता है देखिए चित्र में खंड पर्वत (ब्लॉक पर्वत) का उठना। धरातल के नीचे धंसने के कारण ही महाबलीपुरम् का मंदिर समुद्र में देखा जा सकता है। धीमी गति के कारण शैलों में मोड़ पड़ जाते हैं जिन्हें वलन कहा जाता है। नीचे दिए गए चित्रों से समझ सकते है। आकस्मिक गति के कारण ज्वालामुखी तथा भूकम्प धरातल पर जल्दी परिवर्तन लाते हैं।

रिफ्ट घाटी

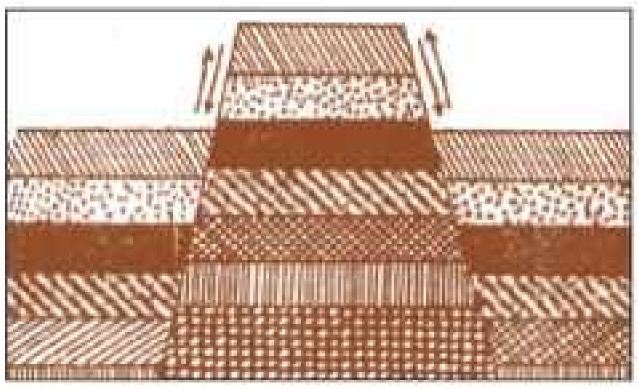

खंड पर्वत

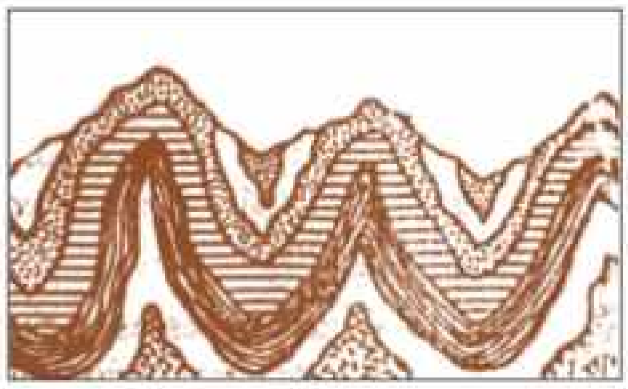

वलन

अंतर्जनितबल

ज्वालामुखी

पृथ्वी के धरातल के नीचे से किसी द्वार या छिद्र द्वारा गर्म तप्त मैग्मा राख, शैलों के टूकड़े, गैसें तथा जलवाष्प के धीरे–धीरे अथवा तेजी से धरातल से बाहर निकलने की क्रिया को 'ज्वालामुखी' कहते हैं। बाहर आने पर गर्म तप्त मैग्मा को लावा कहते हैं जैसा कि चित्र से स्पष्ट है।

यदि लावा पतला है तो धरातल पर बड़े क्षेत्र में फैल जाता है तथा यदि वह गाढ़ा है तो धरातल पर पर्वत के रूप में उभर आता है। प्रशान्त महासागर के तटीय क्षेत्र में ज्वालामुखी विस्फोट होते रहते हैं। इस क्षेत्र को रिंग ऑफ फायर या अग्नि वलय कहते हैं।

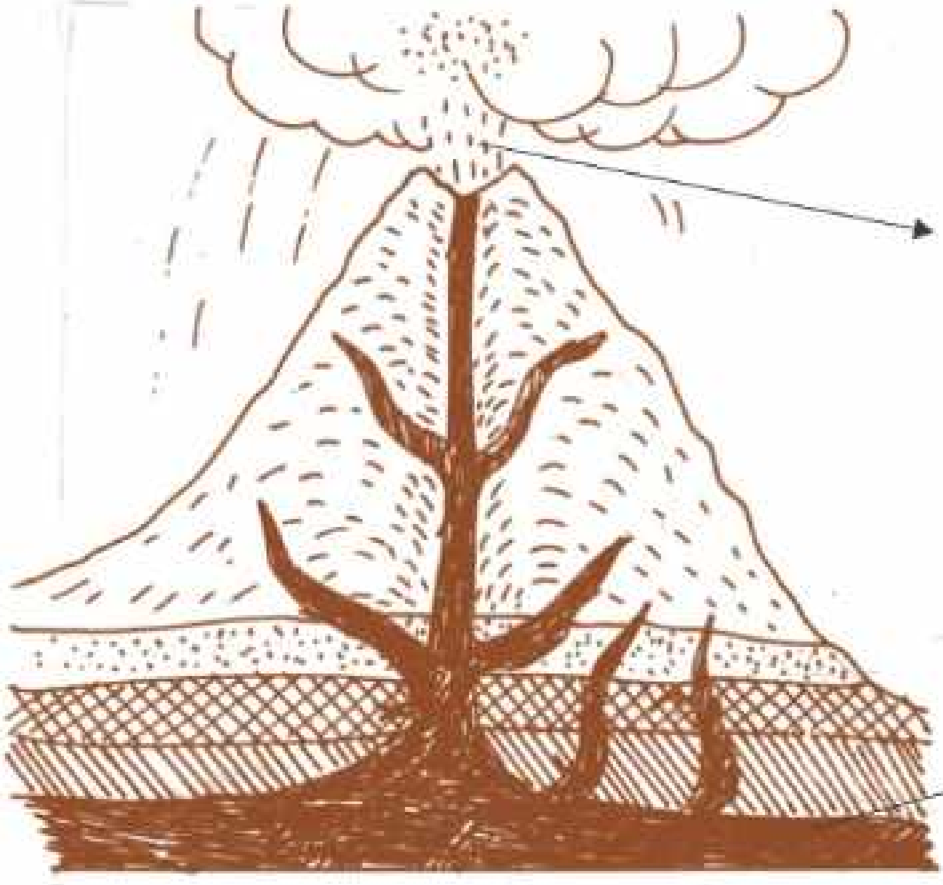

ज्वालामुखी

8.1 पाठगत प्रश्न

1. पृथ्वी पर परिवर्तन लाने वाले बलों के नाम बताइए।
2. पृथ्वी के किस क्षेत्र में ज्वालामुखी अधिक आते हैं?

"क्या आप जानते हैं? –

1. कुछ ज्वालामुखी सक्रिय होते हैं जिनमें विस्फोट समय–समय पर होता रहता है।
2. जब मानव जीवन के लम्बे इतिहास में किसी ज्वालामुखी में विस्फोट नहीं हुआ है तो इन्हें विलुप्त या मृत ज्वालामुखी कहते हैं।
3. कुछ ज्वालामुखी ऐसे हैं जिनमें बहुत लंबे अंतराल के बाद कभी एक या दो बार उनसे लावा निकलता है, ऐसे ज्वालामुखी को सुप्त ज्वालामुखी कहते हैं।
4. भारत के दक्कन पठार की काली मिट्टी ज्वालामुखी से निकली लावा से बनी है।"

भूकम्प

भूकम्प के झटकों के विषय में टेलीविजन या अखबारों में प्रायः कभी न कभी जानकारी दी जाती है। कई बार हमने स्वयं भी पृथ्वी पर कम्पन्न महसूस किए हैं तथा घर में लटके पंखों या खिड़कियों को स्वतः ही हिलते देखा है। पृथ्वी के धरातल के हिलने या कांपने को भूकम्प कहते हैं। स्थलमंडल की प्लेटों के एक–दूसरे के साथ टकराने पर भूकम्प आते हैं। धरातल के नीचे वह स्थान जहाँ पर कम्पन्न शुरू होता है उसे 'भूकम्प केन्द्र या उदगम केन्द्र' कहते हैं। भूकम्पीय तरंगे सबसे पहले धरातल के जिस स्थान पर पहुँचती हैं उसे भूकम्प का 'अधिकेन्द्र' कहते हैं जैसा कि नीचे दिए गए चित्र में दर्शाया गया है। अधिकेन्द्र एवं इसके निकटत्तम भाग में भूकम्प से सर्वाधिक हानि होती है तथा अधिकेन्द्र से दूरी बढ़ने के साथ भूकम्प की तीव्रता धीरे–धीरे कम होती जाती है। भूकम्प का मापन भूकम्पमापी यंत्र से किया जाता है। अधिक तीव्रता वाले भूकम्प बहुत विनाशकारी होते हैं। गुजरात राज्य के भुज क्षेत्र में भूकम्प की तीव्रता 6.9 पैमाने पर थी जिससे बहुत अधिक हानि हुई थी। भूकम्प के बाद के दृश्य को चित्र में दर्शाया गया है।

भूकम्प के बाद का दृश्य

सर्वाधिक भूकम्प प्रशान्त महासागर के तटीय क्षेत्रों जैसे जापान, फिलिपिन्स आदि में आते हैं।

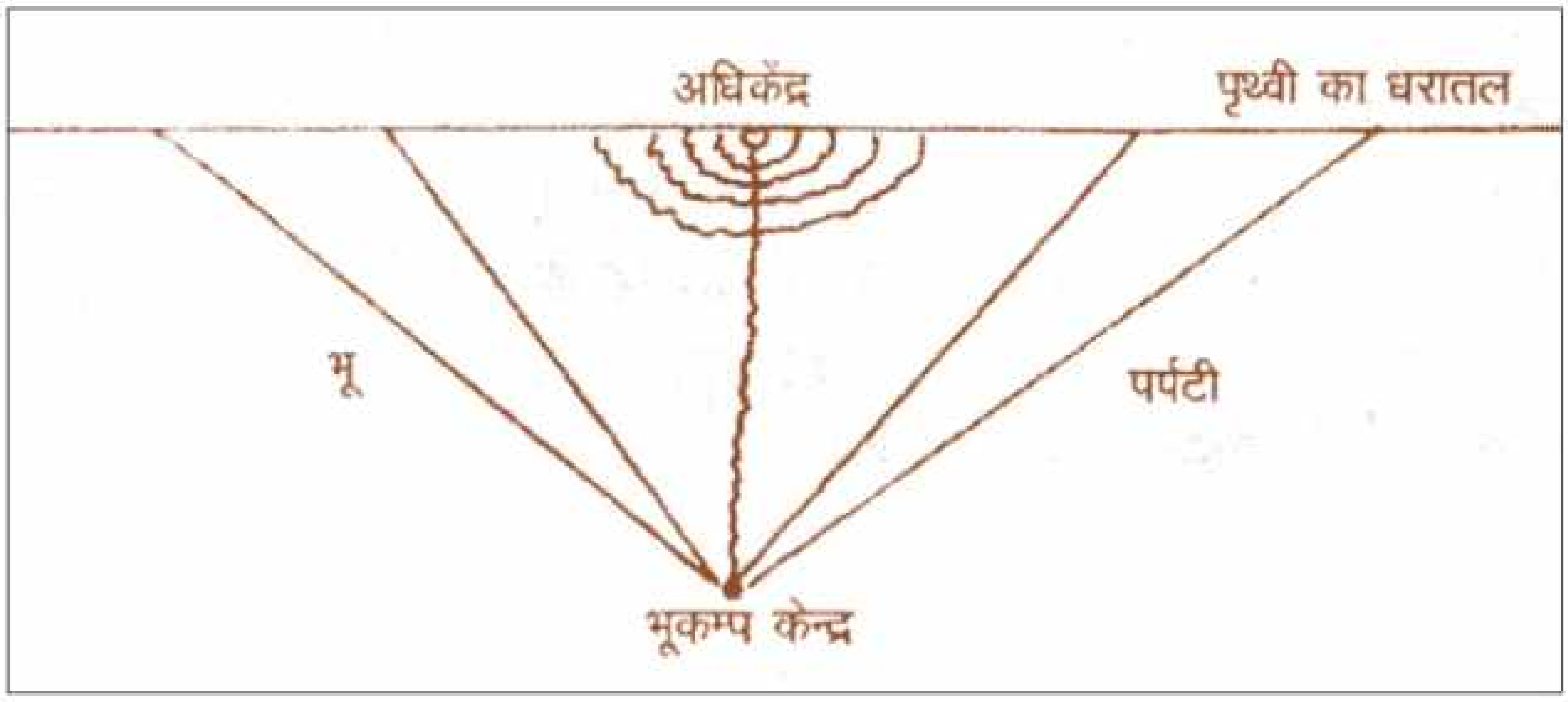

8.2 पाठगत प्रश्न

1. भूकम्प किसे कहते हैं?
2. पृथ्वी के किस क्षेत्र में सर्वाधिक भूकम्प आते हैं?

"क्या आप जानते हैं? –

1. भूकम्प की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर मापी जाती है।
2. जिन भूकम्पों की तीव्रता 2 या इससे कम होती है उनका प्रायः कोई प्रभाव नहीं होता है।
3. तीव्रता 5 होने पर वस्तुएं गिरने लगती है।
4. तीव्रता 6 या अधिक होने पर बहुल विनाशकारी होती है जिनसे सड़कों में दरार पड़ना, रेलवे लाइन का टेढ़ा मेढ़ा होना, बड़े भवनों को हानि करना, समुद्री क्षेत्र में सुनामी तरंगों का आना आदि।

बहिर्जनित बल

आइए, अब पृथ्वी धरातल पर बहिर्जनित बलों के प्रभाव को देखें। सभी बहिर्जनित बल अपक्षयित धरातल को काटते हैं जिसे अपरदन कहते हैं। इस अपरदित धरातलीय पदार्थ को दूसरे स्थान पर ले जाते हैं, इसे परिवहन कहते हैं। तथा उस पदार्थ को कहीं छोड़ देते हैं। इसे निक्षेपण कहते हैं। यहाँ बहिर्जनित बलों के रूप में नदी एवं महासागरीय तरंगों के कार्य के विषय में जानेंगे।

नदी के कार्य

नदी की उत्पत्ति प्रायः किसी पर्वत या उच्च भूमि से होती है। नदी में पानी वर्षा या हिमानी के पिघलने से प्राप्त होता है। नदी जल अपने रास्ते में आयी अपक्षय हुई शैलों का अपरदन करती है। नदी के मार्ग में कठोर शैलों के लगातार अपरदन से नदी सकरी घाटी बनाती हैं। नदी घाटी वी (V) आकार की होती है। नदी किसी खड़े ढ़ाल वाले स्थान से अति कठोर शैल या खडे ढाल वाली घाटी में गिरती हैं तो वह जलप्रपात बनाती है।

नदी जब समतल तथा सपाट क्षेत्र में आती है तो उसकी गति कम हो जाती है। ऊँचे क्षेत्रों से लाए अपरदित पदार्थ का यह निक्षेपण करती है तथा मोड़दार मार्ग पर चलती है। नदी के इन बड़े मोड़ों को विसर्प कहते हैं। नदी के विसर्पाकार मार्ग को (देखिए चित्र में) विसर्प के किनारों पर अपरदन एवं निक्षेपण से विसर्पो में और अधिक मोड़ के कारण निकट आ जाते हैं। धीरे–धीरे यह अधिक मोड़ वाले विसर्प कट जाते हैं और कटे विसर्प पर झील बन जाती है। इन्हें चाप झील या गोखुर झील कहते हैं। (देखिए चित्र में) समुद्र तक पहुँचते–पहुँचते नदी का प्रवाह और धीमा हो जाता है तथा नदी अनेक शाखाओं में बंट जाती है। इनको वितरिका कहते हैं। नदी की धीमी गति से इसमें लाए मलवे को आगे ले जाने के बजाय निक्षेपण करती है तथा इस निक्षेपण से नदी डेल्टा बनाती है। देखिए चित्र डेल्टा में।

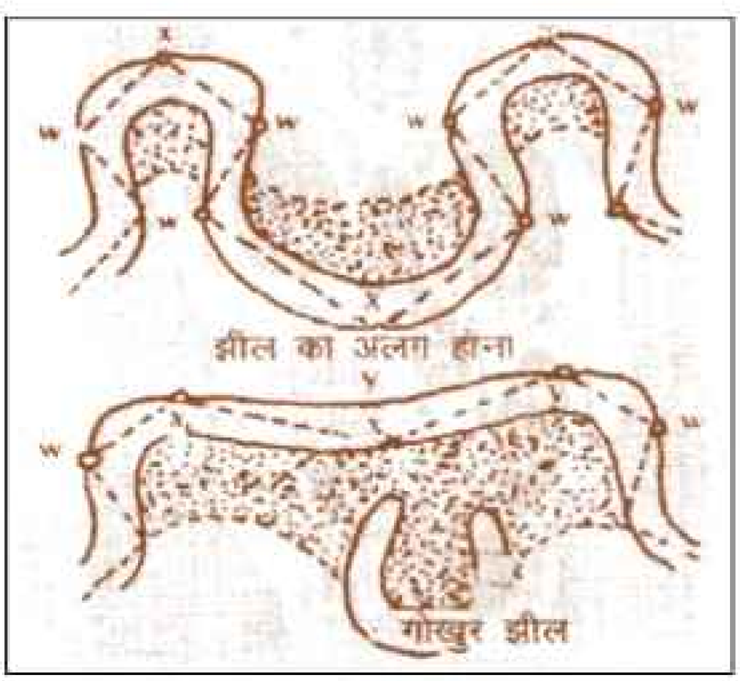

गोखुर झील

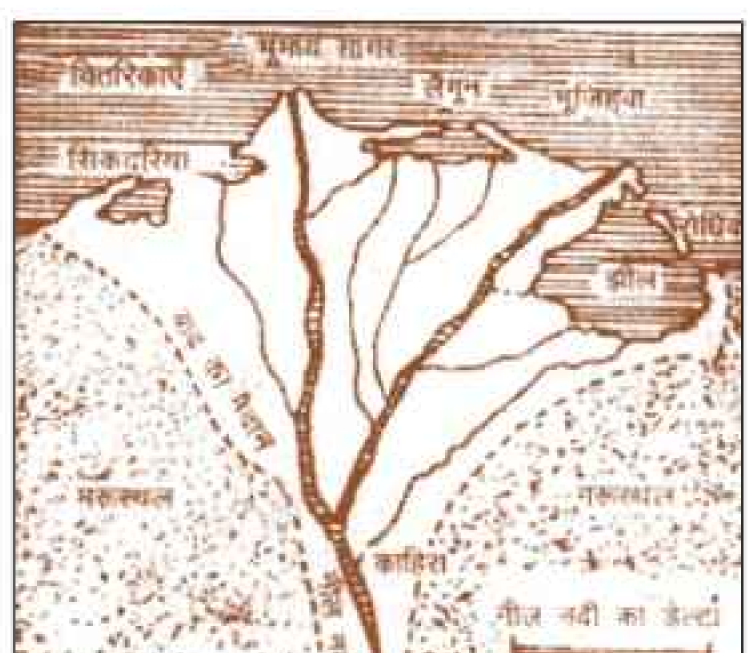

डेल्टा

8.3 पाठगत प्रश्न

1. जल प्रपात कैसे बनता है?
2. डेल्टा का निर्माण कैसे होता है?

जलमंडल

पृथ्वी का 71 प्रतिशत भाग जल से घिरा हुआ है। इसे जलमंडल कहते हैं। जल की अधिकता के कारण पृथ्वी को नीला/जलीय ग्रह कहते हैं। पृथ्वी धरातल पर जलमंडल कई बड़े–बड़े क्षेत्रों में फैला हुआ है। जल के विशाल क्षेत्र जो महाद्वीपों से घिरा होता है उसे महासागर कहते हैं। जबकि अपेक्षाकृत छोटे जल क्षेत्रों को सागर कहते हैं। पृथ्वी पर प्रशान्त, अटलांटिक, हिन्द, आर्कटिक तथा एंटार्कटिक पाँच महासागर हैं।

महासागरों तथा सागरों का जल अधिक लवणता के कारण खारा होता है। प्रशान्त महासागर सबसे बड़ा एवं सबसे अधिक गहरा है। हिन्द महासागर ही एकमात्र महासागर है जिसका नामकरण किसी देश (हिन्दुस्तान) के नाम पर पड़ा। आर्कटिक महासागर में उत्तरी ध्रुव स्थित है। एक महासागर का जल दूसरे महासागर से मिला हुआ है।

यह भी जानिए

प्रशान्त महासागर में 11033 मीटर गहरा जल का सबसे गहरा गर्त है। इसे मेरियाना गर्त कहते हैं।"

महासागरीय तरंग के कार्य

सागरों की समतल सतह पर पवनों के चलने से तरंगें पैदा होती है। ये तरंगे सागर तट की शैलों से टकराती हैं और अपरदन एवं निक्षेपण करती हुई सागर तट पर परिवर्तन लाती है। तरंगों के टकराने से शैलों में दरार पड़ जाती है जो लगातार चौड़ी होती जाती है जिससे समुद्री गुफा, पुल आदि बन जाते है। जब गुफा तथा पुल की छत टूट जाती है तो स्तम्भ बन जाते है। तट की शैलों के टूटने एवं छोटे–छोटे कण सागर के पानी के साथ बहकर तथा तरंग उन्हें पुनः तट के आस पास फैला देती है तथा बालू का मैदान बन जाता है। इस प्रकार निक्षेपण से बालू तट या बीच बन जाता है। । तरंगों द्वारा निक्षेपण से बालू की दीवार के कारण तट पर सागर का पानी एक झील के रूप में बंद हो जाता है। सागर तट पर इस प्रकार की खारे पानी की झील को लैगून कहते हैं। भारत में उड़ीसा की चिल्का झील, आंध्र प्रदेश की पुलिकट झील इसी प्रकार बनी लैगून है।

गर्म जल धाराएं – 1. .... 2. .... 3. ....

ठंडी जल धाराएं– 1. .... 2. .... 3. ....

महासागरीय धाराएँ

महासागरीय धाराएँ एक निश्चित दिशा में सागर की सतह पर नियमित रूप से बहने वाली जल की धाराएँ होती है। जल के इस प्रकार चलने का कारण है सागर जल में लवणता में अंतर तथा जल में तापमान का अंतर। धाराएँ गर्म एवं ठंडी होती हैं। गर्म धाराएँ भूमध्य वृत के निकट से ध्रुवीय क्षेत्र की ओर बहती है। गल्फ स्ट्रीम एक गर्म सागरीय धारा है। ठंडी जल धाराएँ ध्रुवीय क्षेत्रों से भूमध्य वृतीय क्षेत्र की ओर बहती है। लेब्राडोर एक ठंडी जलधारा है (देखिए चित्र में)। गर्म जलधारा जिस क्षेत्र से गुजरती है वहाँ का तापमान बढ़ा देती है जबकि ठंडी जलधारा उस क्षेत्र का तापमान कम कर देती है। जिस स्थान पर गर्म एवं ठंडी जलधाराएँ मिलती हैं वहाँ मछली उत्पादन सर्वाधिक होता है। जैसे उत्तरी अमेरिका का पूर्वी तट। एटलस की सहायता से गर्म और उस ठंडी जलधाराओं को पहचान कर लिखिए।

8.4 पाठगत प्रश्न

1. एक गर्मजलधारा तथा एक ठंडी जलधारा का नाम बताइए।
2. महासागर में जलधाराएँ क्यों बहती है?

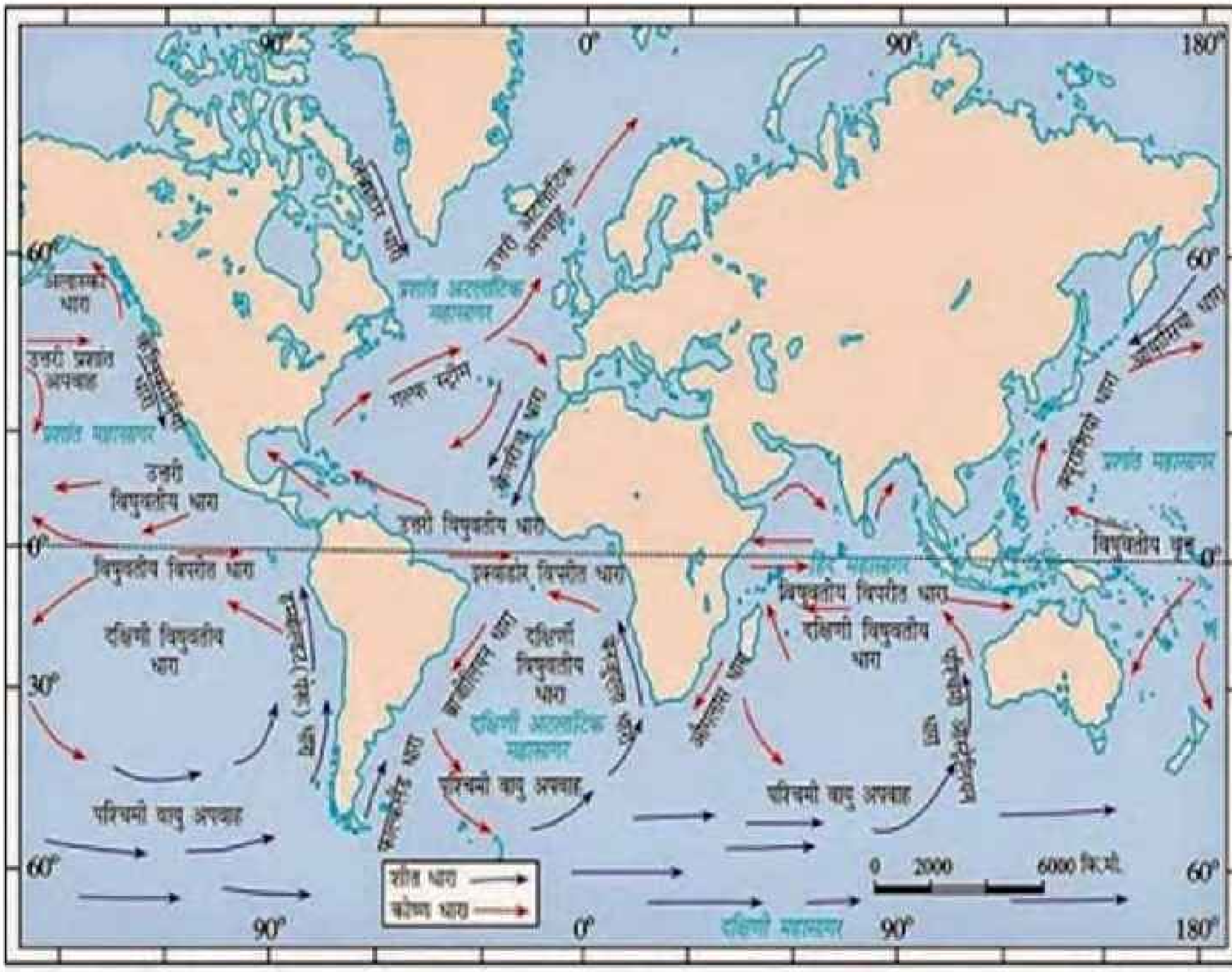

महासागरीय धाराएं

ज्वार–भाटा

सूर्य एवं चन्द्रमा की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण सागरीय जल के नियमित रूप से ऊपर उठने एवं नीचे गिरने की क्रिया को ज्वार–भाटा कहा जाता है। चन्द्रमा सूर्य से आकार में छोटा होने के बावजूद अपेक्षाकृत अधिक नजदीक होने के कारण सूर्य की तुलना में अधिक आकर्षण बल पृथ्वी पर डालता है।

जब सूर्य एवं चन्द्रमा एक सीध में होते हैं तो दोनों की आकर्षण शक्ति सम्मिलित रूप से कार्य करती है। जिसके कारण वृहत्ज्वार की उत्पति होती है जो सामान्य ज्वार से 20% अधिक ऊँचा होता है। इस समय भाटा की निचाई सबसे कम होती है। यह स्थिति प्रत्येक आमावस्या एवं पूर्णिमा को होती है।

प्रत्येक माह की शुक्ल पक्ष एवं कृष्ण पक्ष की सप्तमी एवं अष्टमी को सूर्य, पृथ्वी एवं चन्द्रमा समकोणिक स्थिति में होते हैं। फलस्वरूप सूर्य एवं चन्द्रमा के ज्वारोत्पादक बल एक दूसरे के विपरित कार्य करते हैं जिसके कारण सामान्य ज्वार से भी नीचा ज्वार आता है। जिसे लघु ज्वार कहते हैं। जो सामान्य ज्वार से 20% नीचा होता है। जब किसी स्थान पर दिन में एक बार ज्वार–भाटा आता है तो उसे दैनिक ज्वार–भाटा कहा जाता है। यह 24 घन्टे 52 मिन्ट के अन्तर पर आता है।

वृहत ज्वार नौ संचालन में जहाज को बंदरगाह पर पहुँचने में सहायक होते हैं। वृहत् ज्वार के दौरान मछलियाँ तट के निकट आने से उन्हें पकड़ने में कठिनाई नहीं होती है। ज्वार–भाटा के समय जल के उतार–चढ़ाव से विद्युत उत्पन्न की जा सकती है जिसे ज्वारीय ऊर्जा कहते हैं।

8.5 पाठगत प्रश्न

1. ज्वार किसे कहते हैं?
2. वृहत ज्वार–भाटा किस समय आते हैं?

वायुमंडल

पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए गैसों के आवरण को वायुमंडल कहते हैं। वायुमंडल जीवन के लिए उचित तापमान व गैसें प्रदान करता है।

वायुमंडल का संगठन

वायुमंडल विभिन्न गैसों, जलवाष्प तथा धूलकणों से बना है। इनकी मात्रा में स्थानीय रूप से परिवर्तन होता रहता है। वायुमंडल में 78 प्रतिशत नाइट्रोजन, 21 प्रतिशत ऑक्सीजन गैसें हैं। शेष 1 प्रतिशत में 0.93 प्रतिशत आर्गन, 0.03 प्रतिशत कार्बन–डाई–ऑक्साइड तथा शेष 0.04 प्रतिशत में हीलियम, हाइड्रोजन, जलवाष्प आदि मौजूद हैं। वायुमंडल में जल के गैसीय रूप को जलवाष्प कहते हैं। जलवाष्प की मात्रा सागर, झील, नदी एवं नहर के पास अधिक होती है जबकि रेगिस्तानी क्षेत्रों में बहुत कम। ठोस रूप में धूलकण, धुँआ आदि वायुमंडल की निचली परत तक सीमित हैं। रेगिस्तानी व शुष्क क्षेत्रों में धूलकण अधिक होते हैं।

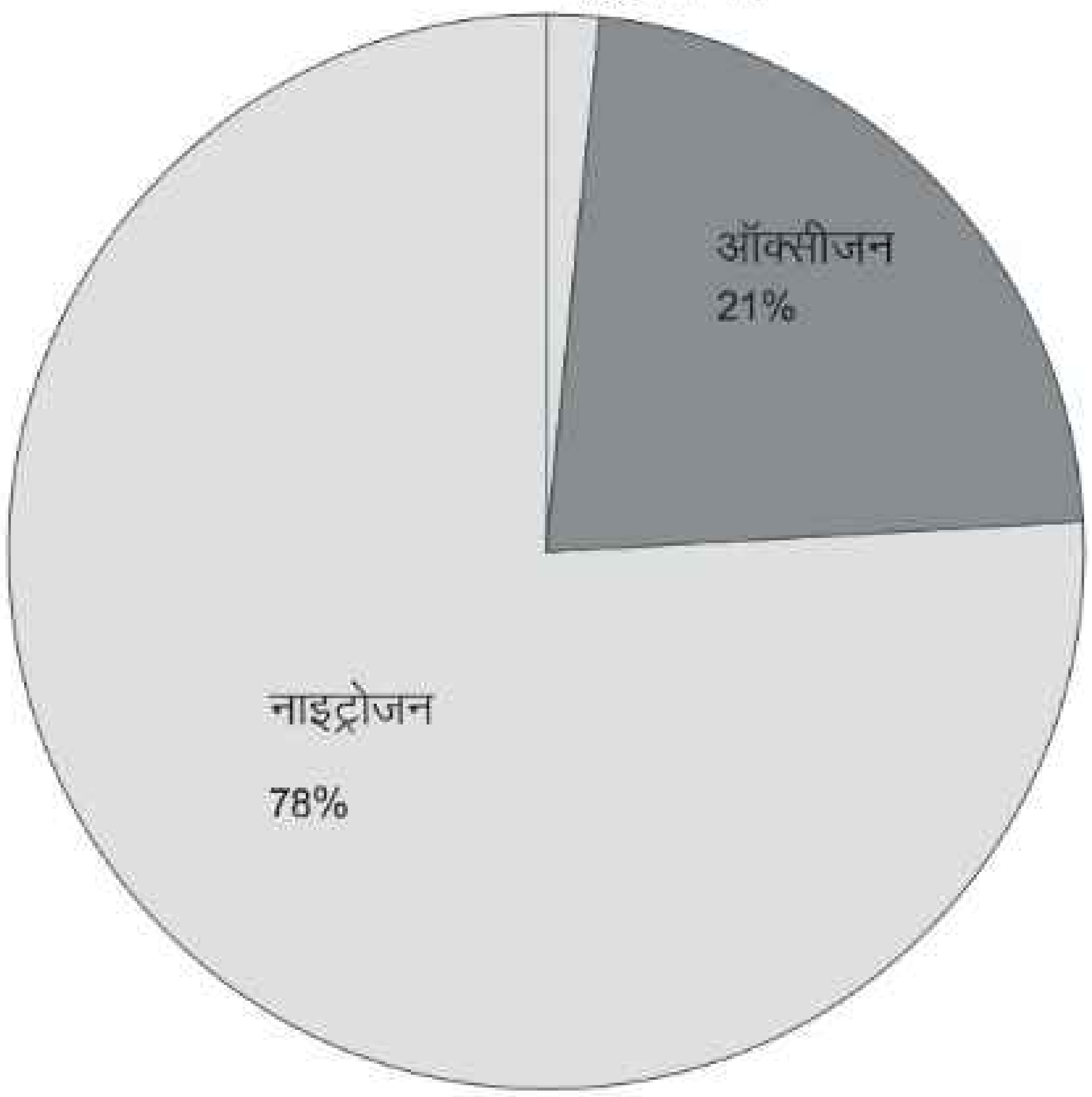

वायुमंडल का संगठन

वायुमंडल की संरचना

वायुमंडल का घनत्व तथा तापमान पृथ्वी के धरातल से ऊपर जाने पर एक समान नहीं है। वायुमंडल का लगभग 97 प्रतिशत भाग धरातल से 30 किलोमीटर की ऊँचाई तक उपस्थित है जबकि शेष 3 प्रतिशत भाग ऊपर सैकड़ों किलोमीटर तक मौजूद है। इसलिए वायुमंडल को ऊँचाई के अनुसार पांच परतों में बांटा गया है। ये हैं– क्षोभ मंडल, समताप मंडल, मध्य मंडल, आयन मंडल तथा बहिर्मण्डल। प्रत्येक परत की अपनी विशेषता है (देखिए चित्र में)।

1. **क्षोभ मंडल** – यह वायुमंडल की सबसे निचली व महत्वपूर्ण परत है। यह सबसे सघन परत है। इसमें कार्बन–डाई–ऑक्साइड, ऑक्सीजन, धूल कण, जल वाष्प इसी परत में सर्वाधिक है। इसकी ऊँचाई 8 किमी. से 18 किमी. के बीच है। मौसम संबंधी घटनाएँ जैसे वर्षा, कोहरा, बिजली कौंधना, आँधी, एवं तूफान इसी परत में होते हैं। इस परत में ऊँचाई के साथ तापमान कम होता जाता है।
2. **समताप मंडल** – यह क्षोभ मंडल के ऊपर की परत है तथा इसकी ऊँचाई पृथ्वी के धरातल से 50 किमी. की ऊँचाई तक है। इस परत में बादल आदि न होने के कारण वायुयान के उड़ने की यह आदर्श परत है। इस परत में तापमान काफी ऊँचाई तक समान रहता है। इस परत में ओजोन गैस की परत होने के कारण यह सूर्य से आने वाली खतरनाक पराबैंगनी किरणों को सोख लेती है।
3. **मध्य मंडल** – यह समताप मंडल के ऊपर की परत है। इसकी ऊँचाई पृथ्वी के धरातल से करीब 80 किमी. तक है। अंतरिक्ष से आने वाली उल्का पिंड इस परत में जल जाते हैं।
4. **आयन मंडल** – मध्यमंडल के ऊपर की परत है तथा इसकी ऊँचाई धरातल से 400 किमी. है। इस परत में ऊँचाई के साथ तापमान तीव्रता से बढ़ता है। इसी परत से रेडियो संचार सारी पृथ्वी पर पहुँच जाता है।
5. **बहिर्मण्डल** – यह वायुमंडल की सबसे ऊपरी परत है तथा यहाँ वायु बहुत ही विरल होती है। यहाँ हाइड्रोजन जैसी हल्की गैसें मौजूद हैं।

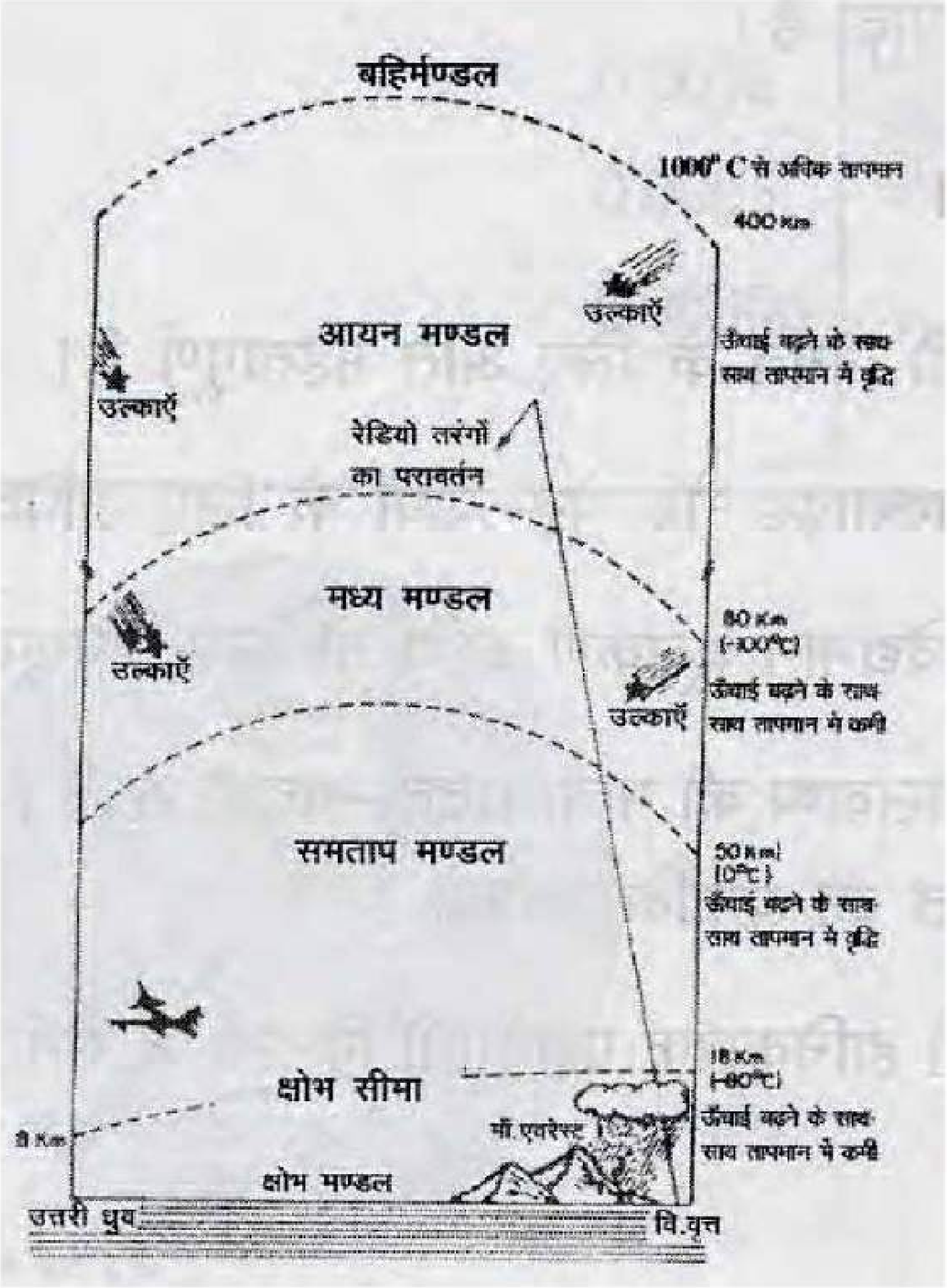

वायुमंडल की परतें

8.6 पाठगत प्रश्न

1. वायुमंडल की कौन सी परत मौसम संबंधी घटनाओं से संबंधित है?
2. वायुमंडल में सर्वाधिक मात्रा में पाई जाने वाली गैस का नाम बताइए।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

i- पृथ्वी धरातल को बदलने में कौन–कौन से अंतर्जनित बल कार्य करते हैं?

ii- नदी द्वारा निक्षेपण कहाँ होता है? निक्षेपण से बनने वाली स्थाकृतियों के नाम बताइए।

iii- बहिर्जनित बल पृथ्वी धरातल परिवर्तन में किस प्रकार कार्य करते हैं?

iv- रिफ्ट घाटी तथा खंड पर्वत का चित्र बनाइए तथा यह कौन से बल द्वारा निर्मित होते हैं?

v- वायुमंडल को ऊँचाई के अनुसार किन–किन परतों में बांटा जाता है?

2. निम्नलिखित में रिक्त स्थान भरिए–

1. वायुमंडल .... का मिश्रण है।
2. भूकम्प की तीव्रता को .... यंत्र से मापते हैं।
3. अंटार्कटिका महाद्वीप पर .... निवास नहीं है।
4. पृथ्वी के धरातल पर .... भाग पर जल मंडल फैला है।
5. पर्वतीय क्षेत्र में .... वाले भाग में नदी जल प्रपात बनाती है।
6. ठंडी जलधारा .... से चलकर .... की ओर बहती है।

3. कालम 'क' के तथ्यों को कालम 'ख' के तथ्यों के साथ सही मिलान कीजिए–

क	ख
1. ज्वालामुखी	डेल्टा बनता है।
2. भूकम्प	रेडियो संचार में सहायक है।
3. नदी के अपरदन	से गुजरात का भुज क्षेत्र प्रभावित हुआ।
4. ज्वार–भाटा सागरीय जल पर	से 'वी' आकार की घाटी बनती है।
5. नदी के निक्षेपण से	सूर्य तथा चन्द्रमा के गुरूत्वाकर्षण से पैदा होता है।
6. आयन मंडल	अंतर्जनित बल का परिणाम है।

4. निम्नलिखित में सही के आगे (✓) का चिह्न तथा गलत के आगे (×) का चिह्न लगाइए

1. महासागरीय जलधारा किसी भी दिशा में गति कर सकती है। ( )
2. आयन मंडल रेडियो तरंगों को पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों में पहुँचाता है। ( )
3. समताप मंडल में कार्बन–डाई–ऑक्साइड सर्वाधिक मात्रा में मौजूद हैं। ( )
4. महासागरों का जल कुछ स्थानों पर मीठा होता है। ( )
5. प्रशान्त महासागर सबसे गहरा महासागर है। ( )

स्वयं करके देखिए–

1. ज्वालामुखी का मॉडल बनाइए ।
2. डेल्टा का चित्र बनाइए।

9 मानव आवास, परिवहन एवं संचार

प्रस्तावना

हम सब मकानों में रहते हैं, जो मानव की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। जैसा कि आप जानते हैं, प्रारम्भ में मानव भोजन, वस्त्र एवं आवास के लिए प्रकृति पर निर्भर था। समय के साथ–साथ मानव ने अपने ज्ञान कौशल को विकसित करके प्रकृति के सहारे अपने जीवन को उन्नत बनाया तथा अपने लिए खाद्य पदार्थों का उत्पादन, रहने के लिए घर, यातायात एवं संचार के सुगम व बेहतर साधनों का विकास किया। इस प्रकार उसने अपने आवास के वातावरण को अपने अनुकूल बनाया। आओ बच्चों मानवीय पर्यावरण के इन्हीं साधनों की विस्तार से चर्चा करें।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर हम सीखेंगे –

- बस्तियाँ, परिवहन एवं संचार के साधनों की जानकारी।
- मानव बस्तियों के प्रकार एवं प्रतिरूपों की जानकारी।
- परिवहन के साधनों के प्रकार एवं उनके उपयोग की जानकारी।
- संचार के साधनों के प्रकार एवं उनके उपयोग की जानकारी।
- मानव विकास में परिवहन एवं संचार के साधनों के महत्व की जानकारी।

मानव बस्तियाँ

मानव बस्तियाँ वे स्थान हैं जहाँ लोग घर बनाकर रहते हैं। आदि काल में मनुष्य वृक्षों एवं गुफाओं में निवास करते थे। जब उन्होंने खेती करना आरम्भ किया तो उन्हें एक जगह स्थायी रूप से घर बनाकर रहना आवश्यक हो गया। सबसे पहले मानव ने नदी घाटियों के समीप झोपड़ियों का निर्माण किया क्योंकि वहाँ पर्याप्त मात्रा में जल एवं उपजाऊ भूमि उपलब्ध थी। बाद में समय के साथ–साथ मानव ने व्यापार, वाणिज्य एवं विनिर्माण के विकास के साथ अपनी बस्तियों का भी विकास किया और वे नदी–घाटियों के निकट तेजी से पनपने लगी तथा बड़ी होती गई। जिससे नदी घाटियों में ही सर्वप्रथम सभ्यता का विकास हुआ।

"**खोजो और जानों!**
विश्व की कुछ प्रमुख नदियों के किनारे विकसित सभ्यताओं के नाम बताइए।"

बस्तियाँ स्थायी या अस्थायी हो सकती हैं। जिन बस्तियों का निर्माण लोग कुछ समय रहने के लिए करते हैं, उन्हें अस्थायी बस्तियाँ कहते हैं। इस प्रकार की बस्तियाँ विश्व के उन क्षेत्रों में पाई जाती हैं जहाँ लोग घने जंगलों, गर्म एवं ठंडे रेगिस्तानों तथा पर्वतीय क्षेत्रों में आखेट संग्रहण, स्थानांतरी कृषि एवं अपने पशुओं के साथ ऋतु प्रवास करते हैं। यद्यपि अधिकांश बस्तियाँ आज स्थायी बस्तियाँ ही हैं, जहाँ पर लोग अपनी आर्थिक क्रियाओं के कारण स्थायी रूप से घर बनाकर रहते हैं। मानव की इन आर्थिक क्रियाओं के विकास ने ही बस्तियों को ग्राम, नगर व शहरों का रूप प्रदान किया है।

"**क्या आप जानते हैं?** – वे स्थान जहाँ भवन अथवा बस्तियाँ विकसित होती हैं उसे बसाव स्थान कहते हैं।

आदर्श बसाव के लिए अनुकूल दशाएँ–

- अनुकूल जलवायु
- जल की उपलब्धता
- उपयुक्त भूमि
- उपजाऊ मृदा (मिट्टी)
- सुरक्षा एवं परिवहन की सुविधा"

बस्तियों के प्रकार

ग्रामीण बस्तियाँ

बस्तियाँ आकार और प्रकार में भिन्न होती हैं। जिन बस्तियों में लोग कृषि, पशुपालन, मत्स्य पालन, वानिकी, दस्तकारी आदि प्राथमिक क्रियाएँ करते हैं उन्हें ग्रामीण बस्तियाँ कहते हैं। ग्रामीण बस्ती सघन या प्रकीर्ण हो सकती हैं। सघन बस्तियों में घर पास–पास मिले हुए होते हैं। यहाँ पर रहने वाले लोग मिलजुल कर रहते हैं व उनके व्यवसाय भी लगभग एक जैसे होते हैं। इस प्रकार की बस्तियाँ नदी, घाटियों के उपजाऊ मैदानों तथा तटीय मैदानों में पाई जाती है।

प्रकीर्ण बस्तियों में लोगों के घर दूर–दूर तक व्यापक क्षेत्र में फैले होते हैं। इन बस्तियों में मकान प्रायः खेतों के द्वारा एक दूसरे से अलग होते हैं, ये बस्तियाँ सांस्कृतिक स्थलों, पूजा स्थलों अथवा बाजार से एक साथ जुड़ी होती है। इस प्रकार की बस्तियाँ मुख्यतः पहाड़ी क्षेत्रों, घने जंगलों एवं अतिविषम जलवायु वाले क्षेत्रों में पाई जाती है।

"**क्या आप जानते हैं?** – जो लोग अपने पशुओं के साथ मौसम के परिवर्तन के अनुसार नए चरागाहों की खोज में आवागमन करते है उसे ऋतु प्रवास कहते हैं।"

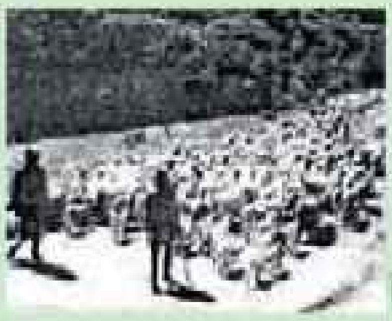

ग्रामीण क्षेत्रों में लोग अपने पर्यावरण के अनुकूल घर बनाते हैं। अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में लोग ढाल वाली छत बनाते हैं। जिन स्थानों में वर्षा के समय जल का जमाव होता है, वहाँ ऊँचे प्लेटफार्म अथवा स्टिल्ट पर घर बनाए जाते हैं जैसे असम में। गर्म जलवायु वाले क्षेत्रों में मिट्टी की मोटी दीवार वाले घर बनाये जाते हैं जिनकी छतें घास–फूस की बनी होती हैं। स्थानीय गृह निर्माण सामग्री जैसे– लकड़ी, पत्थर, पंक, चिकनी मिट्टी आदि का उपयोग भी बस्तियों के घर बनाने में किया जाता है।

सघन बस्ती

स्टिल्ट पर मकान

3. प्रकीर्ण बस्ती

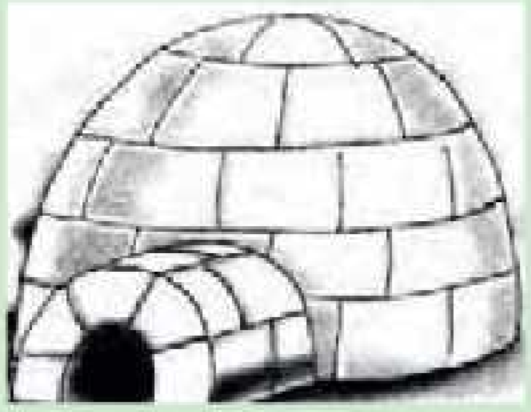

"खोजो और जानो! – यह किस प्रकार का मकान है? इसको किसने बनाया है और कहाँ बनाया है तथा इसे क्या कहते हैं?"

शिक्षक बस्तियों के सन्दर्भ में चर्चा करे–

1. प्रारम्भिक मानव का जीवन कैसा था।
2. मानव को निवास की आवश्यकता क्यों पड़ी?
3. सर्व प्रथम मानव ने स्थायी रूप से कहाँ रहना पसन्द किया?
4. ऐसे कुछ क्षेत्रों का नाम पता कीजिए जहाँ मानव बस्तियाँ सबसे पहले विकसित हुई।

नगरीय बस्तियाँ

ग्रामीण बस्तियों के विपरीत नगरीय बस्तियाँ सामान्यतः सघन और विशाल आकार की होती हैं। नगरीय बस्तियाँ आस–पास के क्षेत्रों व ग्रामीण बस्तियों के लोगों के लिए विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। नगरों में लोग विनिर्माण, उद्योग, व्यापार एवं विभिन्न सेवा क्षेत्रों में कार्यरत होते हैं। आज विश्व के शहरों में गाँवों से काफी संख्या में लोग रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि सुविधाओं के लिए तेजी से आ रहे हैं, जिससे नगरों एवं शहरों में अत्यधिक भीड़–भाड़ बढ़ने से अनेकों समस्याएँ विकराल रूप ले रहीं हैं। आज नगरों में आवास, जल, विद्युत की कमी एक सामान्य समस्या हो गई है। यही कारण है कि नगरों में अत्यधिक संख्या में स्लम बस्तियाँ बढ़ती जा रही हैं।

नगरीय बस्ती

9.1 पाठगत प्रश्न

1. मानव बस्ती किसे कहते हैं?
2. मानव बस्तियो के दो प्रकार बताइए।

परिवहन

''परिवहन व्यक्तियों और वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाने–ले जाने की सेवा या सुविधा को कहते हैं।'' परिवहन के साधन आज किसी भी देश की उन्नति व समृद्धि के सूचक समझे जाते हैं। परिवहन के बिना देश के विभिन्न संसाधनों का विकास व उनका उपयोग सम्भव नहीं है। प्रारम्भ में परिवहन और संचार के साधन एक ही होते थे। पुराने समय में लोग लम्बी दूरी की यात्रा के लिए पैदल चलते थे व सामान ढोने के लिए पशुओं का उपयोग करते थे। बाद में पहिए की खोज से परिहवन आसान हो गया और परिवहन के लिए पशुओं की गाड़ियों का उपयोग किया जाने लगा। समय के साथ मानव ने विज्ञान और तकनीकी के द्वारा परिवहन के विभिन्न साधनों का विकास किया, लेकिन आज भी विश्व के विभिन्न भागों में लोग परिवहन के लिए पशुओं का उपयोग करते हैं।

हमारे देश में आज भी गधे, खच्चर, बैल, घोड़े एवं ऊँट का उपयोग किया जाता है। दक्षिणी अमेरिका में ऐंडीज पर्वत के क्षेत्रों में लामा, तिब्बत में याक तथा हिमाच्छादित क्षेत्रों में रेंडियर का उपयोग परिवहन के लिए किया जाता है। प्रारंभ में यूरोप के अन्य देशों के व्यापारियों को भारत पहुँचने में समुद्री मार्ग या स्थलीय मार्ग से अनेक महीने लग जाते थे। हवाई यात्रा ने परिवहन को और अधिक तीव्रगामी बना दिया है। आज भारत से यूरोप की यात्रा करने में केवल 6 से 8 घंटे का समय लगता है। इस प्रकार परिवहन के आधुनिक साधन समय और उर्जा की बचत करते हैं। परिवहन के तीन मुख्य साधन है– स्थल परिवहन, जल परिवहन व वायु परिवहन।

(1) स्थल परिवहन– इसके अंर्तगत सड़क परिवहन, रेल परिवहन तथा पइप लाइन को सम्मिलित किया जाता है।

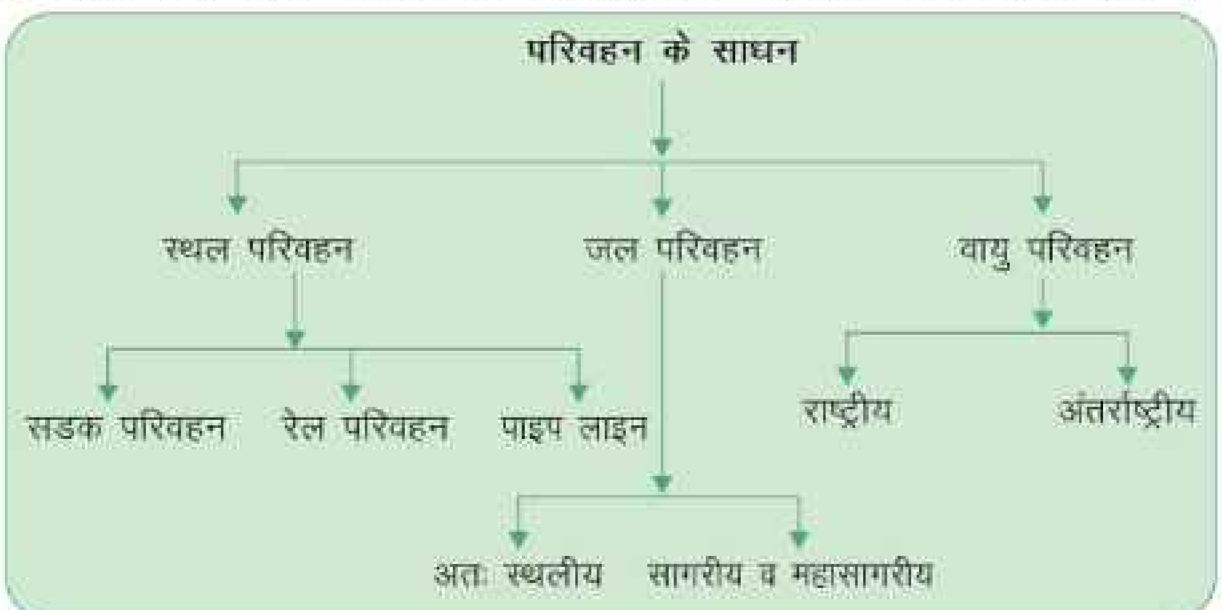

(i) सड़क परिवहन

कम दूरियों के लिए सड़क परिवहन सबसे प्राचीन व अधिक उपयोग किया जाने वाला साधन है। सड़कें पक्की एवं कच्ची हो सकती हैं। मैदानी क्षेत्रों में सड़कों का घना जाल बिछा होता है। यहाँ सड़के बनाना आसान होता है। मरूस्थलों, वनों एवं ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में भी सड़के बनी हुई हैं। हिमालय पर्वत पर मनाली लेह राजमार्ग विश्व के सबसे ऊँचे सड़क मार्गों में से एक है। सड़कें देश के आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण होती है। लम्बी दूरी तय करने वाली चौड़ी सड़कों को महामार्ग कहते हैं। भारत में सबसे लम्बा राष्ट्रीय महामार्ग न. 7 है। सड़क मानचित्र द्वारा पता करें कि उत्तर–दक्षिण और पूर्व–पश्चिम सड़क गलियारे का क्या नाम है।।

''आओ कुछ करके सीखें – अपने क्षेत्र के परिवहन के उन साधनों की सूची बनाएँ जिनको आपने देखा है।''

महामार्ग

सड़कें

9.2 पाठगत प्रश्न

1. परिवहन के प्राचीन और आधुनिक साधनों में अंतर बताइए।
2. सड़क परिवहन अन्य परिवहन के साधनों की तुलना में महत्वपूर्ण क्यों है?

रेल मार्ग

रेलमार्ग के द्वारा भारी वस्तुओं एवं यात्रियों को तीव्रता से लम्बी दूरी तक ढोने का कार्य सुगमता से होता है। वाष्प के इंजन की खोज एवं औद्योगिक क्रांति ने रेल परिवहन के तीव्र विकास में सहायता प्रदान की। आज डीजल एवं विद्युत इंजनों ने व्यापक रूप से वाष्प के इंजनों का स्थान ले लिया है। इतना ही नहीं दोहरे रेलमार्ग द्वारा रेल परिवहन और अधिक तीव्र एवं सघन रेल तंत्र में परिवर्तित हो गया है। सड़कों की भांति मैदानी भागों में ही रेलमार्गों का सर्वाधिक विकास हुआ है। आज उन्नत प्रौद्योगिकीय कौशल से दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में भी रेलमार्ग बनाना सम्भव हो गया है। यद्यपि इन पर्वतीय भागों में रेल तंत्र का विकास अभी भी कम पाया जाता है। देश में भारतीय रेल सरकार का विशालतम उद्यम है। भारतीय रेलवें का एशिया में प्रथम और विश्व में तीसरा स्थान है। आज विश्व के कुछ महानगरों के साथ भारत में भी मेट्रो रेल कई महानगरों की लाइफ लाईन बन चुकी है। क्या आपने दिल्ली में मेट्रो रेल में यात्रा की है? अपने अनुभवों की दूसरों से चर्चा करें।

रेल परिवहन

"**क्या आप जानते हैं** – भारत में अनेक राष्ट्रीय एवं राज्य महामार्ग हैं। स्वर्ण चतुर्भुज महामार्ग दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई और कोलकाता को जोड़ता है। भारत में एक्सप्रेस वे सड़क मार्ग नवीनतम है। क्या आप ऐसे किसी एक्सप्रेस वे का नाम बता सकते हैं?"

(ii) पाइप लाईन – इस प्रकार के परिवहन का प्रयोग मुख्य रूप से नगरों/शहरों में लोगों के घरों तक पानी गैस तथा तेल पहुँचाने के लिए किया जाता है।

"**क्या आप जानते हैं** – रेलवे पटरी की चौड़ाई के आधार पर भारतीय रेल लाइन तीन वर्गों में बाँटी गई है।

बड़ी लाइन – इसे ब्रॉड गेज लाइन कहते हैं, इसमें पटरियों के बीच की दूरी 1.616 मीटर होती है।

मीटर लाइन – इसमें दो रेल पटरियों की बीच की दूरी एक मीटर होती है।

छोटी लाइन – इसमें दो रेल पटरियों की बीच की दूरी 0.762 मीटर होती है। यह प्राय पर्वतीय क्षेत्रों तक सीमित है।"

"**क्या आप जानते हैं** – ज़ायनिंग से ल्हासा के बीच चलने वाली रेलगाड़ी समुद्रतल से 4,000 मीटर की ऊँचाई पर चलती है, जिसका सबसे ऊँचा बिंदु समुद्र तल से 5,072 मीटर की ऊँचाई पर है।

9.3 पाठगत प्रश्न

1. भारतीय रेलतंत्र का विश्व में कौन सा स्थान है?
2. पर्वतीय क्षेत्रों में रेलमार्गों का अधिक विकास क्यों नहीं हो पाया है?
3. रेल परिवहन के दो लाभ बताइए।

जल परिवहन

आप पहले पढ़ चुके हैं कि मनुष्य अत्यंत प्राचीन काल से ही परिवहन के लिए जलमार्ग का उपयोग करता आ रहा है। जलमार्ग अधिक दूरी में भारी एवं बड़े आकार वाले सामानों को ढोने के लिए सबसे सस्ता साधन होता है। इसके लिए न तो किसी मार्ग का निर्माण करना पड़ता है और न ही मार्ग के रख रखाव पर कोई व्यय करना पड़ता है। जल परिवहन के लिए प्रारंभिक समय में छोटी–बड़ी नावों व पालदार जहाजों का उपयोग होता था, लेकिन आज विशालकाय माल वाहक और यात्री जहाज दोनों ही आधुनिक संचार प्रणाली से युक्त होते हैं। जल मार्गों के लिए समुद्री छोरों पर अच्छे पत्तन की आवश्यकता पड़ती है जहाँ पर आसानी से माल उतारा व चढ़ाया जाता है।

जल परिवहन दो प्रकार के होते हैं:– आंतरिक जल परिवहन एवं समुद्री परिवहन।

परिवहन के लिए उपयोग में आने वाली नदियों, झीलों एवं नहरों को ही अंतर्देशीय अथवा आंतरिक जल परिवहन कहा जाता है। विश्व के कुछ प्रमुख अंतर्देशीय जलमार्ग हैं:– उत्तरी अमेरिका में ग्रेट लेक, भारत में गंगा–ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र, यूरोप में राइन नदी, एवं अफ्रीका में नील नदी। अंतर्देशीय जलमार्ग उन नदियों, झीलों व नहरों में ही सम्भव हो सकता है जो चौड़ी, गहरी एवं गाद से मुक्त होती है।

समुद्री जलमार्गों का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार (विभिन्न देशों के बीच होने वाला व्यापार) के लिए उपयोग किया जाता है। संसार में पेट्रोलियम, कृषि उत्पादों, तैयार माल आदि सभी भारी भरकम सामान को ढोने का कार्य समुद्री परिवहन के द्वारा ही किया जाता है। ये मार्ग पत्तनों से जुड़े होते हैं। विश्व के कुछ महत्वपूर्ण पत्तन हैं – एशिया में सिंगापुर एवं मुम्बई, उत्तर अमेरिका में न्यूयार्क एवं लांस एंजिल्स, दक्षिण अमेरिका में रियो डि जेनेरियो, अफ्रीका में डरबन एवं केपटाऊन, आस्ट्रेलिया में सिडनी तथा यूरोप में लंदन।

"**क्या आप जानते हैं** – पत्तन गहरे समुद्री तटों पर स्थित जलमार्ग के लिए ऐसे स्टेशन है, जहाँ पर समुद्री जहाजों से माल व यात्रियों को उतारा व चढ़ाया जाता है। भारत के प्रमुख पत्तनों की एक सूची बनाए।"

जल परिवहन

9.4 पाठगत प्रश्न

1. जल परिवहन के दो प्रकार बताइए।
2. एशिया के दो प्रमुख पत्तनों के नाम लिखो।

वायु परिवहन

बीसवीं सदी के आरम्भ में विकसित वायु परिवहन एक स्थान से दूसरे स्थान तक आवागमन का तीव्रतम साधन है। वायुयानों में ईंधन की लागत अधिक होने से यह सर्वाधिक महंगा साधन है। वायु परिवहन खराब मौसम, जैसे कोहरा एवं तूफान से बाधित होता है। यह यातायात का अकेला साधन है, जो सर्वाधिक दुर्गम स्थानों जैसे–पर्वतीय, हिम क्षेत्रों एवं मरूस्थलीय आदि सुदूर क्षेत्रों तक पहुँच सकता है। विशेष रूप से जहाँ सड़क एवं रेलमार्ग नहीं है। हेलीकॉप्टर अगम्य स्थानों एवं संकटकालीन स्थितियों में लोगों को बचाने एवं भोजन, जल, कपड़े एवं दवाएँ आदि रसद सामग्री बाँटने के लिए अत्यन्त उपयोगी साधन है।

"क्या आपको याद है कि देश के एक उत्तरी प्रांत उत्तराखण्ड में जून 2013 व जम्मू और कश्मीर में सितम्बर 2014 में अचानक आई तेज वर्षा से उत्पन्न भू–स्खलन व बाढ़ से हुई तबाही से लोगों की जान बचाने में सेना के हेलीकॉप्टरों ने किस प्रकार सहायता की।"

वायु परिवहन के लिए भी हवाई स्टेशनों (पत्तनों) का निर्माण करना होता है, जो राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के होते हैं। विश्व के कुछ महत्वपूर्ण हवाई पत्तन हैं– दिल्ली, मुम्बई, न्यूयार्क, लंदन, पेरिस, फ्रैंकफर्ट एवं काहिरा।

वायु परिवहन

9.5 पाठगत प्रश्न

1. वायु परिवहन किन क्षेत्रों के लिए सर्वाधिक उपयोगी साधन हैं?

संचार

संचार एक स्थान से दूसरे स्थान तक लोगों के पास संदेश अथवा सूचना पहुँचाने की प्रक्रिया है। आरंभिक समय में ढोल बजाकर, आग या धुएँ के संकेतों द्वारा अथवा तीव्र धावकों की सहायता से संदेश पहुँचाए जाते थे। उस समय घोड़े, ऊँट, कुत्ते, पक्षी तथा अन्य पशुओं को भी संदेश पहुँचाने के लिए प्रयोग किया जाता था। आरंभ में संचार के साधन और परिवहन के साधन एक ही थे। तकनीकी विकास के साथ मानव ने आज संचार के नए एवं तीव्र साधनों को विकसित कर लिया है जो संचार तंत्र के विकास क्रम को दर्शाता है।

सूचना प्रदान करने के लिए संचार के विभिन्न साधनों से विश्व में आज सूचना क्रांति आ गई है। शिक्षा तथा मनोरंजन के लिए संचार के विभिन्न साधनों का उपयोग होता है। समाचार पत्रों, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा आदि के द्वारा हम बड़ी संख्या में लोगों के साथ संम्पर्क कर सकते हैं। इसलिए इन साधनों को जन सम्पर्क माध्यम कहते हैं। सेटेलाइट ने संचार को तीव्र और आसान बना दिया है तथा इनके द्वारा संचार के अन्य साधनों का भी संचालन किया जाता है। तेल की खोज, वनों का सर्वेक्षण, भूमिगत जल, खनिज सम्पदा, मौसम पूर्वानुमान, प्राकृतिक आपदाओं की पूर्व चेतावनी, सीमा सुरक्षा आदि में सेटेलाइट का उपयोग किया जाता है। आज हम इंटरनेट के माध्यम से इलैक्ट्रानिक मेल या ई–मेल भेज सकते हैं। हम घर बैठे ही रेल, हवाई जहाज, सिनेमा, होटल आदि तक के लिए टिकट आरक्षित करवा सकते हैं। आज मोबाइल फोन एक दूसरे से बात करने का सर्वाधिक लोकप्रिय साधन बन चुका है। इस प्रकार संचार के अनेक आधुनिक साधनों ने विश्व को सूचनाओं के माध्यम से छोटा बना दिया है। अतः सम्पूर्ण विश्व में लोगों की विभिन्न सेवाओं तथा संस्थाओं के बीच तीव्र गति से आपसी सम्पर्क ने एक वृहद विश्व समाज का निर्माण कर दिया है तथा लोगों का जीवन आसान बना दिया है।

"**क्या आप जानते हैं** – उपग्रहों (सेटेलाइट) ने मानव जीवन को अनेक प्रकार से प्रभावित किया है। आप अपने मित्रों को फोन करने के लिए सेलफोन का प्रयोग करते हैं। अथवा केबिल दूरदर्शन पर जो कार्यक्रम आप देखते हैं वे सब उपग्रह के माध्यम से ही प्रसारित किये जाते हैं।"

संचार के साधन

- व्यक्तिगत संचार
  - पत्र, टेलीफोन, मोबाइल, फैक्स, ई–मेल, इंटरनेट आदि।
- जन संचार
  - रेडियो, दूरदर्शन, सिनेमा, उपग्रह, अखबार, मैगजीन, पुस्तकें, जन समस्याएँ।

इसके अतिरिक्त हम संचार के साधनों को इलेक्ट्रानिक और मुद्रित संचार के साधनों में भी विभाजित कर सकते हैं।

(i) इलेक्ट्रॉनिक संचार (रेडियो, दूरदर्शन मोबाइल, फैक्स, ई–मेल, इंटरनेट आदि।)

(ii) मुद्रित संचार पत्र, अखबार, मैगजीन, पुस्तके आदि।

अभ्यास

1. नीचे दिए गए चार विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए।

(1) मानव ने सर्वप्रथम बस्तियाँ कहाँ बसाई?

(क) पर्वतों पर (ख) मरूस्थलों में (ग) नदी–घाटियों में (घ) तटीय भागों में

(2) जिन बस्तियों में घर दूर–दूर तथा व्यापक क्षेत्र में फैले होते हैं, उन बस्तियो को क्या कहते है–

(क) नगरीय बस्ती (ख) सघन बस्ती (ग) गन्दी बस्ती (घ) प्रकीर्ण बस्ती

(3) परिवहन के रूप में 'लामा' का उपयोग किस क्षेत्र मे किया जाता है–

(क) ऐंड्रीज पर्वतीय स्थलों में (ख) मरूस्थलीय भागों में (ग) साइबेरिया में (घ) तिब्बत में

(4) भारतीय रेल तंत्र का एशिया में कौनसा स्थान है?

(क) तीसरा (ख) पहला (ग) दूसरा (घ) चौथा

2. निम्नलिखित स्तम्भों को मिलाकर सही जोड़े बनाइए।

(क) महामार्ग	(1) पास–पास बने घरों का एक समुह
(ख) इंटरनेट	(2) नदियों, झीलों एवं नहरों द्वारा जल परिवहन
(ग) सघन बस्ती	(3) संचार का एक साधन
(घ) अन्तःदेशीय या आंतरिक जलमार्ग	(4) लम्बी दूरी तय करने वाली चौड़ी सड़कें

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(1) ग्रामीण बस्तियों के लोगों के क्रियाकलाप किस प्रकार के होते है?

(2) रेल परिवहन की किन्ही दो विशेषताओं को बताइए।

(3) संचार के दो प्रमुख साधनों के नाम बताइए।

(4) वायु परिवहन के दो लाभ बताइए।

5. क्रियाकलाप –

(क) आप निम्नलिखित परिस्थितियों में संचार के किस साधन का उपयोग करेंगे–

(1) आपका मित्र मुम्बई में घूमने गया हुआ है। आप उसके साथ प्रतिदिन कैसे सम्पर्क में रहेंगे?

(2) आपके पड़ोसी का बच्चा कहीं खो गया है। आप इस सूचना को दूसरों तक कैसे पहुँचाओगे?

(3) आप देश विदेश के समाचारों को किन माध्यमों से प्राप्त करोगे?

(ख) दिल्ली में मेट्रो रेल के सफर के अनुभव पर एक अनुच्छेद लिखो।

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक/शिक्षिका विगत पाठों में विद्यार्थी की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1	________________			
2	________________			
3	________________			
4	________________			
5	________________			
6	________________			
7	________________			
8	________________			
9	________________			
10	________________			

10 जलवायु प्रदेशों में मानव क्रियाएँ

जलवायु :– जलवायु लम्बी अवधि (25–30 वर्ष) के दौरान मौसम सम्बंधी दशाओं का साधारणीकरण है। जो वायुमण्डलीय ताप, दाब, वायु, आर्द्रता, मेघ, वर्षण तथा अन्य मौसमीय तत्वों की दीर्घकालिक दशाओं का परिणाम होती है।

मौसम :– वायुमण्डलीय दशाओं यथा ताप, दाब, वायु, आर्द्रता, वर्षा आदि के किसी स्थान विशेष में निश्चित समय के अर्न्तगत अल्पकालीन दशाओं का मौसम की संज्ञा दी जाती है।

गंगा–ब्रह्मपुत्र बेसिन में जीवन

प्रस्तावना

भारत देश में नदियों का आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास में प्राचीनकाल से ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गंगा–ब्रह्मपुत्र बेसिन विश्व में सबसे अधिक उपजाऊ एवं सबसे अधिक घनी जनसंख्या का क्षेत्र है। यह क्षेत्र कृषि प्रधान है और प्रमुख व्यवसाय कृषि पर आधारित है।।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ से हम सीखेंगे–

- गंगा–ब्रह्मपुत्र बेसिन का धरातल
- जलवायु और वनस्पति
- मिट्टी
- फसलें
- प्रमुख नगर
- प्रमुख व्यवसाय
- पर्यटन केन्द्र

भारत उपमहाद्वीप में गंगा और ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियाँ मिलकर गंगा–ब्रह्मपुत्र बेसिन का निर्माण करती हैं। यह बेसिन भारत में 20° उत्तर से 30° उत्तर अक्षांश के मध्य स्थित है।

गंगा भारत में सबसे लंबी नदी है। यह हिमालय के गंगोत्री ग्लेशियर में भागीरथी नदी के नाम से बर्फ के पहाड़ के बीच जन्म लेती है। 200 किमी. का सँकरा पहाड़ी रास्ता तय करके गंगा नदी ऋषिकेश होते हुए हरिद्वार में मैदानों का स्पर्श करती है। आगे चलकर – यमुना, सोन, गोमती, कोसी, घाघरा आदि अन्य सहायक नदियाँ इसमें मिलती है। यह नदी पर्वतों, घाटियों और मैदानों में 2510 किमी. की दूरी तय करती हुई बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है।

ब्रह्मपुत्र नदी का उद्‌गम तिब्बत के दक्षिण में कैलाश पर्वत के निकट मानसरोवर झील से होता है। तिब्बत में 1700 किमी. बहती हुई यह भारत में अरूणाचल प्रदेश में प्रवेश करती है। इसकी कुल लम्बाई 2700 किलोमीटर है। इसका नाम तिब्बत में सांपों और असम में ब्रह्मपुत्र है। तिस्ता, लोहित, बराक आदि ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियाँ हैं।

10.1 पाठगत प्रश्न

1. रिक्त स्थानों में नदी का नाम लिखिए–

   (क) .... की कुल लम्बाई 2700 किमी. है।

   (ख) .... की कुल लम्बाई 2510 किमी. है।

जलवायु–

इस बेसिन में जलवायु मुख्य रूप से मानसूनी है। वर्षा मध्य जून से मध्य सितम्बर के बीच होती है। यहाँ ग्रीष्म ऋतु में गर्मी तथा शीत ऋतु में ठंड होती है।वर्षा मानसूनी पवनों द्वारा होती है। गर्मी में 'लू' उत्तरी मैदानो में चलती है। शीतऋतु में उत्तर के मैदानों में कोहरा और ऊँचे पहाड़ों पर हिमपात होते हैं।

मिट्टी–

इस बेसिन में उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी का विस्तार है। जिसमे चूना, पोटास, फास्फोरस तथा जीवाश्म अधिक मात्रा में पाये जाते है। सुंदरवन डेल्टा गंगा ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों द्वारा लाई गई नवीन जलोढ से निर्मित मैदान है। विश्व के इस सबसे बड़े डेल्टा में प्रसिद्ध बंगाल टाईगर का निवास स्थान है।

सुंदर वन

वनस्पति–

जलवायु एवं मौसम के अनुसार वनस्पति में भी विभिन्नता पायी जाती है। गंगा–ब्रह्मपुत्र के मैदानों में सागवान, साख और पीपल के साथ उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वृक्ष भी पाए जाते हैं। ब्रह्मपुत्र के डेल्टाई क्षेत्र मैंग्रोव वन से घिरा है। उत्तरांचल, सिक्किम तथा अरूणाचल प्रदेश की ठंडी जलवायु और तीव्र ढ़ाल वाले भागों में चीड़, देवदार और फर जैसे शंकुधारी वृक्ष पाए जाते हैं।

10.2 पाठगत प्रश्न

मिलान कीजिए–

सागवान, पीपल	ब्रह्मपुत्र का मैदान
घने बाँस	उत्तरांचल, सिक्किम
मैंग्रोव	गंगा–ब्रह्मपुत्र के मैदान
चीड़, देवदार, फर	डेल्टा क्षेत्र

गंगा–ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन को निम्नलिखित शीर्षक की सहायता से विशेषताएँ–

शीर्षक	विशेषताएं
1. धरातलीय बनावट	
2. जलवायु	
3. वनस्पति एवं जीवजन्तु	
4. मृदा	
6. फसलें	
7. व्यवसाय	

वन्यजीव–

इस बेसिन में विविध प्रकार के वन्यजीव पाए जाते हैं। इनमें हाथी, बाघ, हिरण और बंदर आदि सामान्य रूप से पाए जाने वाले जीव हैं। एक सींग वाला गैंडा, ब्रह्मपुत्र के मैदानों में पाया जाता है। डेल्टा क्षेत्र में बंगाल टाइगर, मगरमच्छ तथा घड़ियाल प्रमुख हैं। रोहू, कतला और हिलसा मछलियों की सबसे लोकप्रिय प्रजातियाँ हैं। मछली और चावल इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों का मुख्य आहार है। गंगा नदी में पाई जाने वाली डॉलफिन एक संकटापन्न जंतु है। जो विशिष्ट रूप से इसी में वास करती है।

फसलें–

गंगा ब्रह्मपुत्र नदी का बेसिन विश्व के सबसे अधिक उपजाऊ क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। मनुष्य के प्रवास के लिए मैदानी क्षेत्र सबसे उपयुक्त है, इसलिए जनसंख्या घनत्व अधिक है। जिन स्थानों पर फसल उगाने के लिए समतल भूमि उपलब्ध है वहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। धान एवं जूट (पटसन) यहाँ की मुख्य फसले हैं क्योंकि धान की खेती के लिए अधिक जल की आवश्यकता होती है। यह उसी क्षेत्र में उगाया जाता है जहाँ अधिक वर्षा होती है। इस बेसिन में जहाँ वर्षा कम होती है वहाँ सिंचाई के साधनों को अपना कर चावल की खेती की जाती है। गेहूँ, मक्का, ज्वार, चना और बाजरा भी यहाँ उगाया जाता है।

10.3 पाठगत प्रश्न

निम्नलिखित कथनों को कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

1. गंगा, ब्रह्मपुत्र बेसिन में जनसंख्या अधिक है।
2. गंगा–ब्रह्मपुत्र मैदान में धान की कृषि अधिक होती है।

नगर–

गंगा, ब्रह्मपुत्र के मैदानों में कई बड़े शहर और कस्बे स्थित हैं। इलाहाबाद, कानपुर, वाराणसी, लखनऊ, पटना और कोलकाता जैसे 10 लाख से अधिक आबादी वाले शहर गंगा नदी के तट पर स्थित हैं। ब्रह्मपुत्र के किनारे प्रमुख शहर हैं – डिब्रूगढ़, तेजपुर और गुवाहाटी।

व्यवसाय–

इस बेसिन में जूट, बाँस और सिल्क से सम्बन्धित व्यवसाय प्रमुखता से किए जाते है। जूट और चीनी मिले अधिक पाई जाती है।

पर्यटन केन्द्र–

इस बेसिन में अनेक पर्यटन स्थल है जैसे– यमुना नदी के किनारे स्थित आगरा का ताजमहल, इलाहाबाद में गंगा नदी और यमुना नदी का संगम, उत्तर प्रदेश और बिहार में बौद्ध स्तूप, लखनऊ का इमामबाड़ा, असम काजीरंगा और मानस वन्य प्राणी अभयवन एवं अरूणाचल प्रदेश की विशिष्ट जनजातीय संस्कृति जैसे कई दर्शनीय स्थल हैं।

गर्म सहारा रेगिस्तान में जीवन

क्या आप जानते हैं कि ऐसे पौधे कहाँ पाये जाते हैं जिनके पत्ते मोटे होते हैं ताकि उनका जल पत्तों के अंदर ही बंद रहे। पत्तों के ऊपर कांटे होते हैं ताकि जानवर उन्हें खा न पाएँ। जड़े रेत में उगने और पानी बटोरने के लिए विस्तृत और लम्बी होती है। रेगिस्तान एक शुष्क प्रदेश है जिसकी मुख्य विशेषताएँ अत्यधिक उच्च अथवा निम्न तापमान और विरल वनस्पति है। तापमान के आधार पर रेगिस्तान गर्म या ठंडे हो सकते हैं। इस पाठ में हम विश्व के विशालतम गर्म रेगिस्तान के बारे में पढ़ेंगे।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात हम जान सीखेंगे–

- सहारा का धरातल, जलवायु, वनस्पति और मृदा
- सहारा में पाये जाने वाले प्रमुख जीव–जन्तु।
- सहारा में रहने वाले लोग और उनका जीवन।
- बदलता हुआ सहारा का स्वरूप।

सहारा विश्व का सबसे बड़ा रेगिस्तान है। यह अफ्रीका के उत्तरी भाग में अटलांटिक महासागर से लाल महासागर तक फैला हुआ है। सहारा का क्षेत्रफल 8.54 लाख वर्ग किमी. है। क्षेत्रफल में यह यूरोप के लगभग बराबर और भारत से लगभग दोगुना है। सहारा रेगिस्तान ग्यारह देशों से घिरा हुआ है। इन देशों को अफ्रीका के मानचित्र में पता करिए।

सहारा रेगिस्तान

10.4 पाठगत प्रश्न

1. सही उत्तर चिह्नित कीजिए–(✓)

   इनमें से कौन सी रेगिस्तान की विशेषता नहीं है?

   (क) अत्यधिक उच्च अथवा निम्न तापमान

   (ख) अधिक वर्षण

   (ग) विरल वनस्पति

सहारा का केवल 1/3 भाग बालू से ढका हुआ है। यहाँ बजरी के मैदान और नग्न चट्टानी सतह वाले उत्थित पठार भी हैं। यहाँ कुछ ज्वालामुखी पर्वत भी हैं जैसे–होगर और टिबेस्टी पर्वत। हवा के साथ बनते विशाल बालू के टिब्बे इसकी सामान्य भू–आकृति बनाते हैं। टिब्बे विभिन्न स्वरूपों और आकारों में निर्मित हो सकते हैं और यह सब वायु की दिशा और गति पर निर्भर करता है।

बालू के टिब्बे

सहारा रेगिस्तान की जलवायु गर्म और शुष्क है। यहाँ दिन में कड़ी गर्मी तथा रात में कठोर सर्दी पड़ती है। दिन के समय तापमान 50° सेल्सियस से ऊपर पहुँच जाता है और रात में हिमांक बिंदु से भी नीचे चला जाता है। यहाँ की वर्षा ऋतु अल्पकाल के लिए होती है। यहाँ आकाश बादल रहित होता है। यहाँ नमी संचय नहीं होती और तेजी से वाष्पित हो जाती है। सहारा रेगिस्तान की वनस्पतियों में कैक्टस, खजूर के पेड़ तथा ऐकेशिया मुख्य रूप से पाए जाते हैं।

मरूद्यान या मरूद्वीप

मरूस्थल में किसी झरने या जल स्रोत के आसपास स्थित एक ऐसा क्षेत्र होता है जहाँ किसी वनस्पति के उगने के लिए पर्याप्त परिस्थितियाँ उपलब्ध होती हैं। सहारा के प्रमुख जीव–जन्तुओं में ऊँट, लकड़बग्घा, सियार, लोमड़ी, बिच्छू, साँपों की विभिन्न जातियाँ और छिपकलियाँ शामिल हैं।

10.5 पाठगत प्रश्न

1. सहारा रेगिस्तान की जलवायुगत परिस्थितियाँ क्या हैं?
2. कारण बताइए – रेगिस्तान में अति अल्प वनस्पति होती है।

सहारा रेगिस्तान की जलवायु बहुत ही कष्टकारी है। फिर भी यहाँ के लोग अत्यधिक कष्टकारी तापमान में भी जीना सीख चुके हैं। यहाँ विभिन्न समुदायों के लोग निवास करते हैं और भिन्न–भिन्न क्रियाकलापों में भाग लेते हैं। इसमें बेदुईन और तुआरेग भी शामिल है। बेदुइन एक अरब मानव जाति है जो पारम्परिक रूप से खानाबदोश जीवन व्यतीत करती है। ये कई कबीलों में बंटे हैं। चलवासी जनजाति वाले ये लोग बकरी, भेड़, ऊँट और घोड़े जैसे पशुधन को पालते हैं। इन पशुओं से इन लोगों को दूध मिलता है, इनकी खाल से ये पेटी, जूते बनाने के लिए चमड़ा प्राप्त करते है। धूलभरी आंधियों और गर्म वायु से बचने के लिए लोग भारी वस्त्र पहनते हैं।

जहाँ पानी की उपलब्धता है वहाँ लोग चावल, गेहूँ, जौ और सेम जैसी फसलें उगाते हैं। सहारा के मरूद्यानों में लोग खजूर के पेड़ भी उगाते हैं। मिस्र की नील घाटी लोगों के निवास में सहयोग करती है।

अल्जीरिया, लीबिया और मिश्र में तेल की खोज होने के कारण सहारा रेगिस्तान तेजी से परिवर्तित हो रहा है। इस क्षेत्र में अन्य महत्वपूर्ण खनिज जैसे लोहा, फॉस्फोरस, मैंगनीज और यूरेनियम आदि प्राप्त होते हैं।

सहारा में कई परिवर्तन आए हैं जैसे कांच की खिड़कियों वाले ऊँचे भवन बन गए हैं। कई सुपर महामार्ग बन गए हैं। नमक के व्यापार में ऊँटों के स्थान पर अब ट्रक का इस्तेमाल हो रहा है। कई तुआरेग लोग अब विदेशी पर्यटकों के लिए मार्गदर्शक का काम करने लगे हैं। वह शहरी जीवन की ओर जा रहे हैं। वहाँ तेल और गैस के कार्यों में नौकरी ढूँढते हैं।

अभ्यास

1. गंगा ब्रह्मपुत्र बेसिन विश्व के सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्रों में गिना जाता है। क्यों?
2. गंगा ब्रह्मपुत्र मैदान की विशेषताओं को लिखिए।
3. रेगिस्तान की विशेषता लिखिए।
4. सहारा रेगिस्तान में कौन–कौन सी फसले उगायी जाती है?
5. भारत के रेखा मानचित्र पर गंगा, ब्रह्मपुत्र नदियों को उद्गम से मुहाने तक दर्शाएँ।

क्रियाकलाप –

अपने शिक्षक से पता कीजिए कि अपने देश भारत में भी कोई गर्म मरूस्थल है और उसे निम्नलिखित शीर्षक के अन्तर्गत जानकारी एकत्रित करें–

1. गर्म मरूस्थल का विस्तार कितना है ?
2. वहाँ की जलवायु कैसी है ?
3. पीने के पानी का क्या साधन है।
4. किस प्रकार की वनस्पतियाँ पायी जाती है ?
5. वहाँ के लोगों की जीवन जीने का तरीका कैसा है ?

11 समानता

प्रस्तावना

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। इसमें सभी व्यस्कों को बिना किसी भेदभाव के मतदान का अधिकार है। यहाँ मतदान का अधिकार सभी को समान रूप से प्रदान किया गया है। इसमें उन सभी नागरिकों को जो 18 वर्ष या उससे अधिक उम्र के हैं उन्हें चाहे उनका कोई भी धर्म हो, कोई जाति हो, वे चाहे गरीब हों, या अमीर , मतदान का अधिकार है। यह मतदान का अधिकार जिसे सार्वभौमिक व्यस्क मताधिकार भी कहा जाता है, समानता की समझ पर आधारित है। आज संसार के ज्यादातर देशों में सभी व्यस्क स्त्री/पुरुषों को चाहे वह गरीब हो या अमीर मतदान का अधिकार है। मतदान का यह अधिकार समानता के विचार पर आधारित है।

इस पाठ को पढने के बाद हम जान पाएगें–

- समानता क्या है? समानता के विभिन्न रूपों जैसे सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक रूपों को समझ पाएंगे
- मतदान के अधिकार की समानता किस रूप में है तथा इसमें क्या कमियाँ हैं? इसे समझ पाएंगे
- समानता लाने के लिए सरकार तथा संविधान द्वारा क्या प्रयास किया गया है, उन्हें समझ जाएंगे
- दोपहर का भोजन कार्यक्रम किस प्रकार से समानता को बढ़ावा देता है, इसका महत्त्व जान पाएंगे
- सरकार द्वारा समानता को बढ़ावा देने के लिए कौन–कौन सी प्रमुख योजनाएँ चलायी जा रही है, अपने आस पास देख पाएंगे
- समाज में अनेक प्रकार की असमानताएँ भी हैं तथा उन्हें कैसे दूर किया जाए, इसमें अपना योगदान पहचान पाएंगे

समानता की समझ

भारत सहित संसार के ज्यादातर देशों में सभी व्यक्तियों को समान माना गया है। इसका अर्थ यह है कि देश के व्यक्ति चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, किसी भी जाति, धर्म, भाषा, लिंग से संबंध रखते हों, चाहे गरीब हों या अमीर, वे सभी समान समझें जायेंगे। यह समानता सभी नागरिकों को अनेक तरीकों से मिली हुई है।

- सभी व्यक्तियों को बिना किसी भेद–भाव के मतदान का अधिकार दिया गया है।
- कानून गरीब और अमीर में कोई भेद–भाव नहीं करता, एक तरह का अपराध करने पर गरीब तथा अमीर को समान दंड मिलता है।
- आज सभी व्यक्ति समाज और सरकार में ऊँचे से ऊँचा पद प्राप्त कर सकते हैं जैसे कि अनेक गरीब परिवारों के व्यक्तियों ने राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री जैसे सर्वोच्च पदों को अपनी मेहनत से प्राप्त किया है। उदाहरण स्वरूप सर्वपल्ली राधाकृष्णन, श्री अब्दुल कलाम, सुश्री मायावती, श्री चौधरी चरणसिंह तथा श्री अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन को हम सकते हैं।

विभिन्न असमानताएँ

इन सभी समानताओं के बावजूद हम यह नहीं कह सकते हैं कि असमानता खत्म हो गयी है। आज भी समाज में अनेक प्रकार की असमानताएँ दिखायी पड़ती है, जिन्हें हम निम्न रूपों में समझ सकते हैं–

- 18 वर्ष के सभी व्यक्तियों को बिना किसी भेदभाव के मतदान का अधिकार जरूर मिला हुआ है परन्तु राजनैतिक पार्टियों द्वारा गरीब व्यक्ति को जाति, धर्म के आधार पर तथा धन का लालच देकर अनेकों बार प्रभावित करने का प्रयास किया जाता है।

- कानून गरीब और अमीर में कोई भेदभाव नहीं करता परन्तु गरीब व्यक्ति धन के अभाव में कई बार निर्दोष होते हुए भी अपना बचाव नहीं कर पाता, क्योंकि आज भी कानूनी तौर तरीकों से अपनी लड़ाई लड़ने के लिए बहुत धन की जरूरत पड़ती है। गरीब व्यक्ति अपने लिए वकील तक नहीं कर पाता जबकि धनी व्यक्ति अपने धन एवं संसाधनों द्वारा अपना बचाव अच्छी तरह कर पाता है। इस पर बहुत काम करने की जरूरत है।
- जहाँ तक सरकारी पद प्राप्त करने का प्रश्न है वहाँ भी गरीब व्यक्ति पीछे रह जाता है, क्योंकि उच्च शिक्षा जैसे बी.ए., एम.ए., इंजीनियरिंग, डॉक्टरी, एम.बी.ए. आदि इतनी महंगी है और उस पर धनी लोगों का इतना प्रभाव है कि वह आम व्यक्तियों को सर्वसुलभ नहीं है। इन सबके बावजूद गरीब परिवारों के तमाम व्यक्तियों ने चाहे वह उच्च राजनीतिक पद जैसे, राष्ट्रपति, मंत्री, सांसद, विधायक या पार्षद का पद हो उसे प्राप्त कर रहे हैं। अतः इसमें जाहिर होता है कि उच्च सरकारी पदों पर भी गरीब एवं मध्यमवर्गीय परिवारों के व्यक्ति अपनी मेहनत व प्रतिभा से पहुँच रहे हैं। प्रति वर्ष आई.ए.एस. तथा पी.सी.एस. की परीक्षाओं में इन वर्गों की सफलता का प्रतिशत बढ़ रहा है।
- आज भी स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद समाज में धर्म और जाति की विषमताएँ दिखायी पड़ती है। शहर की तुलना ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी जातिगत पहचान का अनुभव बहुत जल्दी हो जाता है।

आज स्वतंत्रता के इतने वर्षों के बाद भी स्त्री–पुरूष समानता पूरी तरह स्थापित नहीं हो पायी है। 2001 की जनगणना के अनुसार लड़के तथा लड़कियों के शिक्षा स्तर में भी बड़ा अन्तर है। जहाँ 2001 की जनगणना के अनुसार लड़कों व पुरूषों की यह संख्या 76 प्रतिशत है वहीं लड़कियों और स्त्रियों की यह संख्या 54 प्रतिशत है। इसी प्रकार आज भी लड़के और लड़कियों के प्रति हमारा नजरिया पूरी तरह नहीं बदल पाया है। यह सही है कि बदलते समय के साथ लड़के–लड़की के बीच भेदभाव बहुत कम हुआ है, परन्तु लैंगिक समानता का लक्ष्य अभी भी काफी दूर है।

संवैधानिक प्रयास

भारतीय संविधान सभी व्यक्तियों को समान मानता है। भारतीय संविधान ने मौलिक अधिकारों के माध्यम से समानता को लागू करने का प्रयास करता है।

- देश के सभी व्यक्ति चाहे वे पुरूष हों या स्त्री, किसी भी जाति, धर्म, शैक्षिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से सम्बन्ध रखते हो वे सब समान माने जायेंगे। कानून की दृष्टि में अमीर और गरीब के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जायेगा।
- कोई भी व्यक्ति सार्वजनिक स्थानों पर जा सकता है, जिनमें पार्क, होटल, दुकान, बाजार आदि सभी कुछ सम्मिलित है। सभी लोग सार्वजनिक तालाबों, कुओं, सड़कों आदि का स्वतंत्रता पूर्वक उपयोग कर सकते हैं, इनमें किसी भी आधार पर कोई भेद–भाव नहीं किया जा सकेगा।
- सभी व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार उच्च से उच्च सरकारी पद प्राप्त कर सकेंगे।
- असमानता का सबसे बुरा रूप छुआछूत की प्रथा थी, समानता के अधिकार के द्वारा इसे पूरी तरह समाप्त कर दिया गया है।

विभिन्न योजनाओं के माध्यम से किये गये प्रयास–

सरकार ने संविधान द्वारा दिये गये समानता के अधिकार को दो तरह से लागू किया है– पहला कानून के माध्यम से तथा दूसरा सुविधाहीन समाजों की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से मदद करके। कानून के साथ–साथ सरकार ने उन समुदायों जिनके साथ सैकड़ों वर्षों तक असमानता का व्यवहार हुआ है उनका जीवन सुधारने के लिए अनेक कार्यक्रम और योजनाएँ लागू की हैं।

आओ जानें मिड–डे मील
विश्व की भोजन वितरण की सबसे बड़ी
परियोजना है।

मिड–डे मील योजना

इस दिशा में सरकार द्वारा उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है – ''मध्याह्न भोजन की व्यवस्था'' (मिड डे मील)। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सभी सरकारी स्कूलों के 8वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों को दोपहर का भोजन स्कूल द्वारा दिया जाता है। यह योजना भारत में सर्वप्रथम तमिलनाडु राज्य ने प्रारम्भ की तथा 2001 में सर्वोच्च न्यायालय ने सभी राज्य सरकारों को इसे अपने स्कूलों में छह माह के अंदर लागू करने के निर्देश दिये। इस कार्यक्रम का बहुत ही सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला। दोपहर का भोजन मिलने के कारण गरीब बच्चों ने अधिक संख्या में स्कूल में प्रवेश लेना और नियमित रूप से स्कूल जाना शुरू कर दिया। इस कार्यक्रम से जातिगत असमानता सम्बन्धी पूर्वाग्रहों को कम करने में भी सहायता मिली है क्योंकि स्कूल में निम्न व उच्च जाति के बच्चे साथ–साथ भोजन करते हैं। यद्यपि दोपहर के भोजन कार्यक्रम ने गरीब बच्चों का स्कूलों में प्रवेश और उनकी उपस्थिति तो बढ़ा दी है परन्तु उन स्कूलों का माहौल जहाँ धनी लोगों के बच्चे पढ़ते हैं कुछ अलग है उन स्कूलों से जहाँ गरीब एवं मध्यमवर्गीय परिवारों के बच्चे पढ़ते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में समानता के लिये समय–समय पर आवाज उठती रहती है।

इसके अतिरिक्त अनेक योजनाएँ विशेषकर जो दिल्ली जैसे राज्यों में चलायी जा रही है जिनमें लाडली योजना, किशोरी योजना प्रमुख हैं, इन योजनाओं के माध्यम से स्त्री शिक्षा, स्त्री–पुरुष समानता को विशेष बढ़ावा मिला है। लैंगिक भेदभाव दूर करने में यह एक सकारात्मक पहलू है।

इसके अतिरिक्त समाज के कमजोर वर्गों के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न तरह की छात्रवृत्तियाँ एवं सुविधाएँ सरकार द्वारा दी जा रही है। जिससे उन्हें समानता के स्तर को प्राप्त करने में विशेष सहायता मिल रही है।

इस प्रकार संविधान एवं सरकार दोनों के ही द्वारा समानता प्राप्त करने की दिशा में अनेक प्रयासों की जरूरत है, जिससे समता मूलक आदर्श समाज बनाया जा सके।

आओ जानें

शिक्षक कक्षा को समूहों में विभाजित कर सरकार द्वारा समानता को बढ़ावा देने के लिए चलाये जा रहे योजनाओं पर चर्चा करवाएं।

अभ्यास

1. कार्य पत्रक

'कानून सभी के लिए बराबर है' अपने आस पास खोजे और सही (✓) गलत (✗) पर निशान लगाएं। सभी तथ्यों पर अंत में चर्चा भी की जाए।

1. आप किसी भी विद्यालय में दाखिला ले सकते हैं।
2. आपके परिवार में 18 वर्ष से ऊपर सभी व्यक्ति मतदन कर सकें हैं।
3. आप के माता–पिता अजीविका कमाने हेतु कोई भी कार्य कर सकते हैं।
4. आपका परिवार अपनी इच्छानुसार कोई भी त्यौहार मना सकता हैं
5. आप अपने विद्यालय के आस–पास किसी धर्म, भाषा या जाति के मित्र बनाएंगें, यह सरकार निर्धारित करेगी।

2. आओ समझें

1. "कानून सभी के लिए बराबर है" इस कथन से आप क्या समझते हैं?
2. समानता के लिए संविधान द्वारा क्या प्रयास किया गया है?
3. लोकतंत्र में सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार क्यों महत्वपूर्ण है?
4. मध्याह्न भोजन कार्यक्रम समानता को किस प्रकार बढ़ावा देता है?
5. समानता को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा कौन–कौन सी योजनाएँ चलायी जा रही है?
6. हमारे समाज में असमानता के कौन–कौन से कारण है? उन्हें दूर करने में आप क्या योगदान दे सकते हैं

3. नीचे दी गई तालिका में आप अपने विद्यालय में मिलने वाले मध्याह्न भोजन को लिखिए।

विद्यालय का नाम	
दिन	भोजन का नाम और सामग्री
सोमवार	
मंगलवार	
बुधवार	
वीरवार	
शुक्रवार	
शनिवार	

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक/शिक्षिका विगत पाठों में विद्यार्थी की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1	____________			
2	____________			
3	____________			
4	____________			
5	____________			
6	____________			
7	____________			
8	____________			
9	____________			
10	____________			

12 लिंग बोध

प्रस्तावना

लिंग बोध का मतलब बिना किसी भेदभाव के समाज/परिवार में समान दृष्टि रखना। लिंग बोध की समझ हम अपने परिवार व समाज में पाते हैं। परिवार या समाज में विभिन्न समुदायों के अंतर्गत पुरूष व स्त्री के रूप में भिन्न–भिन्न अवधारणाएँ प्रचलित हैं। यदि हम भारतीय समाज की बात करें, तो हम प्रत्येक समाज में स्त्री पुरूष के बीच बहुत सी असमानताओं को प्रतिदिन देखते हैं। लिंग बोध का आशय मात्र लड़कियों या महिलाओं से ही नहीं होता बल्कि लड़की व लड़का, स्त्री व पुरूष दोनों ही होता है। हम एक परिवार का उदाहरण ले, तो पाते हैं कि एक ही माता–पिता की दो संतानों अर्थात एक लड़का एवं लड़की जन्म से लेकर बड़े होने तक अलग–अलग रूप में परवरिश पाते हैं। लड़की और लड़के अलग–अलग परिस्थितियों व सामाजिक मूल्यों के अधीन बड़े होते हैं। यहीं से भेद व असमानता की शुरूआत हो जाती है।

भारतीय समाज में बच्चे के जन्म के साथ ही लिंग भेद की शुरूआत हो जाती है। हम अपने समाज के कुछ वर्गों में अकसर यह पाते हैं कि परिवारों में बेटे के जन्म पर विधिवत पूजा–पाठ, गीत–संगीत व खुशी की मिठाइयाँ बाँटी जाती हैं। जबकि बेटी के जन्म होने पर ऐसा उत्साह देखने को कम ही मिलता है। समाज को इस विषय पर अपनी सोच सकारात्मक करने की आवश्यकता है।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ से हम –

- लड़के व लड़की में असमानता सम्बंधी विभिन्न कारणों को जान पाएँगे।
- यह भी जान पाएँगे कि आज के संदर्भ में लड़कियाँ किसी भी क्षेत्र में लड़कों से पीछे नहीं हैं।
- विभिन्न सामाजिक आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका की सराहना कर सकेंगे।
- दहेज प्रथा जैसी सामाजिक बुराई को दूर करने में अपनी भूमिका निभाने में सक्षम होंगे।
- महिला सशक्तिकरण के संबंध में सरकारी प्रयासों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

समाज में लड़कों के प्रति अच्छा दृष्टिकोण तथा लड़कियों के प्रति उपेक्षापूर्ण सोच रही है। आज भी लड़के व लड़की के बीच समाज द्वारा किए जा रहे भेदभाव स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। हालांकि शहरी वातावरण में दोनों के मध्य भेदभाव में कुछ कमी अवश्य आयी है जबकि गाँव की स्थिति में कोई खासा परिवर्तन हुआ है।

लड़का व लड़की के रूप में बड़ा होना

अध्यापक– सुधा! आप कितने भाई–बहन हो?

सुधा– सर! हम दो भाई–बहन है।

अध्यापक– सुधा! आप घर में पढ़ने के अलावा क्या–क्या काम करती हो?

सुधा– सर! मैं खाली समय में घर में झाड़ू–पौंछा लगा देती हूँ। थोड़े बहुत कपड़े भी साफ कर देती हूँ तथा अन्य कार्यों में भी माँ की मदद करती हूँ।

अध्यापक– सुधा! आपका भाई घर में किस तरह का सहयोग करता है?

सुधा– सर! वह तो स्कूल से घर आकर भोजन करके अन्य बच्चों के साथ खेलने चला जाता है। और देर शाम घर लौटता है।

अध्यापक– सुधा! क्या आपके माता–पिता आपको भी बाहर खेलने जाने देते हैं?

सुधा– कभी–कभी।

उपरोक्त वार्तालाप से यह स्पष्ट हो जाता है कि एक ही परिवार में जन्मे दो बच्चों में किस हद तक भेदभाव किया जाता है। हमारे समाज में लड़के और लड़की के बीच अकसर भेदभाव देखने को मिलता है। लड़के और लड़की के बीच खेलने–कूदने, खाने–पीने, पढ़ने–लिखने, पहनने–ओढ़ने आदि में भी अन्तर देखने को मिलता है। अकसर हम पाते हैं कि लड़की को अच्छा विद्यालय तथा उच्च शिक्षा के लिए दूर विद्यालय भेजने की लालसा जबकि बेटी को पास के विद्यालय में ही भेजने व उच्च शिक्षा के लिए दूर न भेजने की मंशा रहती है। जबकि इस सन्दर्भ में अभिभावकों की सोच में तीव्र गति से सकारात्मक परिवर्तन भी आ रहा है।

महिलाओं का काम व समानता

कृषि कार्य में व्यस्त महिलाएँ

अभी हमने लड़के व लड़कियों के बीच भेदभाव जानने का प्रयास किया। महिलाएँ पुरूषों से ज्यादा कार्य करती है फिर भी समाज महिलाओं को कम महत्व देता है। पुरूष के कार्यों की पहचान की जाती है जबकि महिलाओं के काम को नजरंदाज किया जाता है। परिवार व समाज में पुरूष और महिलाओं की हैसियत एक जैसी नहीं मानी जाती। एक महिला की गतिविधि सुबह से देर रात तक चलती है जबकि नौकरीशुदा पुरूष का कार्य मात्र 8 घंटे से 10 घंटे तक होता है। फिर भी परिवार में पुरूष की भूमिका ही महत्वपूर्ण मानी जाती है। एक महिला अपने नैसर्गिक कार्य के अतिरिक्त सामान्यतः बच्चों का लालन–पालन से लेकर साफ– सफाई, कपड़े और बर्तन धोना, सभी के लिए भोजन, एवं घर की पूरी देखभाल स्वयं करती है। यदि हम भारत के गाँव में जाएं तो पाते हैं कि एक महिला घरेलू कार्यों के साथ–साथ खेतों में भी कार्य करती है। फसल बोने, निराई, गुड़ाई, कटाई, के सारे कार्य पुरूषों के साथ–साथ महिलाऐं भी करती हैं। आज के परिवेश पर हम नजर डाले तों पाते हैं कि शहरी महिलाएँ घरेलू कार्यो का सफल निर्वाह करते हुए नौकरियाँ भी कर रही हैं। हमारा संविधान महिला और पुरुषों के लिए समान कार्य के लिए समान वेतन की व्यवस्था करता है।

1. मान लिजिए आप के माता–पिता घर से बाहर गए है और आप के घर पर आप के दादा–दादी आ जाते हैं तो इस दशा में आपकी क्या भूमिका होगी।
2. आप अपने घर में पढ़ाई के अलावा और क्या–क्या कार्य करते हैं, सूची तैयार कीजिए।

आओ सीखें

1. अपने अनुभव के आधार पर महिलाओं एवं पुरुषों द्वारा किए जाने वाले कार्यों की सूची बनाइए। इसमें पाए जाने वाले अन्तर को कक्षा में साझा कीजिए।

12.1 आओं जाने

1. स्त्रियों के साथ भेदभाव एक .... है। (सामाजिक बुराई, सामाजिक अच्छाई)
2. सामान्यतः पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं के कार्य करने के घन्टे .... होते हैं। (कम, ज्यादा)

महिला आन्दोलन

आधुनिक समाज में महिलाओं में जागृति आई है। उन्होंने अपने अधिकारों के लिए आन्दोलन शुरू किए। विगत वर्षों में महिलाओं द्वारा चलाये गए प्रमुख आन्दोलन निम्नलिखित है–

चिपको आन्दोलन

इस आन्दोलन का प्रारम्भ 1973 में उत्तराखण्ड के रैनी गाँव से हुआ। वहाँ की महिलाओं ने वनों की कटाई के दिए किए गए ठेके के विरूद्ध पेड़ों से चिपक कर इसका विरोध किया और वनों को काटने से बचाया।

"क्या आप जानते हैं? – राष्ट्रीय वन नीति 1952 के अनुसार देश की 33 प्रतिशत भूमि पर वनों का विस्तार होना चाहिए।"

ताड़ी विरोध आन्दोलन

यह आन्दोलन आंध्र प्रदेश में महिलाओं द्वारा शुरू किया गया क्योंकि पति ताड़ी पीकर अपनी पत्नियों के साथ अभद्र व्यवहार के साथ घरों को बर्बाद कर रहे थे।

घरेलू हिंसा के खिलाफ आन्दोलन– घरेलू हिंसा आधुनिक भारतीय समाज की एक विडम्बना बनी हुई है। आज भी घर के अन्दर महिलाओं का अनेक रूपों में शोषण हो रहा है जैसे– पति द्वारा मार पीट, दहेज के लिए प्रताड़ना, सास व ननद के ताने, परिवार के पुरूषों द्वारा यौन शोषण का प्रयास आदि के विरूद्ध महिलाएँ एकजुट होकर समय–समय पर आन्दोलन करती रही हैं। यही वजह है कि सरकार ने भी घरेलू हिंसा के खिलाफ कड़े कानून बनाए हैं। घरेलू हिंसा निवारण अधिनियम–2005 इसका उदाहरण है।

"क्या आप जानते हैं? – श्रीमति राजम्मा आंध्र प्रदेश की महिला ने प्रदेश से शराब की दुकाने बन्द करने के लिए अभियान चलाया ताकि पुरूषों द्वारा किए जा रहे अत्याचार को रोका जा सके।"

12.2 आओ जाने

1. चिपको आन्दोलन भारत के किस राज्य में चलाया गया? इन आन्दोलन की क्या प्रमुख विशेषता रही?
2. ताड़ी विरोध आन्दोलन का क्या उद्देश्य था?

परिवार में महिला की भूमिका

प्रत्येक परिवार में एक महिला की काफी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक महिला माँ के रूप में जगत जननी कहलाती है। सृष्टि की रचना में औरत की अहं भूमिका होती है। यहाँ तक की बच्चों की पहली शिक्षक माँ ही होती है। बच्चे बोलना–चालना, अच्छे संस्कार, शब्दों का ज्ञान, रिश्तों की पहचान आदि माँ से अधिक सीखता है। एक जागरूक महिला के द्वारा ही अच्छे समाज का निर्माण होता है। यदि महिला पढ़ी–लिखी है, तो उसके बच्चों को भी पढ़ा–लिखा होने की संभावना वढ़ जाती है। यही कारण है कि आज महिलाओं में शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ती जा रही है। सभी क्षेत्रों जैसे राजनीति, शिक्षा जगत, आर्थिक जगत, वैज्ञानिक, चिकित्सा समाज सेवा, सेना यहाँ तक कि अंतरिक्ष के क्षेत्र में भी महिलाओं की अहम् भूमिका है।

भारत की सफल महिलाओं की सूची–

1.	विजय लक्ष्मी पण्डित	संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा की अध्यक्षा
2.	इन्दिरा गाँधी	भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री
3.	किरण बेदी	प्रथम महिला आई.पी.एस.
4.	महादेवी वर्मा	साहित्य
5.	पी.टी. उषा	एथेलेटिक्स
6.	सानिया मिर्जा	टेनिस
7.	मेरीकॉम	बॉक्सिंग
8.	इन्दिरा नूई	चेयरमैन, पेपसीको
9.	मीरा कुमार	प्रथम लोकसभा स्पीकर
10.	पी. वी. सिन्धू	बैडमिन्टन
11.	कल्पना चावला	अंतरिक्ष (भारतीय मूल की जन्मी)
12.	प्रतिभा देवी सिंह पाटिल	भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति
13.	बछेन्द्री पाल	पर्वतारोहण
14.	लता मंगेशकर	संगीत
15.	मेधा पाटकर	समाज सेवा
16.	मदर टेरेसा	समाज सेवा

आओ जानें

ऊपर दी गई सफल महिलाओं की सूची से आपको क्या प्रेरणा मिलती है? आप इस सूची में कुछ नाम और जोड़िए

दहेज प्रथा

दहेज एक सामाजिक बुराई है, जिसका अन्त अतिआवश्यक है। इसके द्वारा समाज में लालच, असंतोष, आर्थिक बर्बादी, शोहरत के नाम पर स्त्री प्रताड़ना, महिलाओं को घर से बाहर निकालना, तलाक, आदि हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप लिंगानुपात घटता जा रहा है। लड़कियों को जन्म के साथ ही (भ्रूण हत्या) मारने लगे हैं ताकि दहेज रूपी दानव का सामना न करना पड़े। यद्यपि कि राज्य सरकारों ने भ्रूण हत्या पर सख्त कानून बनाए है जिसका असर कुछ देखने को मिल रहा है। सामाजिक व लैंगिक असमानता बढ़ती जा रही है।

"**क्या आप जानते हैं?** – दहेज प्रथा को समाप्त करने के लिए सरकार ने सन् 1961 में दहेज प्रतिषेध अधिनियम पारित किया था।"

"**क्या आप जानते हैं?** – भारत में लिंगानुपात प्रति हजार पुरूषों पर 940 है।"

"**क्या आप जानते हैं?** – दहेज प्रथा भारतीय समाज पर एक बहुत बड़ा कलंक है जिसके परिणाम स्वरूप न जाने कितने ही परिवार बर्बाद हो चुके हैं, कितनी महिलाओं ने अपने प्राण गवां दिए हैं।"

महिला सशक्तिकरण–

भारतीय संविधान में सभी को समानता का अधिकार दिया गया है, लेकिन महिलाएँ इन अधिकारों से किसी न किसी रूप में वंचित रही हैं। प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा कुछ विशेष प्रावधान किये गये हैं, ताकि महिलाओं को भी सशक्त बनाया जा सके। यह महिला सशक्तिकरण का ही परिणाम है कि आज स्थानीय स्तर पर राजनीति में महिलाओं की भागीदारी 33 प्रतिशत निश्चित की गई है। आज गाँव में महिला ग्राम प्रधान, सरपंच से लेकर, जिलाधीश, पुलिस अधीक्षक, मुख्यमंत्री, राज्यपाल, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति जैसे संवैधानिक पदों पर कार्य करती रही हैं। साथ ही सेना के तीनों विंग थलसेना, वायुसेना तथा जलसेना में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है।

"**क्या आप जानते हैं –**

1. रजिया सुलतान– मेरठ (उत्तर प्रदेश) की बालिका, जो स्वयं भी एक बाल मजदूर थी, बाल मजदूर लड़कियों की शिक्षा के लिए बेहतर प्रयास किया।
2. लक्ष्मी लाकरा– एक 27 वर्षीय आदिवासी महिला, प्रथम रेलवे इंजन चालक। लक्ष्मी लाकरा के शब्दों में "मुझे चुनौतियों से खेलना पसंद है और जैसे कोई यह कहता है कि फलां काम लड़कियों के लिये नहीं है, मैं उसे करके रहती हूँ।"
3. आप अपने क्षेत्र में अच्छे काम करने वालों की एक सूची तैयार कीजिए।

कार्यपत्रक

1. आपके विचार से निम्नलिखित कार्य सामान्यतः किसके द्वारा सम्पन्न किये जाते हैं? उचित कॉलम से सही (✓) का निशान लगायें–

विभिन्न कार्य	माता/बेटी	पिता/बेटा	दोनों
खाना बनाना			
बर्तन साफ करना			
झाडू–पौंछा करना			
कपड़े धोना			
बाजार से सामान लाना			
बच्चों को स्कूल छोड़ना			
नौकरी करना			
बिजली बिल भरना			
पानी बिल भरना			
बैंक का कार्य			
गृह कार्य कराना			
दूध लाना			

2. **सही जोड़े बनायें–**

(I)	साहित्य	मेधा पाटकर
(ii)	अंतरिक्ष	हेमा मालिनी
(iii)	खेल	महादेवी वर्मा
(iv)	पुलिस सेवा	कल्पना चावला
(v)	पर्वतारोहण	किरण बेदी
(vi)	संगीत	बछेन्द्री पाल
(vii)	अभिनय	लता मंगेश्कर
(viii)	समाज सेवा	पी.टी. उषा

3. चिपको आन्दोलन का चित्र बताइए।

4. दहेज प्रथा को समाप्त करने से सम्बंधित 'स्लोगन' बनाइए।

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक / शिक्षिका विगत पाठों में विद्यार्थी की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1				
2				
3				
4				
5				
6				
7				
8				
9				
10				

13 संचार माध्यम व विज्ञापन

प्रस्तावना

आज प्रत्येक आयु वर्ग के व्यक्ति पर विज्ञापन प्रभाव डालते हैं। जबकि हम विज्ञापन तथा विज्ञापित वस्तु की सच्चाई के बारे में पूरी तरह से नहीं जानते हैं। इसी सच्चाई को प्रस्तुत अध्याय में समझाने का प्रयास किया गया है। इस अध्याय के प्रथम भाग में संचार माध्यमों के विकास क्रम में समझाने का प्रयास किया गया है कि संचार के माध्यम किस प्रकार लोकतंत्र को प्रभावित करते हैं। समाचार या खबर के मसौदे किस प्रकार तैयार होते हैं तथा बड़े व्यवसायी किस प्रकार इसे प्रभावित करते हैं?

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के उपरांत शिक्षार्थी संचार के माध्यमों को समझ सकेंगे। विद्यार्थी लोकतंत्र में संचार माध्यमों की महती भूमिका को समझ सकेंगे कि संचार के माध्यम लोकतंत्र को किस प्रकार मजबूत बनाते हैं। लोकतंत्र में स्वतंत्र मीडिया का क्या महत्व होता है? साथ ही सैंसरशिप की जानकारी भी प्राप्त कर सकेंगे।

अध्याय के दूसरे भाग में विज्ञापन की जानकारी विद्यार्थियों को प्रदान की गयी है। विज्ञापन किस प्रकार वस्तु की मांग को उत्पन्न करते हैं। विज्ञापन उपभोक्ताओं को किस प्रकार वस्तु की मांग करने के लिए प्रेरित करते हैं। विज्ञापन उपभोक्ताओं को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। शिक्षार्थी यह समझ सकेंगे कि विज्ञापन व संचार के माध्यमों में क्या संबंध है। शिक्षार्थी विज्ञापनों के बनने की प्रक्रिया को समझ सकेंगे। साथ ही शिक्षार्थियों को यह भी समझाने का प्रयास किया गया है कि वह विज्ञापनों की भ्रमित दुनिया से सचेत रहें।

संचार के माध्यम व तकनीक

हम व्यक्तियों को गली–मौहल्ले में चाय की दुकान या घर में बात करते देखते हैं। बातचीत द्वारा वे जानकारी प्रदान करते हैं व एक दूसरे से जानकारी प्राप्त करते हैं। इसी जानकारी के आदान–प्रदान को संचार कहते हैं। चित्र देखिए एवं पढ़िए।

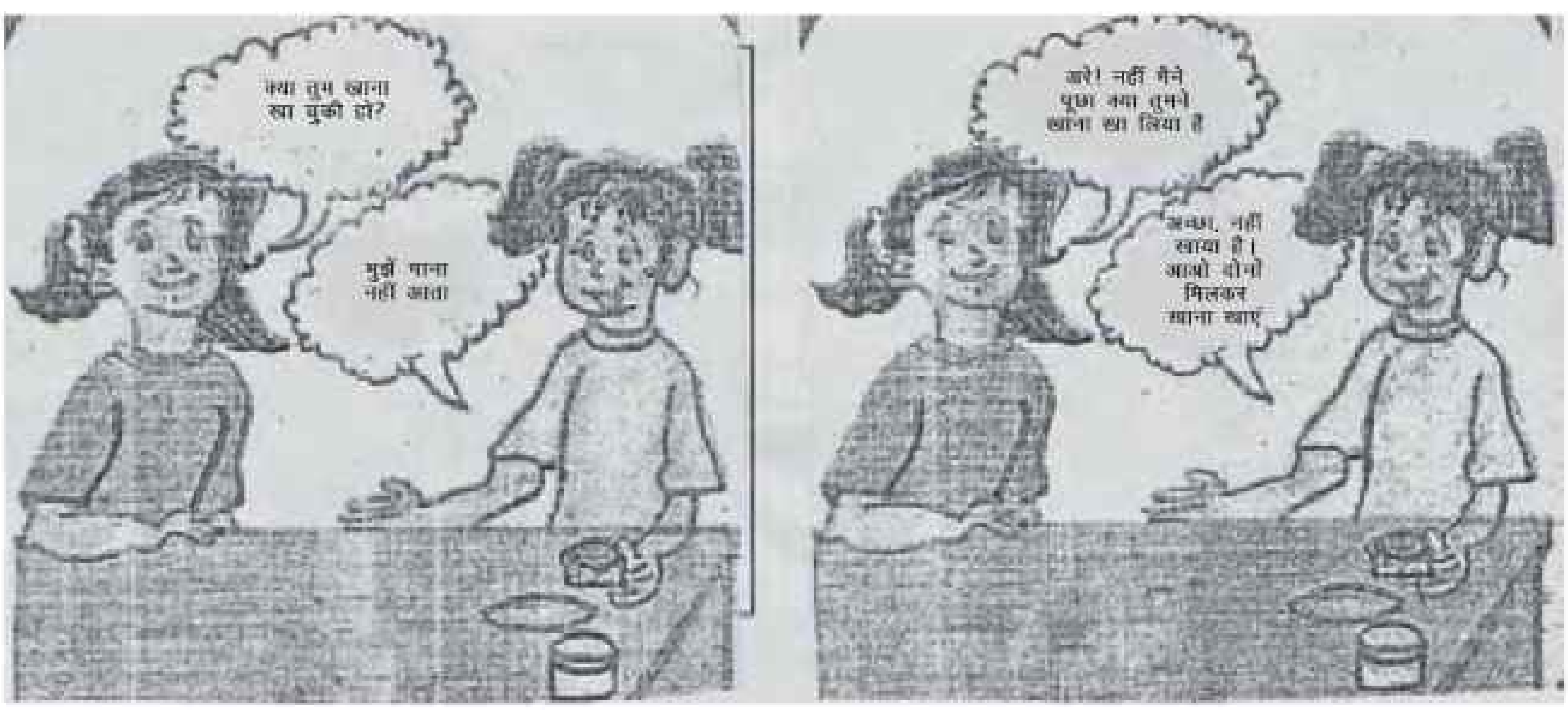

उपरोक्त चित्रों में दो लड़कियाँ वार्तालाप कर रही है। पहली लड़की श्यामा ने गौरी से खाने के बारे पूछा, उसने गाना समझा। जब श्यामा ने पुनः समझाया तब गौरी को बात समझ आई अर्थात् संचार पूर्ण हुआ।

इसका अर्थ है संचार तभी पूर्ण होता है जब कही गई बात को उसी अर्थ में समझा जाता है। जैसा सोचकर कहने वाले ने कही है। जैसे उपरोक्त वार्तालाप में पहली बार में संचार पूर्ण नहीं हुआ था। वार्तालाप संचार का उत्तम साधन है। इस वार्तालाप के संचार की कोई लागत नहीं होती।

संचार के साधन :

1. पत्र

पोस्टकार्ड

पत्र पेटिका

आपके कुछ जानकार मित्र, रिश्तेदार, दूर गाँव या शहर में रहते होंगे। यदि हम उन्हें संदेश देना चाहते है। संदेश पहुँचाने के लिए डाक विभाग अच्छा साधन है। आप डाकघर से पोस्ट कार्ड खरीदें। पोस्टकार्ड पर संदेश लिख कर पत्र पेटिका में डाल दें। ऐसा करने पर आपका संदेश आपके रिश्तेदार या संबंधी तक पहुँच जाता है तथा संचार पूर्ण हो जाता है।

अतः संचार का एक माध्यम डाक है। गाँव–देहात में आज भी इस साधन का प्रयोग किया जाता है। संचार का यह माध्यम अन्य माध्यमों से सस्ता है आसान है।

इन्हें भी जानें–

1. बहुत समय पहले इन्हें भी जाने संदेश कबूतर के गले में चिट्ठी द्वारा भेजे जाते थे।
2. मुगल–साम्राज्य काल में हरकारा प्रणाली संचार का माध्यम थी। शाही आदेश इसी प्रणाली से भेजे जाते थे।
3. अंग्रेजी शासन काल में संचार की एक प्रणाली टेलीग्राम जो शुरू हुई थी वह भारत सरकार ने 15.07.2013 को बन्द कर दी क्योंकि आज संचार के बहुत तेज साधन विकसित हो चुके है।

2. समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ

जरा सोचिए! यदि आपको ऐसे व्यक्तियों को संदेश भेजना हो जिन्हें आप जानते नहीं है तथा सभी को एक जैसा ही संदेश भेजना हो, पहली कठिनाई ये होगी कि एक ही संदेश अनेक बार लिखना होगा। दूसरी कठिनाई आप उन व्यक्तियों को जिन्हें आप जानते नहीं है तो किस पते पर संदेश भेजेंगे। इन्हीं कठिनाईयों को दूर करने के लिए छपाई का आविष्कार हुआ। यह छपाई लम्बे समय से जारी है, समय के साथ–साथ इसकी तकनीक में बदलाव होते रहे हैं।

न्यूज पेपर

तकनीकी बदलावों के कारण ही आजकल छपी सामग्री सस्ती दर पर आसानी से उपलब्ध है। समाचार पत्र तथा पत्रिका के माध्यम से हम आसानी से संचार कर सकते हैं। ये संचार के माध्यम हमें देश–विदेश की जानकारी प्रदान करते हैं। इसकी एक सीमा भी है कि यह केवल पढ़े–लिखे व्यक्तियों के लिए ही संचार का माध्यम है। अनपढ़ व्यक्तियों के लिए यह संचार नहीं कर सकता है। संचार के इन माध्यमों को "प्रिंट मीडिया" कहा जाता है।

3. संचार इलैक्ट्रॉनिक माध्यम या इलैक्ट्रानिक मीडिया–

- **रेडियो–** छपाई के माध्यम समाचार पत्र व पत्रिका की सीमा यह है कि वह अनपढ़ व्यक्तियों के लिए संचार नहीं कर सकते हैं। इस सीमा को समाप्त किया रेडियो के आविष्कार ने। रेडियो श्रवण (सुनने) के संचार का माध्यम बना। आप रेडियो सुनकर सूचना व संदेश की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। दिल्ली के आकाशवाणी की खबरे पूरे भारत में सुनी जा सकती है। रेडियो इलैक्ट्रॉनिक मीडिया संचार का ऐसा माध्यम है जो अधिकांश जनता तक अपनी पहुँच बना चुका है। इसके माध्यम से सरकारी संदेश हम तक पहुँचते है। समाचार सुनना, कृषि दर्शन, हवा महल जेसे मनोरंजक व ज्ञान वर्धक कार्यक्रम, खेलों का आँखों देखा हाल हम रेडियो के माध्यम से सुनते हैं। आपदा के समय संदेश भेजने के लिए भी यह सबसे उपयुक्त साधन है।

रेडियो

- **टेलीविज़न–** टेलीविज़न के आविष्कार ने संचार को गति प्रदान की। इस माध्यम से हम संदेश केवल सुनते ही नहीं है बल्कि देख भी सकते हैं। आप यदि दस दिन पूर्व की कोई बात जो आपके मित्र या संबंधी ने कही थी, याद करने का प्रयत्न करें शायद कठिनाई से याद आए या याद ही न आए। परंतु हमें टेलीविज़न पर सुना गया, देखा गया संदेश, घटना या धारावाहिक की घटना याद रहती है। इस प्रकार टेलीविज़न सुनाने के साथ–साथ घटनाओं को चित्र रूप में भी प्रस्तुत करता है। जिससे सूचना हमारे मस्तिष्क में स्थाई रूप से बनी रहती हैं तथा प्रभावी रहती हैं। यह देश विदेश की घटनाओं को चित्र सहित विस्तार से दर्शाता है जैसे यमुना का जलस्तर कितना बढ़ा है आप घर बैठे ही देख सकते हैं।

मोबाईल

- **मोबाईल–** यह वर्तमान समय में सबसे अधिक प्रचलन में है। इसके माध्यम से हम देश विदेश के किसी भी कोने में बात कर सकते हैं। कुछ ही सेकेण्ड में आप दुनिया के किसी भी भाग में बात कर सकते हैं। यह साधन इतना उपयोगी है कि कम आय वर्ग के लोग भी इसका प्रयोग कर रहे हैं। जिस प्रकार हम वार्तालाप करते हैं इसी प्रकार का अनुभव मोबाईल पर बात करने पर होता है। आधुनिक मोबाईल में अनेक प्रकार की अन्य सुविधाएँ भी है। जिनके कारण आज यह विश्व स्तर पर उपयोगी है। इससे आजकल संदेश भेजना, बैंक के लेन–देन आदि भी किए जाते हैं।

- **कम्प्यूटर (इंटरनेट)–** यह आधुनिक युग का सबसे तीव्र साधन है। इसके माध्यम से आप देश–विदेश में चित्र सहित बात कर सकते हैं। जिस प्रकार आप वार्तालाप में आमने–सामने खड़े होकर बात करते हैं। इसके द्वारा लिखित पत्र (ई–मेल) आदि इंटरनेट के माध्यम से भेजे जाते हैं। जिसके कारण हमारे पास साक्ष्य रूप में भी संदेश सुरक्षित रहते है। इसके माध्यम से चित्र व चलचित्र (वीडियो) के रूप में भी संदेशों का आदान–प्रदान आसानी से होता है। इसके अतिरिक्त इंटरनेट से समस्त दुनिया की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। दुनिया के किसी भी क्षेत्र की सूचनाएँ इंटरनेट पर उपलब्ध है। इस प्रकार इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों में कम्प्यूटर सर्वोत्तम साधन है।

कम्प्यूटर

इन्हें भी जाने–

1. विश्व की पहली प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार गुटेनबर्ग ने 1448 में किया। सबसे पहले छपने वाली पुस्तक बाईबल थी।
2. टेलीविजन का आविष्कार पोलगेट लेव निपकाव ने 1884 में किया।
3. मोबाइल फोन का आविष्कार मार्टिन कूपर ने 1983 में किया। पहले मोबाइल फोन का वजन 1.1 किग्रा. था।

13.1 आओ जानें

प्रश्न अ प्रत्येक प्रश्न के अंत में कोष्ठक ( ) में लिखे शब्दों से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिऐ।

1. पत्र पेटिका के माध्यम से संदेश .... द्वारा भेजे जाते हैं। (पत्र, समाचार पत्र)
2. .... प्रिंट मीडिया का अंग है। (पत्रिका, रेडियो)
3. दुनिया में .... संचार का सबसे तीव्र साधन है। (स्थानीय समाचार पत्र, कम्प्यूटर इंटरनेट सहित)
4. .... इलैक्ट्रॉनिक मीडिया का भाग है। (वार्तालाप, पत्र, मोबाइल)
5. कक्षा को चार समूहों विभाजित कर

प्रश्न ब प्रत्येक समूह रेडियो, टेलीविजन, मोबाइल एवं कम्प्यूटर के उपयोग के फायदे व नुकसान पर चर्चा करें।

संचार के माध्यम व लोकतंत्र

आपने चुनाव होते देखे होंगे। पोस्टर, बैनर लगाऐ जाते हैं, नेता द्वार–द्वार आते हैं, नुक्कड़, पार्क व चौराहों पर भाषण होते हैं, नऐ वादे किए जाते हैं, जनता वोट देती है, और अपनी सरकार का चुनाव करती है। लोकतंत्र में जनता की सरकार जनता के लिए कार्य करती है।

सरकार जनता के लिए जो कार्य करती है उन कार्यों की जानकारी जनता को संचार के माध्यमों से प्राप्त होती है। यह सूचनाऐं प्रमुखतः समाचार पत्र व टेलीविज़न से प्राप्त होती है। जैसे– सरकार की नई योजनाओं की जानकारी देना। सरकार के काम करने का ढंग कैसा है। जब सरकार कानून बनाती है, कानून में बदलाव करना चाहती है तब सरकार संचार माध्यमों के द्वारा आम जनता की कानून पर राय मांगती है। इसी प्रकार सरकार के निर्णय जनता तक संचार के माध्यमों द्वारा ही पहुँचाते हैं। सरकार के अप्रिय निर्णयों का विरोध भी जनता करती है। सरकार को सलाह देना व अप्रिय निर्णयों का विरोध आदि कार्य लोकतंत्र को मजबूत करता है।

शुद्ध व स्वच्छ लोकतंत्र के लिए समाचार पत्र व अन्य संचार के माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका है। सरकारी खबर, सूचना या समाचार संतुलित होने चाहिए। संतुलित का अर्थ है कि समाचार के हर पहलू पर विचार किया जाए। सभी विचारों को खबर में स्थान दिया जाए। खबर अच्छे व बुरे प्रभावों को ध्यान में रखकर बनाई गयी है। साथ ही यह भी ध्यान रखा गया हो कि जनता की भावनाऐं आहत न हो। स्वच्छ लोकतंत्र के लिए मीडिया का स्वतंत्र होना आवश्यक है। सरकार जब प्रसारण पर प्रतिबंध लगाती है तो उसे सैंसरशिप कहते हैं। फिल्म के शुरु होने के पहले एक चित्र जिस पर सरकारी आदेश लिखा होता है वह सैंसर बोर्ड का प्रमाणपत्र होता है। अतः फिल्में पहले सैंसर बोर्ड से पास होकर दिखाई जाती है। परंतु न्यूज चैनल, समाचार पत्र आदि पर सरकार का प्रतिबंध नहीं है। निर्देश जरूर दिए गए हैं जिससे समाचार संतुलित हो।

दूसरी स्वतंत्रता उन व्यवसायी से है जो न्यूज चैनल आदि को विज्ञापन देते हैं। सूचना संचार का कार्य आज अत्यधिक महंगा हो गया है। अतः विज्ञापन दिखाना आवश्यक हो जाता है परन्तु इन विज्ञापन दाताओ का प्रभाव खबरों पर नहीं होना चाहिए। कई अन्य निजी चैनल प्रायः खबरों के प्रकाशन में उनके पक्ष का ध्यान रखते हैं जो उन्हें विज्ञापन देते हैं।

दूसरी और इनका ध्यान ऐसे समाचारों पर अधिक रहता है जिनके द्वारा अधिक जन समर्थन मिलें। ब्रेकिंग न्यूज इसी प्रकार के पक्षों को ध्यान में रखकर बनाई जाती है। इस प्रकार माना जा सकता है कि मीडिया लोकतंत्र का महत्वपूर्ण स्तम्भ है, क्योंकि संचार माध्यम के द्वारा ही सरकारी आदेश व सूचनाऐं जनता तक पहुँचाती है। जनता का विरोध व सहमति भी सरकार तक संचार माध्यमों के द्वारा ही पहुँचायी जाती है।

संचार माध्यम तथा टी.वी. – यह हम सब जानते हैं टी.वी. संचार का महत्वपूर्ण साधन है। यह हम सभी के घरों में देखा जाता है। उन पर चर्चा होती है। समाचार दिखाये जाते हैं। राजनेताओं की बहस दिखाई जाती है, खबरों की समीक्षा होती है। याचक भी अपने विचार प्रस्तुत करता है। इस प्रकार टी.वी. हमारे जीवन पर एक छाप छोड़ता है, हमें प्रभावित करता है। हम धारावाहिक के एक पात्र को अधिक पसंद करते हैं। किसी खिलाड़ी विशेष की तरह बनना चाहते हैं। फिल्म के नायक तथा अपने में तुलना करते हैं। सोचिए! आपको कौनसा खिलाड़ी, नायक, या धारावाहिक पसंद है और क्यों? क्या कोई सामाजिक क्षेत्र भी है जो टी.वी. पर नहीं दिखाया जाता? टी.वी. पर धारावाहिक समाज के किस वर्ग से संबंधित होते हैं?

यहाँ ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि टी.वी. हमें क्या दिखा रहा है? उसमें वास्तविकता कितनी है। विज्ञापन की उपयोगिता कितनी है। टी.वी. हमारे रहन–सहन व विचारों को प्रभावित करता है। जो टी.वी. दिखाता है वह समाज का एक काल्पनिक पक्ष है। विज्ञापन उत्पाद की बिक्री बढ़ाने के लिए है। उसका मनुष्य पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन आवश्यक है। हमें टी.वी. का आनन्द लेना चाहिए परंतु समाज की कसौटी पर परखना भी चाहिए।

संचार के माध्यम एवं विज्ञापन

विज्ञापन हम हर स्थान पर देखते हैं। सिनेमा हाल, गली–मौहल्ले में, बस में, ट्रेन में, मेट्रो में हम जहाँ जाते हैं ये हमे वही मिलते हैं। आइए जाने कि यह हम तक किन माध्यमों से पहुँचते हैं। ये माध्यम हैं–

1. समाचार पत्र
2. पत्रिका
3. पम्फलेट
4. पोस्टर, बैनर
5. रेडियो
6. टेलीविज़न
7. कम्प्यूटर
8. मोबाइल

उपरोक्त में पहले चार साधन छपाई के रूप में होते हैं। यह साधन राह चलते आम आदमी को प्रभावित करते हैं। समाचार पत्र, पत्रिका में विज्ञापनों को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। जिस वस्तु को विज्ञापित किया जाता है उसको सुन्दर फोटो के रूप में दिखाते हैं। उसका प्रयोग समझाया जाता है। उसकी क्षमता यदि आवश्यक हो तो बताई जाती है।

रेडियो

रेडियो संचार का माध्यम है। यह विज्ञापन का भी प्रमुख माध्यम है। इस प्रकार विज्ञापन अधिक व्यक्तियों तक पहुँचता है। रेडियो के लिए विज्ञापन बनाना सस्ता होता है। क्योंकि इसमें एक या दो व्यक्तियों की बातचीत से ही वस्तु का विज्ञापन किया जाता है। दूसरे रेडियो पर विज्ञापन का प्रसारण शुल्क कम होता है।

टेलीविज़न

यह विज्ञापन का सबसे अधिक प्रभावशाली माध्यम है। इसके अन्तर्गत वस्तु के चित्र प्रस्तुत किए जाते हैं। किसी व्यक्ति द्वारा वस्तु के गुण व प्रयोग बताए जाते हैं, जैसे– वाशिंग मशीन, फ्रिज आदि। इसी प्रकार सेवाओं के विज्ञापन भी दिखाए जाते हैं, जैसे शादी–विवाह के पंडाल के विज्ञापन। टेलीविज़न के लिए विज्ञापन बनाना महंगा होता है। इसका कारण वस्तु का विडियो के रूप में प्रस्तुत करना है। दूसरे विडियो प्रायः प्रतिष्ठित व्यक्ति के द्वारा वस्तु तथा सेवाओं के प्रयोग को बताया जाता है। जैसे नायक–नायिका, गायक आदि। प्रतिष्ठित व्यक्तियों को किया जाने वाला भुगतान इन विज्ञापनों को महंगा करता है। साथ ही टेलीविज़न पर विज्ञापन प्रसारण की कीमत समय के अनुसार दी जाती है।

कम्प्यूटर व मोबाइल

आजकल ई–मेल, फेसबुक, एस.एम.एस. द्वारा भी विज्ञापन प्रस्तुत किए जाते हैं। मोबाइल द्वारा विज्ञापन करना सस्ता होता है। इन पर वस्तु की अपेक्षा सेवाओं के विज्ञापन अधिक होते हैं।

आओ करें

1. शिक्षक बच्चों से अपने पसंदीदा उत्पाद पर विज्ञापन बनवाएं। उदाहरण के लिए बिस्कुट, चॉक्लेट, क्रीम इत्यादि, उत्पाद बनवाकर बच्चों के सामने उन्हें प्रस्तुत भी करवाइए।
2. आपके घर में विज्ञापनों से प्रभावित होकर कौन सी वस्तुएँ खरीदी गई हैं, एक सूची तैयार कीजिए।

विज्ञापन क्यों दिए जाते हैं? आओ जाने!

हम यह देखते हैं कि विज्ञापन का प्रदर्शन अत्यधिक किया जाता है, धारावाहिक के मध्य में, मैच के प्रसारण में, व न्यूज चैनल पर प्रायः प्रत्येक समाचार के बाद कार्यक्रमों में विज्ञापन दिखाए जाते है। उपरोक्त माध्यमों में बार–बार विज्ञापन देखने के कारण आम आदमी के मस्तिष्क में वस्तु की एक पहचान बन जाती है। यह पहचान प्रायः वस्तु के नाम के आधार पर होती है। वस्तु के इसी नाम की पहचान को व्यापारिक भाषा में ब्रांड कहते हैं। व्यक्ति को वस्तु के ब्रांड की जानकारी होने पर, वस्तु के गुणों की जानकारी होने पर व्यक्ति ब्रांडेड वस्तु की ही मांग करते हैं। इस प्रकार विज्ञापन वस्तु की मांग को बढ़ाने का काम करती हैं। मांग को बढ़ाने का ही नही वरन् मांग को उत्पन्न करने का कार्य भी करते हैं। वस्तु बनाने वाले को उत्पादक कहते हैं। उत्पादक विज्ञापन में आकर्षक पैकिंग व गुणों की जानकारी देता है। जिसके कारण मांग बढ़ती है, मांग से बिक्री बढ़ती है और बिक्री से आय बढ़ती है।

प्रायः ब्रांडेड व पैकिंग की वस्तु को गुणवत्ता के आधार पर अच्छा माना जाता है। वास्तव में खुले रूप में बिकने वाली वस्तु भी गुणवत्ता में लगभग पैकिंग की वस्तु के समान ही होती है। पैकिंग वाली वस्तुएँ महंगी होती हैं। इसका कारण विज्ञापन की लागत है। छोटे दुकानदार या उत्पादक विज्ञापन की लागत वहन नहीं कर पाते हैं। अतः खुले रूप में व सस्ती वस्तु बेचने को विवश होते हैं। जिसके कारण वस्तुओं की बिक्री कम होती है व लाभ भी कम होता है।

13.2 आओ समझें

नीचे दिए गए प्रश्नों के चार विकल्प दिए गए हैं, प्रश्न को ध्यान से पढ़िए व सही विकल्प को चुनिए।

1. निम्न में से किसके द्वारा छपाई के रूप में विज्ञापन दिया जाता है?

   (क) रेडियो (ख) टेलीविज़न (ग) पत्रिका (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

2. एस.एम.एस. विज्ञापन किस के द्वारा किया जाता है?

   (क) टेलीविज़न द्वारा (ख) रेडियो द्वारा (ग) समाचार पत्र द्वारा (घ) मोबाइल द्वारा

3. निम्न में से विडियो (फिल्म) के रूप में विज्ञापन किस माध्यम द्वारा किए जाते हैं?

   (क) समाचार पत्र (ख) टेलीविज़न (ग) पत्रिका (घ) रेडियो

अभ्यास

1. संचार के इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों के चित्र बनाए।
2. संचार के माध्यम लोकतंत्र को किस प्रकार मजबूती प्रदान करते हैं?
3. आपको सबसे अच्छा विज्ञापन कौन सा लगता है और क्यों?
4. विज्ञापन क्यों बनाए जाते हैं?
5. निम्न कार्यपत्रक में संचार के माध्यमों को बाएं से दाएं व ऊपर से नीचे लिखे अक्षरों में पहचानों व पैंसिल से गोला लगाएं।

स	म	र	कु	ले	स	मा	ज	ऐ	ना	सो
टे	ली	वि	ज़	न	स	ज	न्यू	आ	औ	र
रा	रे	सा	स	मा	धा	पा	सा	हो	चा	गा
ग	है	क्ष	मा	ऋ	जु	ई	रू	का	ना	ना
नी	व	रा	चा	आ	रे	डि	यो	ना	जा	पा
धा	का	खे	र	स	म	मो	स	मा	न	स
वा	र्ता	ला	प	ता	ई	बा	गा	रू	री	कु
सा	ना	प	त्र	री	वो	ई	न्ट	र	ने	ट
पा	ध	ना	खा	जा	नु	ल	ल	ख	प	थ
सा	स	स	प	त्री	का	क	रा	म	ज	त
रे	को	रू	यी	ना	चा	रा	गे	वा	बा	शा

6. विज्ञापन से होने वाले नुकसान और फायदे पर कक्षा में चर्चा कीजिए?

आओ करें

1. शिक्षक कक्षा में विभिन्न प्रकार के बाजारों के दृश्य चित्रों द्वारा दिखाएँ एवं चर्चा करवाएँ।

14

बाजार

भूमिका:

रोज़मर्रा के जीवन में हम बाज़ार जाते रहते हैं, हम वहाँ बहुत सी चीजें खरीदते हैं जैसे कपड़े, जूते, विभिन्न खाद्य–सामग्रियां, दवाईयाँ, रसोई का सामान, स्टेशनरी, फ्रिज, टी.वी., फर्नीचर आदि। क्या आप कुछ अन्य वस्तुओं के नाम इस सूची में जोड़ सकते हैं?

बाज़ार कई प्रकार के होते हैं जैसे– मोहल्ले की दुकान, साप्ताहिक बाज़ार, स्थानीय बाज़ार, शॉपिंग मॉल, थोक बाज़ार आदि। इस अध्याय में हम यह समझेंगे कि बाज़ार क्या होते हैं? इनमें दुकानदार सामान कहाँ से लाते हैं? बाजारों में ग्राहक (खरीददार) कौन होते हैं? इसके साथ–साथ इन बातों को जानकर हम एक समझदार ग्राहक बनने का प्रयास कर सकेंगे।

बाजार वह स्थान होता है जहाँ वस्तुएँ खरीदी व बेची जाती है। वस्तुओं को बेचने वाला दुकानदार या व्यापारी कहलाता है। वस्तुओं को खरीदने वाले व्यक्ति को ग्राहक या उपभोक्ता कहते हैं। एक बाज़ार में बहुत सारे दुकानदार तथा बहुत सारे ग्राहक होते हैं, आइये विभिन्न प्रकार के बाज़ारों की चर्चा करें।

इस पाठ को पढ़ने के बाद हम जानेगें।

- बाज़ार की अवधारणा जान सकेंगे।
- बाज़ारों के प्रकार समझ सकेंगे।
- साप्ताहिक बाज़ार, मोहल्ले की दुकान, स्थानीय बाज़ार, शॉपिंग मॉल आदि की अवधारणा समझ सकेंगे।
- वस्तुओं के निर्माण की प्रक्रिया से उसके उपभोक्ता तक पहुँचने के क्रम को समझ सकेंगे।
- एक अच्छे एवं समझदार उपभोक्ता बन सकेंगे।

मोहल्ले की दुकानें

हमारे पास–पड़ोस या मोहल्ले में कुछ दुकानें होती हैं जो हमें विभिन्न प्रकार की सेवाएं तथा रोज़मर्रा का सामान उपलब्ध कराती है, जैसे– दूध, तेल, मसालें, कॉपी, पेन, दवाइयाँ, शीतल पेय पदार्थ इत्यादि सामान आप यहाँ से खरीद सकते हैं। यहाँ कुछ सब्जियों तथा फलों की रेहड़ी भी हो सकती है। ये दुकानें हमारे घरों के नज़दीक होती है। अतः इन दुकानों की सेवाएं हमें आसानी से उपलब्ध होती है। साथ ही दुकानदार भी हमारी जान–पहचान का होता है। अतः वह हमें उधार देने को भी तैयार रहता है। इसका एक लाभ यह भी है कि अचानक जरूरत पड़ने पर घर के बच्चे भी यहाँ से खरीददारी कर सकते हैं। यहाँ दुकानें कम होने के कारण दुकानदारों में आपसी प्रतियोगिता नहीं होती है।

मोहल्ले की दुकान

साप्ताहिक बाजार

जैसा कि नाम से ही पता चलता है कि यह बाजार एक नियत स्थान पर सप्ताह में एक या दो दिन ही लगता है। जैसे बुद्ध बाज़ार, शुक्र बाजार आदि। इन बाज़ारों में लगने वाली दुकानें छोटी एवं अस्थाई होती है। व्यापारी सुबह फुटपाथ पर दुकान सजाते हैं, दिन में सामान बेचते हैं और शाम को दुकान समेट कर सामान सहित घर चले जाते हैं। अगले दिन वह अपनी दुकान किसी दूसरे स्थान पर लगाते हैं। इन बाज़ारों में दैनिक जरूरत की लगभग सभी वस्तुएँ मिल जाती हैं।

साप्ताहिक बाजार

आओ जाने–

1. आपके घर के आसपास लगने वाले साप्ताहिक बाज़ार का दिन पता करें और साप्ताहिक बाज़ार में मिलने वाली वस्तुओं की सूची बनाएं।

साप्ताहिक बाज़ार में लगी दुकानें स्थाई नहीं होती है, इससे दुकान का किराया, बिजली का खर्च, दुकान के कर्मचारियों का वेतन, सरकारी शुल्क आदि खर्च नहीं होते। इस कारण इन दुकानों पर सामान अपेक्षाकृत सस्ता मिल जाता है। यहाँ दुकानदारों की आपसी प्रतिस्पर्धा होने के कारण दुकानदार कम मुनाफे पर भी सामान बेच देते हैं। अतः आप यहाँ मोल–भाव करके वस्तुओं की कीमत कम भी करवा सकते हैं, परन्तु कई बार इन दुकानों का सामान घटिया भी होता है। जिससे लोग खुद को ठगा सा महसूस करते हैं।

साधारण बाजार

इसमें स्थाई दुकानों की लम्बी लाईन होती है। ये दुकाने विविध प्रकार की होती हैं। आप यहाँ सुई से सोने तक सभी कुछ खरीद सकते हैं। यहाँ आपको फलों से फर्नीचर तक सब सहज उपलब्ध होता है। स्थाई दुकानें होने के कारण व्यापारियों के कुछ खर्च बढ़ जाते हैं। जिससे सामान थोड़ा महंगा मिलता है, परन्तु साप्ताहिक बाज़ार की अपेक्षा यहाँ के सामान की गुणवत्ता अच्छी होने की संभावना होती है।

साधारण बाजार

शॉपिंग कॉम्पलेक्स और मॉल

आप शापिंग काम्पलेक्स को बड़े शहरों में देख सकते हैं कि यह एक प्रांगण में स्थित वातानुकूलित बहुमंजिला इमारत होती है जिसमें विविध प्रकार के सामान की दुकानें होती हैं। आप यहाँ घूमना, खाना–पीना तथा खरीददारी सभी काम एक साथ कर सकते हैं। आप इन्हें मॉल के नाम से भी जान सकते हैं।

इन दुकानों पर मशहूर कम्पनियों का सामान बिकता है जिसे हम ब्रांडेड सामान कहते हैं। यह सामान काफी महंगा होता है क्योंकि इन दुकानों का खर्च काफी महंगा होता है। इमारत के वातानुकूलन का खर्च, महंगा दुकान किराया, बिजली का खर्च, दुकान के कर्मचारियों तथा सुरक्षा गार्डों का वेतन, सरकारी टैक्स तथा कम्पनियों के विज्ञापन का खर्च आदि मिलकर यहाँ सामान को बहुत महंगा बना देते हैं। इस कारण इस सामान को अधिक धनी लोग ही खरीद पाते हैं। परन्तु यहाँ के सामान की गुणवत्ता अपेक्षाकृत बहुत अच्छी होती है।

मॉल

थोक बाज़ार (बाजारों की श्रृंखला)

क्या आप जानते हैं कि पहले बताये गए बाज़ारों के व्यापारी सामान कहाँ से लाते हैं? आपकी खरीदी गई वस्तुओं का उत्पादन खेतों, कारखानों आदि में होता है, परन्तु ये व्यापारी इन वस्तुओं को वहाँ से नहीं लाते हैं। खेतों या कारखानों से उत्पादन को बड़े व्यापारी खरीदते हैं। ये व्यापारी बहुत बड़ी मात्रा में सामान खरीदते हैं, फिर थोक बाज़ार में खुदरा (छोटे) व्यापारियों को बेचते हैं। इस प्रकार थोक बाजार में सामान खरीदने एवं बेचने वाले दोनों व्यापारी ही होते हैं। छोटे व्यापारी वहाँ से सामान खरीदकर कुछ मुनाफे पर उपभोक्ता यानि हमें वह सामान बेच देते हैं। ये थोक बाज़ार वस्तु विशेष के होते हैं, जैसे चांदनी चौक में कपड़ों का थोक बाज़ार, आज़ादपुर में फल एवं सब्जियों की थोक मंडी आदि। इस तरह बाज़ारों की श्रृंखला के कारण एक स्थान पर उत्पादित होने वाला सामान लोगों के लिए हर जगह उपलब्ध हो जाता है।

थोक बाजार

घर पर बाज़ार

आजकल शहरी क्षेत्रों में लोग इंटरनेट तथा कम्प्यूटर की मदद से घर बैठे ही सामान की खरीददारी कर लेते हैं तथा क्रेडिट कार्ड से ऑनलाइन पैसे भी चुका देते हैं। सामान कम्पनी घर पर ही भेज देती है। कुछ व्यक्ति फोन पर आर्डर देकर दुकानदार से सामान घर पर मंगा लेते हैं, इस तरह लोग घर बैठे ही खरीददारी कर सकते हैं।

इसके साथ–साथ कुछ सेल्समेन भी लोगों के घर जाकर अपने उत्पाद का विज्ञापन करते हैं तथा उन्हें बेचते हैं। इस तरह सामान विक्रेता आपके घर पर सामान उपलब्ध करा देता है।

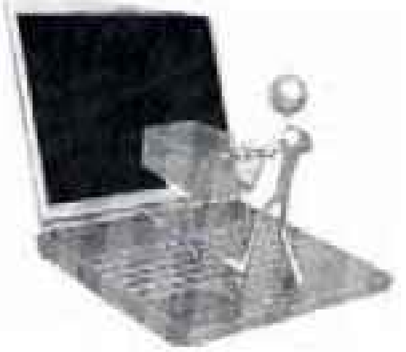

घर पर बाजार

14.1 आओ जानें

1. साप्ताहिक बाजार में सामान अपेक्षाकृत .... मिलता है। (महंगा / सस्ता)
2. यदि आपको एक ही वस्तु अत्यधिक मात्रा में खरीदनी है तो आपको .... बाजार जाना चाहिए। (थोक / साप्ताहिक)
3. साप्ताहिक बाजार में दुकानें .... होती है। (अस्थाई / स्थाई)

बाज़ार में वस्तु की कीमत तय होना

बाजार में विभिन्न वस्तुओं की कीमतें भिन्न–भिन्न होती हैं, क्या आप जानते हैं कि इनकी कीमत कौन तय करता है? किस तरह इनकी कीमत तय होती है? उपभोक्ता द्वारा दी गई कीमत में किस को कितना हिस्सा प्राप्त होता है? इस अध्याय में हम इन्हीं बातों पर विचार करेंगे। इस सारी प्रक्रिया को समझने के लिए हमें "एक कमीज बनने की प्रक्रिया" समझनी होगी। हम जानेंगे कि इस कमीज के निर्माण में किन–किन लोगों का सहयोग होता है। और इन लोगों को इसके बदले कितनी हिस्सेदारी कीमत के रूप में मिलती है।

1. सर्वप्रथम किसान कपास की खेती करके कपास का उत्पादन करता है, यही एक कमीज बनाने का पहला चरण है। भारतवर्ष में अधिकांश किसानों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। इस कारण किसान महाजनों या व्यापारियों से पैसा उधार लेकर बीज, खाद तथा कीटनाशक आदि खरीदते हैं और फसल का उत्पादन करते हैं। किसान को कपास भी इन्हीं व्यापारियों को बेचनी पड़ती है। ये व्यापारी कपास सस्ते दामों पर खरीदतें हैं, उनका उधार, ब्याज आदि चुकाकर शेष थोड़ा सा पैसा ही किसान को मिल पाता है। इस प्रकार किसान को अपनी उपज का सम्पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है।
2. ये व्यापारी खरीदी गई कपास को मिलों को बेंच देते हैं तथा मुनाफा कमाते हैं। मिल इस कपास से बीज अलग करके रूई बनाती है। इस रूई के गठ्ठर बना दिये जाते हैं। खरीदी गई कपास के मूल्य में अपना खर्च एवं मुनाफा जोड़कर नये मूल्य पर इस रूई को सूत कातने वाली मिलों को बेच दिया जाता हैं।
3. सूत कातने वाली मिले इस रूई से सूत (धागा) बनाती हैं तथा अपना मुनाफा एवं खर्च जोड़कर नई कीमत पर सूत के व्यापारियों को सूत बेच देती है।
4. सूत के व्यापारी इस सूत को बुनकरों को उधार देते हैं। बुनकरों के पास सूत खरीदने के लिए पर्याप्त धन नहीं होता है। साथ ही उन्हें तैयार किया गया माल बेचने की समस्या भी होती है, अतः बुनकर व्यापारियों से सूत उधार लेते हैं उनकी मांग के अनुसार कपड़ा बुनकर वापस उन्हीं व्यापारियों को दे देते हैं। इसके बदले में उन्हें बहुत कम मजदूरी प्राप्त होती है।
5. अब व्यापारी अपना तैयार कपड़ा अधिक मुनाफा कमाकर गार्मेंट कम्पनियों को बेंच देते हैं। गार्मेंट कम्पनियाँ इस कपड़े से कमीजें तैयार करवाती है। इस कार्य के लिए वह मजदूर एवं सिलाई के कारीगर रखती है। इन कारीगरों को बहुत कम वेतन दिया जाता है। इस प्रकार तैयार कमीज से कम्पनियाँ अधिक लाभ कमाकर बड़े–बड़े ब्रांड नाम वाली कम्पनियों को बेच देते हैं।
6. ये ब्रांड कम्पनियाँ अपने कपड़ों के प्रचार हेतु विज्ञापन पर अत्यधिक खर्च करती है, इनके अपने रिटेल शोरूम होते हैं। जहाँ ये अत्यधिक लाभ कमाकर ग्राहकों को कमीज बेचती है।
7. इस प्रकार कच्चे माल (कपास) की उत्पादन लागत से शुरू होकर कमीज बनने के सभी चरणों में लगी लागते तथा सभी का मुनाफा जोड़कर किसी वस्तु की कीमत तय होती है। इस कीमत में कच्चे माल की लागत, मजदूरी, तकनीक, विज्ञापन, परिवहन का खर्च तथा मुनाफा जुड़ा होता है। इसके अतिरिक्त वस्तु की कितनी मात्रा उपलब्ध है तथा बाजार में उसकी कितनी मांग है, इस पर भी कीमत निर्भर करती है, अधिक मांग एवं कम उत्पादन वस्तु की कीमत बढ़ा देता है।

कहानी बुनना आओ करें।

बाजार में वस्तु की कीमत तय होना इस पर निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर कहानी बनावाएं :–

1. किसान द्वारा खेती करना
2. कच्चा माल कारखानों में पहुँचाना
3. कंपनियों / मिलों द्वारा आगे कार्य करवाना
4. उत्पादन का बाजार में पहुँचाना

आओ समझें

1. **निम्नलिखित चरणों को एक कमीज बनने की प्रक्रिया के लिए शुरू से अंत तक क्रमबद्ध करो।**
   1. कपास को व्यापारी को बेचा जाता है।
   2. कमीज को रिटेल स्टोर पर ग्राहक को बेचा जाता है।
   3. किसान कपास का उत्पादन करता है।
   4. कताई मिले सूत कातती है।
   5. कपड़ा गार्मेंट कम्पनियों को बेचा जाता है।
   6. बुनकर सूत से कपड़ा बुनते हैं।
   7. गार्मेंट कम्पनियाँ कमीजों को ब्रांडेड कम्पनियों को बेच देती है।
   8. कपास से बीज अलग करके रूई के गठ्ठर बनते हैं।

2. **रिक्त स्थान की पूर्ति करो–**
   1. कपास से बीज अलग करके .... बनती है। (रूई / सूत)
   2. रूई से बना धागा .... कहलाता है। (कपास / सूत)
   3. सूत से कपड़ा बनाने वाले कारीगरों को .... कहते हैं। (दर्जी / बुनकर)

3. **कार्यपत्रक**

अपने क्षेत्र मे स्थित विभिन्न बाजारों मे निम्न वस्तुओं की कीमत तथा उनकी गुणवत्ता की जाँच करें और निम्न तालिका पूरी करें। वस्तु की गुणवत्ता को आप खराब, सामान्य, उत्तम और अतिउत्तम के मानकों पर रख सकते हैं। इस कार्य को सम्पन्न करने हेतु आप अपने बड़ों (माता–पिता आदि) की सहायता एवं निर्देशन ले।

बाजार का नाम / वस्तु का नाम	दाल		रिफान्इड तेल		फल		कोई मौसमी सब्जी	
	कीमत प्रति किलो	गुणवत्ता	कीमत प्रति पैकेट (500 ग्रा.)	गुणवत्ता	कीमत प्रति दर्जन	गुणवत्ता	कीमत प्रति किलो	गुणवत्ता
1. मौहल्ले की दुकान								
2. साप्ताहिक बाजार								
3. साधारण बाजार								
4. शॉपिंग कॉम्प्लेक्स या मॉल								
5. थोक बाजार								
6. घर का बाजार								

अब उपरोक्त तालिका के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर दें–

1. सबसे सस्ती दाल कौन से बाजार में उपलब्ध है?
2. सबसे मँहगा फल किस बाजार में उपलब्ध है?
4. सबसे अच्छी एवं ताजी सब्जी कौन से बाजार मे है?
6. सबसे मंहगी सब्जी किस बाजार मे मिलती है?
7. सबसे मंहगी दाल कौन से बाजार मे उपलब्ध है?
8. रिफाइन्ड तेल सबसे सस्ता किस जगह पर मिलता है?

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक / शिक्षिका विगत पाठों में विद्यार्थी की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1	____________			
2	____________			
3	____________			
4	____________			
5	____________			
6	____________			
7	____________			
8	____________			
9	____________			
10	____________			

कक्षा 8 सामाजिक विज्ञान

भूगोल

बच्चे

1. विभिन्न प्रकार के संसाधनों एवं उनके उपयोग को समझाते हैं।
2. विभिन्न प्रकार के उद्योगों का परिचय कच्चे माल, आकार, स्वामित्व के आधार पर उद्योगों के विभिन्न वर्गीकरण तथा उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कारकों को जानते हैं।
3. भूमि उपयोग को प्रभवित करने वाले कारकों को समझना, मृदा निम्नीकरण एवं वनोन्मूलन के संदर्भ में पर्यावरण के प्रभावों को समझते हैं।
4. जनसंख्या के असमान वितरण के संदर्भ में विश्व मानचित्र का अवलोकन करते हैं।
5. आग, भूस्खलन और औद्योगिक आपदाओं के कारणों का विश्लेषण एवं उनके खतरों को कम करने के उपाय करते हैं।
6. प्राकृतिक एवं मानव संसाधनों के असमान वितरण के कारणों का विश्लेषण करते हैं।
7. जल, मृदा, वन आदि प्राकृतिक संसाधनों के सतत पोषणीय विकास के लिए न्याय संगत एवं विवेकपूर्ण उपयोग की योग्यता विकसित करते हैं।
8. प्रमुख फसलें जैसे गेहूँ, चावल, कपास, जूट आदि के उत्पादन में अग्रणी देशों की सूची तैयार करना एवं विश्व मानचित्र पर उनको दर्शाते है।
9. कृषि के विभिन्न प्रकारों के मध्य संबंध स्थापित करना और ये किस प्रकार विश्व के विभिन्न क्षेत्रों के विकास को प्रभावित करते हैं, उनके बारे में जानते हैं।
10. मानचित्र पर जनसंख्या वितरण को दर्शाते हैं।

इतिहास

बच्चे

1. छोटी व्यापारिक कम्पनी से प्रभावशाली शक्ति के रूप में भारत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के विस्तार एवं परिणाम बताते हैं।
2. ईस्ट इंडिया कम्पनी की नीतियों को ग्रामीण क्षेत्रों पर पड़ने वाले प्रभाव एवं प्रतिक्रिया जैसे नील विद्रोह एवं अन्य विद्रोह के रूप में व्याख्या करते हैं।
3. आदिवासी विद्रोह के कारणों की व्याख्या करते हैं। जैसे संथाल विद्रोह।
4. 1857 के संघर्ष की उत्पत्ति, स्वरूप और विस्तार का परीक्षण और परिणामों की व्याख्या करते हैं।
5. 1857 के संघर्ष के बाद इतिहास के नए चरण को समझते हैं।
6. कुछ शहरों के पतन के कारणों की व्याख्या और 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में कुछ शहरों का उद्भव के कारणों को बताते हैं।
7. ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीय शिक्षा व्यवस्था में किए गए मुख्य बदलावों व उन पर भारतीयों की प्रतिक्रिया की व्याख्या करते हैं।
8. अंग्रेजों की भारत में समाज सुधारों की नीति को स्पष्ट करते हैं। ब्रिटिश काल के कुछ महत्वपूर्ण समाज सुधार कानूनों पर प्रकाश डालते हैं।।
9. 1870 में स्वतंत्रता तक राष्ट्रीय आंदोलन की घटनाओं को क्रमबद्ध करते हैं। तथा घटनाओं और प्रक्रियाओं के बीच जुड़ाव, कारण और प्रभाव का विश्लेषण करते हैं।।
10. राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया के महत्वपूर्ण पड़ावों का विश्लेषण करते हैं। नए स्वतंत्र भारत के सामने खड़ी समस्याओं और चुनौतियों से अवगत होते हैं।

सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन

बच्चे

1. भारतीय संविधान में व्याप्त मूल्यों जैसे– मौलिक अधिकार, धर्म निरपेक्षता आदि के सम्मान के लिए प्रेरित करते हैं।
2. धार्मिक प्रथा एवं विश्वासों के आधार पर भेदभाव नहीं करने के लिए प्रेरित करना सीखते हैं।
3. मौलिक अधिकारों की जानकारी से जीवन में हिंसा से बचाव तथा विकास के विभिन्न अवसरों का प्रयोग करना सीखते हैं।
4. केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार के कार्यों में अन्तर स्पष्ट करते हैं।
5. सांसद और विधायकों के मुख्य कार्यों को बताते हैं।
6. कानून बनाने की प्रक्रिया और कार्य करने के तरीकों में विधायिका की भूमिका को बताते हैं।
7. न्यायपालिका के महत्व और विभिन्न स्तरों के कानूनी विवादों को सुलझाने में इसकी भूमिका को समझते हैं।
8. स्वयं में न्यायिक अधिकारों के प्रति विकासात्मक जागरूकता उत्पन्न करते हैं।
9. आज के संदर्भ में उदाहरण के साथ हमारे से अलग जीवन व्यतीत करने तथा हाशियाकरण के कारणों और उपायों की व्याख्या करते हैं।
10. पर्यावरण की सुरक्षा एवं आवश्यकता जनसुविधाओं जैसे– पानी, बिजली, सड़क, परिवहन, अस्पताल आदि में सरकार की भूमिका को पहचानते हैं।

ISBN 978-93-85943-35-5

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
वरूण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली–110024